जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

Rashtradoot

जयपुर, मंगलवार 24 जून, 2025

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

## प्रदेश में
## पं. दीनदयाल उपाध्याय
## अन्त्योदय संबल पखवाड़ा

24 जून से 09 जुलाई, 2025

का

## शुभारम्भ

24 जून, 2025

### शिविरों में होने वाले प्रमुख कार्य

- लंबित पत्थरगढ़ी और सीमाज्ञान प्रकरणों का निस्तारण
- लंबित नामान्तरणों का निस्तारण
- लंबित कुर्रेजात रिपोर्ट तैयार करना
- रास्तों के प्रकरणों का निस्तारण
- आपसी सहमति से बंटवारा
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना हेतु 10,000 गांवों के बीपीएल परिवारों का सर्वे
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना में बीपीएल परिवारों को विभिन्न योजनाओं से जोड़ने हेतु आवेदन
- स्वामित्व पट्टे बनाना एवं वितरण करना
- पानी की टंकियों की साफ-सफाई करवाना
- लंबित नल कनेक्शन जारी करना
- लीकेज की मरम्मत और जल-दबाव जांच
- नहरों के पटरों की सफाई एवं मरम्मत करना
- नर्सरियों से पौधा वितरण करना
- मृदा नमूनों का संग्रहण एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण करना
- मंगला पशु बीमा में रजिस्टर्ड पशुओं का हेल्थ सर्टिफिकेट और पॉलिसी जनरेट करना
- पशुओं की जांच, इलाज और टीकाकरण
- एनएफएसए अन्तर्गत लंबित प्रकरणों का निस्तारण
- आयुष्मान कार्ड वितरण करना
- विद्यालयों में प्रवेशोत्सव आयोजित कर नामांकन बढ़ाना
- झूलते तार और विद्युत पोल सही करवाना

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

## विचार बिन्दु

**उपकार करके जताना इस बात का प्रतीक है कि किया गया समर्थन या कार्य उपकार नहीं है। –अज्ञात**

# नया भारत, सवाल - मुक्त भारत

जब से देश स्वतंत्र हुआ है, हम कुछ नारे समय-समय पर सुनते रहे हैं, चाहे सरकार किसी भी क्यों न हो। इनमें से कुछ प्रमुख हैं, भूख - मुक्त भारत, कुपोषण - मुक्त भारत, निरक्षरता - मुक्त भारत, भ्रष्टाचार - मुक्त भारत, शोषण - मुक्त भारत आदि-आदि। इस प्रकार का भारत बनाने के लिए विभिन्न सरकारों ने अनेक प्रयास किए, किंतु ऐसा भारत अभी तक बन नहीं पाया है। जिस प्रकार की स्थिति आज बन गई है, उससे तो यही कहावत सिद्ध हो रही है–"जैसे-जैसे दवा की मर्ज बढ़ता गया"।

स्वतंत्रता के 78 साल बाद भी भारत, असमानता, गरीबी, भ्रष्टाचार प्रेस स्वतंत्रता आदि के मानदंडों में विश्व में सबसे निचले स्थान वाले देशों में है।

भारत एक लोकतंत्र है, जिसका अर्थ ही यह है कि लोक की सत्ता सर्वोच्च है। तंत्र से यह अपेक्षा होती है कि वह लोक की भावना का सम्मान करे और अपनी योजनाएं इस प्रकार से बनाए कि वह उसके हितों का संवर्धन कर सके। सत्ता में बैठे लोग, स्वयं को जनता का सेवक समझें और अपनी क्षमता के अनुसार उनकी बेहतरी के लिए काम करे। जब कभी ऐसा होता ना दिखे तो लोक यानी नागरिक का यह अधिकार है कि वह सत्ता में बैठे लोगों से सवाल पूछे। सत्ता में बैठे लोगों का यह कर्तव्य है कि वे पूछे गए प्रश्नों का संतोष जनक उत्तर दें। कई बार जब अकेला नागरिक कोई प्रश्न करने में समर्थ नहीं होता है तो उनकी ओर से यह काम नागरिक संगठनों या मीडिया द्वारा किया जाता है।

गत कुछ वर्षों की विभिन्न घटनाओं पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि आजकल सबसे जोखिम भरा काम सवाल पूछना हो गया है। इसके उदाहरण प्रतिदिन हमें देखने को मिलते हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख करना उचित होगा।

हाल ही में दिल्ली से भोपाल जाने वाली वंदे भारत ट्रेन में एक यात्री रजतप्रकाश ने अपना टिकट खिड़की के पास वाली सीट का बुक कराया और उसी पर पर वह बैठकर यात्रा कर रहा था। तभी, मध्यप्रदेश का एक विधायक वहां पर आया और उसे सीट बदलने के लिए कहा। जब उसने ऐसा करने के लिए नम्रता पूर्वक मना कर दिया तो झांसी रेलवे स्टेशन पर विधायक के कुछ लोगों ने ट्रेन में चढ़कर राज प्रकाश पर लातों, घूंसों की बौछार कर दी। इसके कारण राज प्रकाश लगभग अधमरा सा हो गया और उसकी नाक से खून बहने लगा। उसका दोष केवल यही था कि उसने विधायक के इच्छा अनुसार अपनी आवंटित सीट रिक्त नहीं की और उनसे इस बारे में प्रश्न पूछ लिया।

वैसे तो पूरे देश में ही प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। अपेक्षा यही की जाती है आपसे अधिक ताकतवर या सत्तासीन व्यक्ति द्वारा कही हुई हर बात को आप न केवल स्वीकार करें अपितु उसकी तारीफ में कशीदे भी पढ़ें। यही आजकल, सफलता की सीढ़ी बन गई है। प्रश्न पूछना वैज्ञानिक सोच की पहचान है और इसी वैज्ञानिक सोच को विकसित करने की जिम्मेदारी संविधान के अनुसार सरकारों पर है, किंतु आजकल प्रश्न पूछने पर, उसका किसी न किसी प्रकार उत्पीड़न प्रारंभ कर दिया जाता है।

जब देश में बेरोजगारी चरम पर हो और गरीबी के कारण 80 करोड लोगों को मुफ्त में राशन बांटना पड़े और कोई नागरिक इसे सरकार की विफलता बताते हुए उससे प्रश्न कर ले तो उसे देश विरोधी करार दे दिया जाता है। सवाल नोटबंदी या अचानक देश में लॉकडाउन के कारण होने वाली परेशानियों के बारे में हो, इसे पसंद नहीं किया गया। यदि पहलागाम में निर्दोष पर्यटकों को बेरहमी से मारने वाले आतंकियों को न पकड़ पाने के कारण कोई नागरिक प्रश्न कर ले, तो उसे भी राष्ट्र विरोधी घोषित करने में सत्ता धारी दल कोई समय नहीं लगाता।

भारत के अपने पड़ौसी देशों से खराब संबंध हों, तब भी आप विदेशी नीति पर कोई सवाल नहीं कर सकते। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप बार-बार भारत और भारतीयों का अपमान करे और पाकिस्तान को महान देश बताए तब भी आप सरकार की विदेश नीति पर सवाल नहीं कर सकते। ट्रंप द्वारा सीजफायर कराने की बात बार बार कहने पर भी, प्रधानमंत्री द्वारा सार्वजनिक रूप से इसका खंडन न करने पर इसे विदेश नीति की असफलता कहते हुए सरकार से कोई प्रश्न कर ले तो यह भी सत्ता धारी लोगों को परेशान कर देता है। सरकार ऐसे प्रश्न पूछने वालों पर पर ही कार्रवाई प्रारंभ कर देती है।

आजकल तो सरकार एक कदम और आगे बढ़ गई है। यदि कोई वकील किसी की पैरवी करे जिससे सरकार प्रसन्न नहीं है तो उसे भी नोटिस मिल जाता है और उससे यह जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है कि उसने कैसी कानूनी सलाह अपने मुवक्किल को दी है? जब वकील द्वारा ऐसा नहीं किया जाता है तो ई डी द्वारा उन्हें ही नोटिस दे दिया गया। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ एडवोकेट दातार और वेणुगोपाल के विरुद्ध ऐसे नोटिस दिए गए।हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने इस पर तत्काल रोक लगा दी, किंतु इससे सत्ताधारी लोगों की मंशा पर तो प्रश्न चिन्ह लगता ही है।

आज जिस प्रकार की विदेश नीति भारत की हो गई है, उसके बारे में क्या किसी का यह साहस हो सकता है कि वह सरकार से निम्न प्रश्न पूछे:–

भारत ने सदैव अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए बिना किसी दबाव की परवाह किए सच का साथ दिया। ऐसी नीति के कारण भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का नेतृत्व करने वाले देशों में रहा। हमारे संबंध किसी देश से कभी अत्यंत खराब कभी नहीं हुए।

प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में अपने शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के प्रमुखों को बुलाकर यह संदेश दिया था कि वे भारत के पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंधों को महत्व देते हैं। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की साधारण सभा में भी 2015 में यह भाषण दिया था कि उनके लिए 'नेबरहुड फर्स्ट' की नीति रहेगी, अर्थात उनके लिए पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध बनाना प्राथमिकता होगी। आज हमारे संबंध नेपाल, श्रीलंका, मालदीव्स, बांग्लादेश, भूटान, किसी से अच्छे नहीं हैं। अब तो चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच त्रिपक्षीय वार्ता और समझौते हो रहे हैं। ऐसा क्यों हुआ?

क्यों भारत यह साहस नहीं जुटा पाता कि वह इजराइल द्वारा गाज़ा में किए जा रहे नरसंहार की निंदा कर सके।

> **सबसे अच्छा तरीका तो यह होगा कि प्रधानमंत्री अपने 11 साल के कार्यकाल पर एक खुली प्रेस वार्ता आयोजित करें (जो उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली होगी), जिसका सीधा प्रसारण सभी राष्ट्रीय चैनलों से किया जाय। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे प्रधानमंत्री अपनी उत्कृष्ट वाक कला और वाक चातुर्य से अपने आलोचकों का मुंह बंद कर देंगे।**

इजरायल - ईरान में हम ईरान का साथ क्यों नहीं दे रहे हैं? 1994 में ईरान के साथ के कारण ही भारत के विरुद्ध कश्मीर में मानवाधिकार उल्लंघन का मामला संयुक्त राष्ट्र में नहीं जा पाया था। यह उल्लेखनीय कि ईरान और भारत का संबंध हजारों वर्ष पुराना है। पाठकों को यह याद दिलाना उपयुक्त होगा कि 1994 में जब ओ आई सी (ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कंट्रीज) के द्वारा यह प्रस्ताव पारित किया जाना था कि भारत कश्मीर में मानवाधिकारों का उल्लंघन कर रहा है, तो ईरान ने अपने अकेले बलबूते पर इस प्रस्ताव को पारित होने से रोका। ओ आई सी में प्रस्ताव पारित होने के लिए सर्वसम्मति होना आवश्यक था। ईरान द्वारा इसका विरोध करने पर यह पारित नहीं हो पाया। इसके लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने गंभीर रूप से अस्पताल में भर्ती विदेश मंत्री दिनेश सिंह को ईरान भेजा। वे सुबह जाकर शाम को वापस भारत पहुंचे और दिनभर उन्होंने ईरान के राजनीतिकों के साथ बात करके उन्हें संतुष्ट किया। फिर ओ आई सी में ईरान ने भारत के पक्ष में मत दिया। इसके कारण भारत को मानवाधिकार उल्लंघन के आने वाले प्रस्ताव से बचाया। आज भारत वह सब भूल गया। हमारी विदेश नीति में इस प्रकार का भटकाव क्यों आ गया?

जिस समय भारत विदेशी मुद्रा के संकट से गुजर रहा था उस समय ईरान ने भारत से रुपए में व्यापार करने का निर्णय लेकर भारत की बहुत सहायता की थी। वर्तमान संघर्ष में भारत की विदेश नीति में इस प्रकार के बदलाव के क्या कारण हैं ?

भारत सरकार ने हाल ही में ऑपरेशन सिंदूर के संदर्भ में भारत का पक्ष स्पष्ट करने के लिए सर्वदलीय सांसदों के दलों को 51 देशों में भेजा जिनमें गुयाना, मेक्सिको, लातविया जैसे सुदूर देश भी थे, किंतु भारत का पक्ष स्पष्ट करने के लिए किंतु किसी भी पड़ोसी देश जैसे नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, मालदीव्स, श्रीलंका में अपने सांसदों को नहीं भेजा। हमारी 'नेबर हुड फर्स्ट' की नीति का क्या हुआ? क्या हमने पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंध बनाने की नीति को त्याग दिया है?

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप 14 बार यह कह चुके हैं कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम कराया और वे पाकिस्तान को भी महान देश मानते हुए उसे भारत के समकक्ष रखते हैं। इस ट्रंप के इस कथन का, प्रधानमंत्री मोदी उन्हें फोन करके विरोध क्यों नहीं कर पाए? राष्ट्रपति ट्रंप के झूठ का सार्वजनिक रूप से खंडन क्यों नहीं किया गया? क्या इसे भारत की विदेश नीति की कमजोरी नहीं माना जाना चाहिए?

पाकिस्तान की सेना के प्रमुख मुनीर को राष्ट्रपति ट्रंप अपने साथ भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं किंतु प्रधानमंत्री मोदी, ट्रंप द्वारा की गई गलत बात का प्रतिकार भी नहीं कर पाते।

आज भारत के पास ऐसा विदेश मंत्री है जिसके पास लंबे समय तक विदेश सचिव रहने का अनुभव है। उसके बावजूद भी क्यों हमारे संबंध सभी देशों से अच्छे नहीं हैं? क्यों हम संयुक्त राष्ट्र संघ में गाज़ा पर हमले करने के लिए इजरायल के विरुद्ध निंदा प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर पाए जबकि 149 देशों ने ऐसा किया था?

विदेश नीति में हो रहे परिवर्तन के बारे में यदि चर्चा हेतु संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग विपक्ष द्वारा की जाती है तो उसे पर सरकार द्वारा क्यों इंकार किया जाता है? क्या सरकार विदेश नीति के बारे में सांसदों को बताना तक नहीं चाहती? वह क्यों नहीं संसद में सांसदों के उन प्रश्नों का सामना करना चाहती है कि आज भारत के पक्ष में सभी देश क्यों नहीं खड़े हैं?

ऐसा प्रतीत होता है कि सवाल पूछने की संस्कृति को एक निश्चित योजना अनुसार नष्ट किया जा रहा है। अब कोई किसी अधिकारी या सरकार से प्रश्न नहीं कर सकता है। प्रश्न करने और जानकारी देने से बचने के लिए सरकार ने सूचना का अधिकार कानून तथा चुनाव संबंधी निर्देशों में कई बदलाव कर दिए हैं।

प्रश्न पूछने से रोक कर हम लोकतंत्र की रक्षा किस प्रकार कर पाएंगे? कोई ऐसी परिस्थितियों का हाल बताते हुए लोकतंत्र के खतरे में होने की बात करे, तो उसे ही राष्ट्रदोही घोषित कर दिया जाता है।

भविष्य में क्यों कोई नागरिक या मीडिया, सरकार से सवाल पूछने का साहस करेगा? हालत यह हो गई है कि आप चाहे कविता लिखते हों, व्यंग्यकार हों, कार्टून बनाते हों या कोई पुस्तक लिखते हों, यदि आप किसी भी प्रकार से सरकार की नीतियों की आलोचना करें तो फिर सरकार की कार्यवाही के लिए तैयार रहिए।

यह स्पष्ट होना चाहिए कि जब हम दूसरों के लिए सवाल नहीं उठाएंगे तो समय आने पर दूसरे भी हमारे लिए सवाल उठाने के लिए आगे नहीं आएंगे। यही सवाल नहीं उठाने की प्रवृत्ति ही निरंकुशता और तानाशाही को प्रोत्साहित करती है।

आशा की जानी चाहिए कि संसद का मानसून सत्र हंगामे की भेंट नहीं चढ़े और उपरोक्त विषयों पर खुलकर चर्चा हो ताकि देश के समक्ष कई अनुत्तिरत प्रश्नों के उत्तर आ सकें।

सबको यह समझना होगा कि सरकार, देश नहीं है। देश, सरकार से कहीं बड़ा होता है। देश, सबका है चाहे कोई सत्ता में हो अथवा विपक्ष में, गरीब हो या अमीर, मजदूर हो या किसान, मालिक हो या नौकर। यदि सरकार कभी नागरिकों के हित के विरुद्ध कोई काम करती दिखाई दे और कोई नागरिकों का संगठन अथवा मीडिया, इस बारे में सरकार से कोई सवाल पूछे तो उसे देश से सवाल पूछना नहीं माना जा सकता। सही देशभक्त तो वही कहलाएगा जो सरकार द्वारा देश और नागरिकों के हित के विरुद्ध किए जा रहे कामों के बारे में सरकार से स्पष्टीकरण मांगे। सवाल करना नागरिक का अधिकार है और उसका संतोषप्रद उत्तर देना सरकार का कर्तव्य। सवाल मुक्त भारत, कभी मजबूत लोकतंत्र नहीं बन सकता। आइए, हम सवाल पूछने की संस्कृति को बनाए रखने और पोषित करने में अपना योगदान दें।

सबसे अच्छा तरीका तो यह होगा कि प्रधानमंत्री अपने 11 साल के कार्यकाल पर एक खुली प्रेस वार्ता आयोजित करें (जो उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली होगी), जिसका सीधा प्रसारण सभी राष्ट्रीय चैनलों से किया जाय। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे प्रधानमंत्री अपनी उत्कृष्ट वाक कला और वाक चातुर्य से अपने आलोचकों का मुंह बंद कर देंगे।

**–अतिथि सम्पादक,**
**राजेन्द्र भाणावत**
**( पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी )**

# अनंतम कल्याण का स्तंभ, अंत्योदय दर्शन

डॉ. निमिषा गौड़

भारतीय राजनीतिक विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सर्वस्पर्शीय एवं सर्व समावेशी विकास की नींव है, अंत्योदय दर्शन। जिसमें सभी के समान कल्याण एवं अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के भाव निहित है। जब दुनिया में अमीरी और गरीबी की खाई को बढ़ाने और घटाने के द्वन्द्व के मध्य पूंजीवाद साम्यवाद की राजनीतिक विचारधारा का चलन स्थापित हो रहा था तब भारत में लोकतांत्रिक दर्शन से उपजे हर व्यक्ति के कल्याण का दर्शन, परिपक्व हो गया था। जिसमें शून्य से लेकर शिखर तक शासन तंत्र की समानांतर सक्रियता को समाहित करने वाले लोकतांत्रिक मूल्यों की महक का बीजारोपण हो रहा था।

भारत के पारंपरिक मूल स्वभाव के अनुरूप साठ के दशक में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अंत्योदय के सिद्धांत को राजनीतिक तंत्र में समाहित करने का मूल मंत्र दिया, जिसमें व्यक्ति समाज और राज्यको एक स्वरूप आत्मा दृष्टि से स्वीकारा है।

राज्य का विकास अंतिम व्यक्ति के विकास पर ही सार्थक है और यही अनंत्तम कल्याण का स्वरूप है।

जनसंघ के संस्थापक विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन में प्रत्येक मनुष्य को चतुष्टा आत्मा का स्वरूप माना है जिसमें शरीर मन बुद्धि और आत्मा का समन्वित स्वरूप है तदानुसार राज्य के विकसित दृष्टिकोण का केंद्र बिंदु मनुष्य का संपूर्ण कल्याण ही होना चाहिए। एकात्म मानव दर्शन के अनुसार व्यक्तियों के संगठन से बना समाज और राष्ट्र एकात्म है प्रत्येक भारतीय का आर्थिक विकास भारत की पारंपरिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत पर आधारित हो। इसमें समाज के अंतिम छोर में रहने वाले अंतिम व्यक्ति तक शासकीय तंत्र की सहायता उपलब्धता होने का दृष्टिकोण दिया गया है।

इन्हीं राजनीतिक सिद्धांतों के ओत-प्रोत राजनीतिक दल जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी के उद्गगम का मार्ग निर्धारित हुआ। वर्ष 2014 से भारतीय जनता पार्टी की पूर्ण बहुमत सरकार ने एकात्मक मानव प्रेरित अंत्योदय दर्शन के संकल्प से विकसित भारत के नवनिर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया। हर भारतीय तक कल्याणकारी राज्य की पहुंच को सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 2015 में ई-गवर्नेंस की अवधारणा से प्रेरित डिजिटल अभियान का शुभारंभ किया यह एक ऐसा अभियान रहा, जिसमें हर भारतीय का आर्थिक सामाजिक व्यक्तिगत विकास सुनिश्चित होना तय था।

शासकीय तंत्र में भ्रष्टाचार की दीमक पर भारत के डिजिटलीकरण अभियान ने कड़ा प्रहार किया ओर 25 करोड़ भारतीयों को गरीबी से मुक्त कर दिया। जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे प्राप्त करने हेतु 55.22 करोड़ जनधन खाते खोले गए जिसमें वर्ष 2014 से 43.8 लाख करोड़ धन राशि गरीबों, वंचितों के बैंक खातों में सीधी पहुंची।

भारत के प्रशासन तंत्र में जैम त्रिशक्ति अंत्योदय के सिद्धांत की प्रेरणा है जिसमें जनधन बैंक, आधार सत्यापन और मोबाइल ने 40 अरब की सेंधमारी पर लगाम लगाई। अब बिना मध्यस्थ के लाभार्थी आत्म सम्मान के साथ लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ ले रहा है।

अंत्योदय दर्शन के पथ प्रदर्शक बने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 सालों में 6.1 प्रतिशत की मजबूत जीडीपी ग्रोथ, बढ़ते निर्यात, रिकॉर्ड एफडी तेजी से भारतीयों के बढ़ते स्टार्टअप के साथ एकल टैक्स जीएसटी, जनकल्याणकारी योजनाएं, आधारभूत संरचना को बढ़ावा देते डिजिटलीकरण ने भारतीय अर्थ व्यवस्था को दस दशक तक आगे ला दिया है। मोदी मिशन के विजन "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास" को 140 करोड़ देशवासियों ने सिद्ध किया है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सार्वभौमिक भा चारे की देन है पीएम मोदी का जन कल्याणकारी शासन और भारत का एक आत्मविश्वासी व करुणाशील वैश्विक नेतृत्व। ऑपरेशन सिंदूर से लेकर कोविड महामारी ने भारत की विविधता में एकता का परिचय पुनेश्चच: दुनिया को दिया है।

यूक्रेन-रूस और ईरान-इजरायल तनाव के मध्य में भारत के प्रधानमंत्री ने फिर से दोहराया है कि यह युद्ध का समय नहीं है, वैश्विक स्तर पर प्रधानमंत्री G7 समिट के पश्चात क्रोशिया के दौरे पर गए एक जिसमें एक ओर संदेश दुनिया को दिया है कि सभी राष्ट्रों का समान-सम्मान भारतीयता की पहचान है। पश्चिमी देशों की पूंजीवादी विचारधारा गरीब को गरीब ही मानती है जबकि एकात्म मानव दर्शन गरीब वंचित तक विकास सुनिश्चित करता है जिन्हें पूंजीवाद एवं साम्यवादी विचारधारा ने शोषित वर्ग घोषित कर दिया है।

पिछले 11 वर्षों में भारतीय जनता पार्टी का शासन काल भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों को संरक्षित करने का शासन काल रहा है एकात्मक मानव के अंत्योदय दर्शन ने समय सीमा से भारत के वित्त, उद्यम ओर मानव जीवन को सुगम बनाने से संबंधित सेवाओं और इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया है। हाल ही में होम क्रेडिट इंडिया के द ग्रेट इंडियन वॉलेट 2025 सर्वे के अनुसार भारत का निम्न मध्यम वर्ग अपने वित्तीय भविष्य को लेकर आश्वास हो रहा है वर्ष 2025 तक यूपीआई का उपयोग 80þ तक बढ़ गया है।

इसी आधार पर 73 प्रतिशत परिवारों को विश्वास है कि वह आगामी 5 वर्षों में अपने वित्तीय लक्ष्य को हासिल कर लेंगे। राजस्थान में अंत्योदय योजनाओं से गरीब और गरीबी की वेदना से मुक्ति का बीड़ा सर्वप्रथम पूर्व उपराष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत ने उठाया था उनके शासनकाल में अंत्योदय अन्न योजना के माध्यम से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के लिए भोजन का प्रबंध किया गया।

आज इस अंत्योदय दर्शन की तर्ज पर मुख्यमंत्री श्रीमान भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में शासन 8 करोड़ प्रदेशवासियों के लिए सर्व कल्याण के लिए प्रखरता से कार्यरत है।

समाज के हर वर्ग को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से प्रशासकीय कार्यों का संचालन हर जिले के पंच गौरव से लेकर शहरों गांवों ढाणियों तक एक लाख से अधिक प्रधानमंत्री आवास, सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के 19000 रूफटॉप सोलर संयंत्र, 10.74 लाख ग्रामीण परिवारों को नल से जल तथा 1.10 लाख नए घरेलू पाइपलाइन कुकिंग गैस कनेक्शन बीपीएल परिवारों को 450 रुपए में घरेलू सिलेंडर देकर सर्व स्पर्शी विकास की नींव को सीचां जा रहा है।

केंद्र राज्य की डबल इंजन सरकार अब ट्रिपल इंजन की और उन्मुक्तता से बढ़ रही है नगर पालिका एवं पंचायत के आगामी चुनाव में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण ने स्थानीय स्वशासन की तस्वीर बदल दी है जिसके आधार पर अंत्योदय की सार्थकता से चारों जातियां गरीब, युवा, अन्नदाता, नारी शक्ति का समावेशी विकास हो रहा है।

आंपणों अग्रणी राजस्थान से लेकर वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान में प्रकृति ने भी आशीर्वाद स्वरुप चौतरफा मरू राज्य में हरियाली की बाहर को निमंत्रण दे दिया है। वर्ष 2024 में राजस्थानवासियों की प्रेरक मुख्यमंत्री जी ने आगामी 4 वर्षों में राजस्थान को 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प अंत्योदय दर्शन से प्रेरित होकर लिया है।

**–डॉ. निमिषा गौड़,**
**असिसटेन्ट प्रोफेसर**
**कनोड़िया पी. जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर।**

# व्यापारिक शीत युद्ध

रामनिवास बैरवा

जनता हमेशा शान्ति चाहती है तथा सरकारें अपनी सार्थकता को साबित करने के लिए युद्ध चाहती हैं। विकसित पूंजीवादी लोकतन्त्रों में सरकारें अपनी ही जनता के शोषण के लिए दूसरे देशों से लगी अपने देश की सीमाओं की समस्या बनाये रखती हैं। किन्तु व्यापारिक पूंजीपति बाजारों पर अधिकार करने या एन पर एकाधिकार बनाये रखने के लिए अपने-अपने देशों की सरकारों को उकसाते हैं।

नेपोलियन बोनापार्ट की पराजय के बाद यूरोपीय देशों ने कंसर्न नामक संस्थान के माध्यम से आपस में शान्ति बनाये रखने का काम किया। इस दौरान यूरोप में, विशेष तौर पर फ्रांस में, 1848 में, फिर 1871 में क्रान्तियां हुईं जिन्होंने यूरोपीय जनता को प्रभावित किया। परिणामस्वरूप यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय हुआ जिसके कारण जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, रूस आदि अपने देशों की सीमाओं को बढ़ाने के लिए संघर्षरत हुए और अंतत: पहला विश्वयुद्ध हुआ।

उस युद्ध के परिणामस्वरूप जर्मनी आदि की हार होने पर अन्य विजेता देशों ने युद्ध का हर्जा-खर्चा जर्मनी से वसूलने के समझौते किये। उस हर्जे-खर्चे के भुगतान के कारण जर्मनी की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से बरबाद हो गई और हिटलर का उदय हुआ।

उधर अमरीका ने पहले विश्वयुद्ध में अपना पैसा खूब लगाया ब्रिटेन, फ्रांस के माध्यम से, लेकिन वह अमरीका को वापस नहीं मिला। उसी युद्ध के दौरान रूस में सोवियत क्रांति सम्पन्न हुई, और उसने जर्मनी से ब्रेस्त लितोवस्क की शान्ति संधि की। इससे अमरीका अपने हितों को लेकर चिंतित हो गया और 1917 में सोवियत क्रान्ति के समय अमरीका उस युद्ध में शामिल हुआ।

दूसरा विश्व युद्ध उसी जर्मनी की पहल कदमी से शुरू हुआ। लेकिन अमरीका पर्ल हार्बर पर जापानी हमले के बाद जापान के विरूद्ध 8 दिसम्बर, 1941 को युद्ध में उतरा, और 11 दिसम्बर, 1941 को जर्मनी, इटली भी अमरीका के विरूद्ध युद्ध की घोषणा की। उसके बाद सोवियत संघ से शान्ति संधि को खतम करके जर्मनी ने सोवियत संघ पर हमला कर दिया। लेकिन सोवियत सेनाओं के अथक संघर्ष के कारण सोवियत संघ भी मित्र देशों में शामिल कर लिया गया, सिर्फ सैनिक अभियानों के आधार पर, लेकिन अन्य मित्र देशों ने सोवियत कम्युनिज्म से कोई समझौता नहीं किया। अंतत: सोवियत सेनाओं के दबाव में हिटलर ने 30 अप्रैल, 1945 को आत्महत्या कर ली, 09 मई, 1941 को जर्मन सेनाओं ने बर्लिन में सोवियत सेनाओं के सामने आत्म समर्पण कर दिया और दूसरा विश्वयुद्ध भी खतम हो गया, बर्लिन सहित जर्मनी को दो भागों में बांट दिया गया- एक पश्चिमी पूंजीवादी देशों का सहायक और पर्व जर्मनी सोवियत संघ के प्रभाव में रहा। उधर 15 अगस्त, 1945 को जापानी सेनाओं ने ब्रिटिश सेनाओं के सामने आत्म समर्पण कर दिया।

इससे पहले, भविष्य की विश्व अर्थव्यवस्था का स्वरूप तय करने के लिए 1944 में अमरीका में 'ब्रेंटन वुड' का समझौता किया गया। तब तक ब्रिटेन विश्व अर्थव्यवस्था का नायक था, लेकिन अब यह उत्तरदायित्व अमरीका ने ले लिया था। अत: अमरीका ने अपनी नेतृत्व क्षमता दिखाकर ब्रिटेन और सोवियत संघ को प्रभावित करना था। इसी कड़ी में अमरीका ने विश्वयुद्ध के लगभग समाप्त हो जाने के बाद भी जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर क्रमश: 6 और 9 अगस्त, 1945 को परमाणु बम गिराकर मानवता के प्रति अपनी क्रूरता को दिखाते हुए अपनी सैनिक क्षमता को प्रकट किया। नतीजा यह रहा कि दूसरे विश्वयुद्ध के हर्जे-खर्चे की भरपाई किसी भी पराजित देश जर्मनी, जापान या इटली से नहीं की गई, बल्कि उनके पुनर्निर्माण में सहायता की गई।

अमरीका द्वारा यह सब करने का उद्देश्य था सोवियत संघ के प्रभाव को नियन्त्रित करना और विश्वभर में कम्युनिस्ट विरोधी अभियान का नेतृत्व करना। चूंकि, सोवियत संघ की सैनिक क्षमता से और आर्थिक व्यवस्था के नियमन से पूरी दुनिया परिचित हो चुकी थी अत: अब पूंजीवादी साम्राज्यवादी देश अपने बचाव में आ गये। और तब शुरू हुआ छुटपुट लड़ाइयों का शीत युद्ध काल, जिसमें अमरीका और सोवियत संघ कभी आमने सामने नहीं हुए।

शीत युद्ध के काल में जहां-जहां भी अमरीका ने सीधे लड़ाइयां लड़ीं, उसे हार का सामना करना पड़ा। उदाहरण के लिए - कोरिया, विएमनाम, कंबोडिया आदि। इन लड़ाइयों के मूल्यांकन से यूरोपीय देश ये आसानी से समझ सके कि अमरीका की सैनिक क्षमता विजय दिलाने योग्य नहीं है, बस परमाणु बम तथा अन्य घातक हथियारों के बल पर दूसरे देशों को भयभीत करके आतंकित कर सकता है।

सोवियत संघ के विघटन की पूर्व भूमिका के रूप में अमरीका ने 'राष्ट्रवाद' को बढ़ावा देने की बदले धार्मिक उग्रवाद को बढ़ावा दिया। अफगानिस्तान इसका उदाहरण है। हालांकि सोवियत संघ के विघटन के बाद अमरीका विश्व की एक मात्र आर्थिक और सैनिक 'महाशक्ति' बना। वर्ल्ड ट्रेड आर्गनाइजेशन जैसी संस्थाओं के माध्यम से उसने अपने व्यापार और अपने आधिकार क्षेत्र को बढ़ाने का प्रयास किया। लेकिन रूस की सैनिक शक्ति बरकरार रहने के कारण यूरोपीय देशों में भय बना रहा, इसलिए वे अमरीका से जुड़े रहे और नाटों जैसे सैनिक संगठनों को बनाये रखा, लेकिन आर्थिक रूप से यूरोपीय देशों ने अमरीका पर निर्भरता के बदले एकीकरण को अपनाया और मुक्त व्यापार, आवाजाही के साथ एक ही मुद्रा 'यूरो' को अपनाकर सदियों पुराने अपने अहंकारों का त्याग कर दिया। उधर वैश्वीकरण का लाभ उठाते हुये चीन औद्योगिक उत्पादन और व्यापारिक दुनिया में रूस से भी आगे बढ़कर दूसरे नम्बर की महाशक्ति बन गया है। चीन सैनिक शक्ति को भी बढ़ाता रहा है, लेकिन अमरीका की अर्थव्यवस्था से मुकाबला करने के लिए उत्पादन और विश्व व्यापार में अमरीकी साम्राज्य के लिए चुनौती बन चुका है।

इस दौर में दूसरे देशों पर सीधा कब्जा नहीं करके वहां अपनी समर्थक सरकारें बनाकर भूगर्भीय खनिजों पर कब्जा करना उद्देश्य हो गया है। अत: इस दौर को, 1990 के बाद के वैश्वीकरण के युग को परम्परागत सैनिक 'शीत युद्ध' नहीं कहकर 'व्यापारिक शीत युद्ध' कह सकते हैं। व्यापारिक शीत युद्ध के दौर में अमरीका और चीन प्रतिद्वंदी हैं। अपने विशाल साम्राज्य के होते हुए भूगर्भीय सहित सभी तरह के भूगर्भीय स्त्रोत रूस में उपलब्ध है। परन्तु, कभी महाशक्ति रह चुके सोवियत संघ के विघटन के बाद भी रूस 'शीत युद्धकालीन' प्रभाव की चाहत रखता है। ना तो अमरीका और ना ही चीन सीधे हस्तक्षेप मे उलझना चाहते है क्योंकि इससे उनका प्रभुत्व क्षेत्र कम होने की सम्भावना है।

ऐसी स्थिति में, पेट्रोलियम के अलावा, स्टील, सोना तथा अन्य बहुमूल्य भूगर्भीय धातुएं, जो कि अत्याधुनिक संचार संसाधनों, अंतरिक्ष के क्षेत्र में काम आने वाले उपकरणों, अत्याधुनिक हथियारों के निर्माण में काम आने वाली धातुओं की उपलब्धता जिन देशों में है वहां की सरकारों को अपने नियन्त्रण में रखने की कोशिशों में तथा अपने बनाये गये अत्याधुनिक हथियारों के परीक्षण के लिए छोटे देशों को आपस में लड़ाते रहना और उन्हें अपने हथियार उन्हें देते रहना उनका उद्येश्य है। ज्यादा दूर तक नहीं जाये तो, सोवियत संघ से विघटित देशों में, जैसे रूस व यूक्रेन में तीन वर्षों से भी अधिक समय युद्ध चल रहा है।

मध्यपूर्व देशों को उनके तेल भंडारों के पुन: वितरण के लिए देशों को काफी समय से लड़ाया जा रहा है- इजराइल को उकसा कर इस्लाम और परमाणु कार्यक्रम के बहाने ईरान को लड़वाया है, वेनेजुएला में अशान्ति, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार (बर्मा), अफगानिस्तान, कुछ अफ्रीकी देश आदि इस व्यापारिक शीत युद्ध के उदाहरण है। इस समय, डोनाल्ड ट्रंप के दुबारा राष्ट्रपति बनने के बाद आयात-निर्यात में ड्यूटी का बढ़ाना-घटाना, चीन को धौंस में लेने के लिए बेतहाशा ड्यूटी बढ़ाकर फिर समझौते के लिए आगे आना, यूक्रेन को हथियार देना और फिर भूगर्भीय धातुओं के लीज पर देने की असमर्थता के चलते यूक्रेन से हाथ खींच लेना क्योंकि यूक्रेन का बहुत बड़ा इलाका रूस के कब्जे में है और वह अमरीका से कोई समझौता नहीं कर सकता।

अमरीका हालांकि हिरोशिमा, नागासाकी को पिछले 80 वर्षों में कई बार दोहरा सकता था, खासतौर से जब वियतनाम, कम्बोडिया में पराजय का सामना करना पड़ा था, अफगानिस्तान से भागना पड़ा था। परन्तु सोवियत संघ के द्वारा सैन्य शक्ति संतुलन बनाये रखने और कम्युनिस्ट विचारधारा के अविकसित और विकासशील देशों में विस्तार के कारण और अब चीन के द्वारा व्यापारिक व सैन्य संतुलन बनाये रखने के कारण किसी परमाणु हथियारों के उपयोग की सम्भावना बहुत कम है। फिर भी ये दंश तीसरे विश्वयुद्ध का भय दिखाकर आम जनता को हमेशा आतंकित रखेंगे, लेकिन वह नहीं होगा। यही व्यापारिक शीत युद्ध है।

**- रामनिवास बैरवा,**
**पूर्व क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त**

## राशिफल मंगलवार 24 जून, 2025

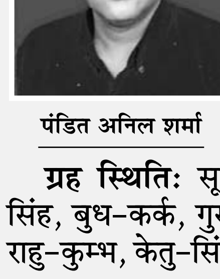

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, रोहिणी नक्षत्र दिन 12:54 तक, शूल योग प्रात: 9:36 तक, विष्टि करण प्रात: 8:35 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:46 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-वृष, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा प्रात: 8:35 तक रहेगी। आज रोहिणी व्रत (जैन) है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** चर 9:03 से 10:46 तक, लाभ-अमृत 10:46 से 7:12 तक, शुभ 3:54 से 5:37 तक।

**राहूकाल:** 3:00 से 4:50 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:20

### मेष
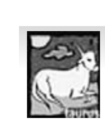
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

### वृष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

### मिथुन
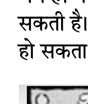
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि हो सकती है।अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

### कर्क
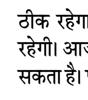
आर्थिक मामलों को प्राथमिकता से ध्यान देना ठीक रहेगा। कल आज जैसी सुविधा नहीं रहेगी। आज संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

### सिंह
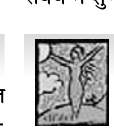
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

### कन्या

नवीन कार्यों के संबंध में अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

### तुला
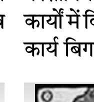
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

### वृश्चिक
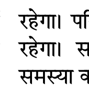
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

### धनु

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

### मकर

व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

### कुंभ
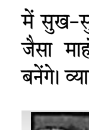
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

### मीन
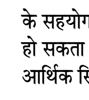
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

ARBiT

The Amish Way

Unknown, uncelebrated and to die alone, unmourned, there is no such thing as living without reference to others

The Maid Who Witnessed the Secrets of Hitler

Elizabeth Kahlhammer thought she was taking a job as a maid, but she was stepping into the heart of one of history's darkest regimes

# भारत को आशंका है, ईरान ''स्ट्रेट ऑफ होरमुज़'' में जहाजों का आवागमन प्रतिबंधित करेगा

## भारत विश्व में ऑयल का तीसरा सबसे बड़ा ''कंज़्यूमर'' है तथा अपनी खपत का 60 प्रतिशत ऑयल खाड़ी देशों से आयात करता है, जिसे ''स्ट्रेट ऑफ होरमुज़'' से होकर गुजरना होता है

- इन हालात में ''ऑयल की सप्लाई'' में जरा भी रूकावट होने से भारत की इकॉनमी डांवा-डोल हो सकती है।
- ईरान, संभवतया नौसैनिक अभ्यास, ड्रोन व मिसाइल एटैक की धमकी और लैंड माइन्स बिछाने की कार्यवाही आदि से, जहाजों के आवागमन को बाधित कर सकता है।
- यह भी माना जा रहा है कि ईरान ''स्ट्रेट ऑफ होरमुज़'' से जहाजों के आवागमन को बंद नहीं करेगा, क्योंकि टोटल आवागमन बंद करने से तो ईरान स्वयम् भी अपना ''ऑयल'' अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में नहीं बेच पायेगा।
- केन्द्रीय पैट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने जरूर हौंसला ऊँचा रखने के लिए कहा कि गत कुछ वर्षों में भारत ने खाड़ी देशों के अलावा भी कई अन्य विकल्प ढूंढे हैं, ऑयल खरीदने के लिए। पर, फिर भी तेल विशेषज्ञों का मानना है कि ऑयल व गैस काफी संवेदनशील सैक्टर है तथा लंबे समय तक ऑयल व गैस की सप्लाई बाधित होने से भारत की इकॉनमी में भारी अस्थिरता पैदा होगी।

**-सुकुमार साह-**
**-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-**

नई दिल्ली, 23 जून। इज़रायल-ईरान संघर्ष एक नए तथा नाज़ुक चरण में प्रवेश कर रहा है, जहाँ अमेरिकी हवाई हमले ईरान के परमाणु ठिकानों को निशाना बना रहे हैं। इससे इस्लामिक गणराज्य अब निर्णायक प्रतिक्रिया के करीब आ गया है। हालाँकि पूर्ण पैमाने पर युद्ध की संभावना कम है, लेकिन ईरान की प्रतिक्रिया लगभग निश्चित रूप से पारंपरिक नहीं होगी, बल्कि यह प्रॉक्सी युद्ध, साइबर हमलों और, सबसे चिंताजनक रूप में, फारस की खाड़ी में रणनीतिक व्यवधान के रूप में सामने आ सकती है। इन चिंताओं में सबसे प्रमुख है, होरमुज़ स्ट्रेट (जलडमरूमध्य) को बंद करने या उसे अवरूद्ध किये जाने की संभावना, चाहे वह वास्तविक हो या प्रतीकात्मक। यदि ऐसा होता है, तो भारत उन पहले देशों में होगा, जो इसका असर महसूस करेंगे।

होरमुज़ स्ट्रेट, जो सबसे सँकरे बिंदु पर केवल 21 मील चौड़ा है, दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा मार्ग है। प्रतिदिन वैश्विक व्यापार वाले लगभग 20 प्रतिशत तेल का प्रवाह इसी मार्ग से होता है। हालांकि ईरान के द्वारा इस मार्ग को पूरी तरह से बंद करने की संभावना कम है, क्योंकि इससे उसके अपने तेल निर्यात पर असर पड़ेगा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हो सकती है, इसलिए वह सीमित व्यवधान की रणनीति अपना सकता है: नौसैनिक अभ्यास, वाणिज्यिक टैंकरों को परेशान करना, ड्रोन या मिसाइलों की धमकी,

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# सुबोध अग्रवाल ने आरएफसी सीएमडी का पद संभाला

*सुबोध अग्रवाल*

जयपुर, 23 जून (कासं)। राजस्थान के सबसे वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी डॉ. सुबोध अग्रवाल ने सोमवार को राजस्थान वित्त निगम जयपुर के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पदभार संभाल लिया है। इससे पूर्व, वे इंदिरा गांधी पंचायतीराज संस्थान जयपुर में महानिदेशक के पद पर कार्यरत थे। वे 1988 बैच के आई.ए.एस. अधिकारी हैं।

- कुलदीप रांका, अखिल अरोड़ा, भास्कर सावंत ने भी कार्य भार ग्रहण किया।

इसी प्रकार, वर्ष 1994 बैच के आई.ए.एस. कुलदीप रांका ने भी उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग में अतिरिक्त मुख्य सचिव, 1993 बैच के

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# केजरीवाल, पंजाब का मुख्यमंत्री बदलना चाहते हैं?

## चर्चाओं के अनुसार, वे पंजाब की असैम्बली के स्पीकर को मु.मंत्री बनाकर, वर्तमान मु.मंत्री मान को राज्यसभा भेज सकते हैं, जैसा कि विदित ही है, वर्तमान स्पीकर ज्ञानी ज़ैल सिंह के पोते हैं

- कांग्रेस आपसी मतभेदों व खींचतान में इतनी उलझी है कि प्रदेशाध्यक्ष राजा वडिंग अपना विधायक पद छोड़कर जब लुधियाना से सांसद बने तो उनकी पत्नी ने उनकी विधायक सीट, लुधियाना वैस्ट, से चुनाव लड़ा था और हार गई थीं और अब लुधियाना पश्चिम की सीट भी कांग्रेस के हाथ से निकल गई है और इस सीट से आम आदमी पार्टी का उम्मीदवार जीता।

**-रेणु मित्तल-**
**-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-**

नई दिल्ली, 23 जून। हाल ही में हुए उपचुनावों के मिश्रित नतीजे सामने आए हैं। आम आदमी पार्टी को गुजरात और पंजाब से एक-एक सीट मिली है। कांग्रेस को केरल से, भाजपा को गुजरात से, तृणमूल कांग्रेस को प.बंगाल से एक-एक सीट मिली है।

कांग्रेस को केरल में यह सीट मिलने की उम्मीद पहले से ही थी, यह सीट 35 साल से कांग्रेस के पास थी। पार्टी ने यहां से वाममोर्चा को हराया है।

गुजरात में आप ने पहले भी वसावदरा सीट जीती थी, पर यहां के विधायक भाजपा में शामिल हो गये थे।

दुबारा हुए उपचुनाव में आप ने फिर से यह सीट जीत ली और दूसरी सीट भाजपा को मिली।

क्या यह गुजरात में भाजपा के लिए चेतावनी का संकेत है, क्या गुजरात भाजपा के हाथ से निकल रहा है?

लेकिन असली कहानी तो पंजाब में है। यहां कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजा वडिंग विधायक की कुर्सी छोड़कर सांसद बन गए। इस सीट से उनकी पत्नी ने चुनाव लड़ा, लेकिन हार गई। अब कांग्रेस लुधियाना वैस्ट सीट भी हार गई है। वह सीट, जहाँ उपचुनाव हुआ, राजा वडिंग की लुधियाना लोकसभा सीट के अंतर्गत आती है। उनके नेतृत्व में कांग्रेस को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस का वोट प्रतिशत लगभग एक प्रतिशत कम हुआ।

इस सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार भारत भूषण आशु थे, जो चरणजीत सिंह चन्नी और राजा गुरजीत के करीबी माने जाते हैं। पार्टी में अंदरुनी कलह के चलते कांग्रेस को नुकसान हुआ और आम आदमी पार्टी ने यह सीट जीत ली।

ऐसी जोरदार अटकलें हैं कि अरविंद केजरीवाल पंजाब के मुख्यमंत्री को बदलना चाहते हैं। चर्चा है कि मुख्यमंत्री भगवंत मान को राज्यसभा भेजा जा सकता है, क्योंकि वहाँ एक सीट खाली है। उनकी जगह विधानसभा अध्यक्ष को मुख्यमंत्री बनाए जाने की योजना है, जो पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के पोते हैं।

इस जीत के बाद, आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल के लिए अच्छी खबर के रुप में देखा जा रहा है, क्योंकि खासकर दिल्ली विधानसभा चुनाव में हार के बाद, जब पार्टी को लगभग खारिज ही कर दिया गया था।

# अमेरिका ने ईरान के खिलाफ हवाई हमले में भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल किया?

## सोशल मीडिया पर दिनभर वायरल रही इस अफवाह का भारत सरकार के प्रैस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो ने जोरदार खंडन किया

- अफवाह की शुरुआत ईरानी न्यूज़ चैनल की एंकर सहर ईमामी की एक्स पर की गई पोस्ट से हुई, जिसमें उन्होंने अमेरिका और भारत की मिलीभगत का उल्लेख कर आरोप लगाया कि भारत ने अमेरिका को ईरान के खिलाफ भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल करने दिया। सहर ने यह भी लिखा कि ईरान इसे कभी नहीं भूलेगा।
- पाकिस्तान ने भी इस अफवाह को खूब बढ़ावा दिया।
- प्रैस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो ने इन खबरों व दावों का खंडन किया और अमेरिकी सेना के जॉइन्ट चीफ ऑफ स्टाफ जनरल डैन केन की प्रेस ब्रीफिंग का लिंक दिया जिसमें अमेरिकी विमानों के मार्ग के बारे में बताया गया था।
- पीआईबी ने दावा किया कि इससे स्पष्ट है कि भारतीय हवाई क्षेत्र अमेरिकन मिशन का हिस्सा नहीं था।

नयी दिल्ली, 23 जून। भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि ऑपरेशन मिडनाइट हैमर के दौरान, ईरान के खिलाफ हमले में अपने बी-2 बमवर्षक विमानों की उड़ान के लिए अमेरिका ने भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल नहीं किया था।

असल में इसकी शुरूआत हुई ईरानी न्यूज चैनल की एंकर सहर इमामी के एक्स पर लिखे गये इस पोस्ट से कि ''अमेरिकी सेना ने ईरान पर हमला करने के लिए भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल किया। नई दिल्ली की चुपचाप की गई यह मिलीभगत उसे इतिहास के गलत पक्ष की ओर ले गई है। ईरान इसे कभी नहीं भूलेगा।'' पाकिस्तान ने भी दिनभर इस अफवाह को खूब प्रचारित और प्रसारित किया।

भारत सरकार के प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, कई सोशल मीडिया अकाउंट्स ने दावा किया है कि ऑपरेशन मिडनाइट

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# लालू यादव ने राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिये नामांकन भरा

पटना, 23 जून। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद चुनाव के लिए आज अपना नामांकन पत्र दाखिल किया।

यादव ने सोमवार को राजद के राष्ट्रीय निर्वाचन अधिकारी डॉ. रामचंद्र पूर्वे और सहायक निर्वाचन अधिकारी चितरंजन गगन के समक्ष चार सैटों में नामांकन पत्र दाखिल किया। प्रत्येक सैट में दस प्रस्तावकों के हस्ताक्षर हैं। इन प्रस्तावकों में पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी, नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव, पूर्व मंत्री अब्दुल बारी सिद्दीकी, वरिष्ठ नेता शिवानंद तिवारी सहित अन्य प्रमुख नेता शामिल हैं।

- वे 24 जून को निर्विरोध अध्यक्ष घोषित होंगे तथा 5 जुलाई को राष्ट्रीय परिषद उनके निर्वाचन की पुष्टि करेगी।

गगन ने बताया कि नामांकन पत्रों

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# अपेक्षित से ही रहे उपचुनाव के नतीजे

## आम आदमी पार्टी को दो सीटें तथा कांग्रेस, भाजपा व तृणमूल को एक-एक सीट पर विजय मिली

- आप के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल की राज्यसभा में एंट्री का रास्ता खुला।
- राज्यसभा में आप के सांसद संजीव अरोड़ा, लुधियाना वेस्ट से विधायक चुने गये हैं। अतः अब वे अपनी राज्यसभा सीट से इस्तीफा देंगे, उन्होंने अपने नेता केजरीवाल को राज्यसभा में भेजने का रास्ता खोल दिया है।

**-डॉ. सतीश मिश्रा-**
**-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-**

नई दिल्ली, 23 जून। चुनाव आयोग ने सोमवार को चार राज्यों की पाँच विधानसभा सीटों पर 19 जून को हुए उपचुनावों के नतीजे घोषित कर दिए। आम आदमी पार्टी (आप) ने दो सीटों पर जीत दर्ज की, जबकि कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) को एक-एक सीट मिली।

पंजाब की लुधियाना वेस्ट और गुजरात की विसावदर सीट पर आप की जीत ने पार्टी सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल के राज्यसभा में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। पार्टी के राज्यसभा सांसद संजीव अरोड़ा ने लुधियाना वेस्ट सीट से जीत दर्ज की, जिससे उनके नेता के लिए राज्यसभा में पहुँचने का रास्ता साफ हो गया है।

आम आदमी पार्टी की जीत पर प्रतिक्रिया देते हुए आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि गुजरात की जनता भाजपा से तंग आ चुकी है और उसने कांग्रेस को भी नकार दिया है। केजरीवाल ने एक्स पर लिखा, ''गुजरात की जनता अब भाजपा से परेशान हो चुकी है और आम आदमी पार्टी में आशा देख रही है।''

यह स्पष्ट होता जा रहा है कि केजरीवाल खुद को इंडिया गठबंधन से अलग कर रहे हैं, जिससे यह मोर्चा कमजोर हो रहा है।

केरल की नीलांबुर सीट कांग्रेस के खाते में गई, भाजपा ने गुजरात की सीट पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखी, जबकि पश्चिम बंगाल की कालीगंज सीट पर सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने सहजता से जीत दर्ज की।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक्स पर लिखा, कालीगंज विधानसभा उपचुनाव में सभी जाति, धर्म और समुदाय के लोगों ने हमें आशीर्वाद दिया। मैं सिर झुकाकर उनका आभार प्रकट करती हूं। इस जीत की निर्माता जनता है। कालीगंज के मेरे सभी सहयोगियों ने इस जीत के लिए पूरी मेहनत की। मैं उन्हें बधाई देती हूं। यह उपचुनाव टीएमसी विधायक नसीरुद्दीन अहमद के निधन के बाद कराया गया था।

देश के अन्य तीन विधानसभा क्षेत्रों में स्थिति यथावत रही, सिवाय केरल के नीलांबुर के, जो वायनाड लोकसभा सीट का हिस्सा है, जहां से प्रियंका गांधी वाड्रा सांसद हैं।

नीलांबुर में जीत के प्रति आश्वस्त प्रियंका गांधी वाड्रा ने इसका श्रेय टीम वर्क को दिया।

उन्होंने लिखा, हमने एक टीम के रूप में काम किया, समर्पण और एकाग्रता के साथ, यही इस सफलता का सबसे बड़ा सबक है। मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए उन्होंने लिखा, ''संविधान के मूल्यों और यूडीएफ के प्रगतिशील दृष्टिकोण में आपका विश्वास हमारे आगे के मार्ग का मार्गदर्शक रहेगा।

कांग्रेस प्रत्याशी आर्यादन शौक़त इस सीट से सीपीएम के एम. स्वराज से 11,077 वोटों से आगे चल रहे हैं।

2021 के विधानसभा चुनावों में इस सीट से निर्दलीय पी.वी. अनवर विजयी हुए थे, जिन्होंने बाद में वाम मोर्चे का समर्थन किया था। लेकिन मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन से मतभेद के चलते, अनवर ने विधानसभा से इस्तीफा दे दिया था और बाद में तृणमूल कांग्रेस की केरल इकाई में शामिल हो गए थे।

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# नाबालिग से दुष्कर्म करने वाले युवक को आजीवन कारावास

जयपुर, 23 जून। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर द्वितीय ने नाबालिग को डरा धमकाकर दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त बाबूलाल जाट को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही, अदालत ने अभियुक्त पर साठ हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी विकास कुमार खंडेलवाल ने अपने आदेश में कहा कि वर्तमान में नाबालिगों के प्रति ऐसे अपराध बढ़ रहे हैं। ऐसे में अभियुक्त के प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।

- पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत के पीठासीन अधिकारी ने सजा के साथ साठ हजार रूपए का जुर्माना लगाया।

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# भारत मौन नहीं, अनुपस्थित सा लग रहा, विदेश नीति की दृष्टि से?

## अमेरिका, चीन, यूरोपियन यूनियन व रूस खुलकर किसी न किसी पार्टी के पक्ष में बोल रहे हैं

- भारत की विदेश नीति के आलोचक कहते हैं आज़ादी के बाद, पहली बार ऐसा लग रहा है कि आज के समय की सबसे बड़े वैश्विक राजनीतिक संकट के समय, भारत की कोई रचनात्मक भूमिका नहीं है।
- इन आलोचकों का यह भी कहना है कि कूटनीति की दृष्टि से संतुलन बैठाने के चक्कर में भारत धीरे-धीरे निष्क्रिय होकर न केवल समय के साथ बाहर रहा है बल्कि भारत का प्रभाव घटता जा रहा है और उसकी नैतिक नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता भी कम हो रही है।

**-जाल खंबाता-**
**-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-**

नई दिल्ली, 23 जून। जैसे-जैसे दुनिया बढ़ते हुए भू-राजनीतिक तनावों से जूझ रही है-चाहे वह लंबे समय से चल रहा रूस-यूक्रेन युद्ध हो या तेजी से फैलता ईरान-इज़राइल संघर्ष, भारत की विदेश नीति सम्बंधी रुख को लेकर उसकी आलोचना हो रही है हालांकि कुछ लोग इसे रणनीतिक चुप्पी कह रहे हैं।

जहाँ अमेरिका, चीन, यूरोपीय संघ और रूस जैसी वैश्विक शक्तियां खुलकर अपने रुख या हित व्यक्त कर रही हैं, वहीं भारत, जो विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और एक उभरती वैश्विक शक्ति है, ने अधिकतर मामलों में मतदान से दूर रहने या तटस्थ बयानों को प्राथमिकता दी है।

भारत के एक शीर्ष पूर्व राजनयिक ने, नाम न छापने की शर्त पर, कहा, ''यह शायद स्वतंत्रता के बाद पहला अवसर है, जब दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण संघर्षों में भारत की कोई अर्थपूर्ण या सक्रिय भूमिका नहीं दिखाई दे रही है। यह केवल चुप्पी नहीं है, यह अनुपस्थिति है।''

भारत ने यूक्रेन और पश्चिम एशिया से संबंधित कई महत्वपूर्ण संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों पर मतदान से परहेज़ किया है। जहां अधिकारी इसे रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने की आवश्यकता बताते हैं, वहीं आलोचकों का कहना है कि यह कूटनीतिक संतुलन प्रक्रिया अब निष्क्रिय मुद्रा में बदल गई है, जिससे भारत की वैश्विक प्रभावशीलता और नैतिक अधिकार दोनों में गिरावट आई है।

विशेषज्ञों के अनुसार, यह परिवर्तन मौजूदा सरकार की प्राथमिकताओं में बदलाव का परिणाम है। विदेश नीति मामलों की विशेषज्ञ प्रोफेसर अनुराधा सेन के अनुसार, यह केवल तटस्थता नहीं है, बल्कि भारत की ऐतिहासिक नैतिक दिशा से एक सुनियोजित तरीके से पीछे हटना है।

नेहरूवादी सिद्धांतों के तहत, भारत ने उपनिवेशवाद विरोधी संघर्षों, निरस्त्रीकरण और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का समर्थन किया। लेकिन हाल के कदमों से संकेत मिलता है कि भारत अब दीर्घकालिक वैश्विक दृष्टिकोण के बजाय, अल्पकालिक एवं तात्कालिक हितों से प्रेरित लेन-देन आधारित कूटनीति की ओर बढ़ रहा है।

ईरान-इज़रायल संघर्ष, जो समूचे खाड़ी क्षेत्र को अस्थिर कर सकता है, ने भारत के लिए एक बड़ी दुविधा पैदा कर दी है। खाड़ी देशों में 80 लाख से अधिक भारतीय नागरिक रहते और काम करते हैं, ऐसे में किसी भी प्रकार का तनाव आर्थिक और मानवीय दोनों दृष्टियों से गंभीर परिणाम ला सकता है। फिर भी भारत ने अब तक केवल ''तनाव कम करने'' की अपीलें की हैं, बिना किसी ठोस कूटनीतिक पहल या मध्यस्थता की भूमिका के, जो पहले भारत पश्चिम एशिया संकटों में निभाता रहा है।

इसी प्रकार, रूस-यूक्रेन युद्ध ने भी भारत की विदेश नीति की सीमाओं को उजागर किया है। भारत, जो रियायती रूसी तेल खरीदता है और रुस से रक्षा संबंध बनाए रखता है, अपनी इस स्थिति का उपयोग किसी महत्वपूर्ण शांति प्रयास या मध्यस्थ भूमिका निभाने हेतु करने में विफल रहा है।

एक विश्लेषक के शब्दों में, यहां तक कि ग्लोबल साउथ (वैश्विक दक्षिण) भी अब नैतिक एवं कूटनीतिक नेतृत्व के लिए ब्राज़ील, दक्षिण अफ्रीका और यहां तक कि तुर्की की ओर देख रहा है।

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# ईरान ने कतर व इराक के अमेरिकन बेस पर हमला किया

तेहरान/तेल अवीव. ईरान ने सोमवार को कतर और इराक में अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर मिसाइल दाग दीं। यह हमला अमेरिका द्वारा ईरान के परमाणु ठिकानों पर हालिया हवाई हमलों के जवाब में किया गया। ईरानी मीडिया के अनुसार, कतर के अल उदेद एयर बेस पर छह मिसाइलें और इराक के ऐन अल-असद बेस पर एक मिसाइल दागी गई। इन हमलों को विजय की घोषणा नामक अभियान का हिस्सा बताया गया।

- अमेरिका ने कहा, हमले से कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ है। कतर सरकार ने ईरानी हमले की कड़ी निंदा की।

हालांकि, कतर में अमेरिकी ठिकानों पर मिसाइल हमले का कोई

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

CMYK

## संक्षिप्त

### एक घर से आभूषण चुराने का आरोपी गिरफ्तार

**निवाई।** निवाई थाना पुलिस ने एक घर से आभूषण चुराने के आरोपी को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा ने बताया कि कमलेश पुत्र विजय नारायण गुप्ता निवासी पीपलवाड़ा,थाना बौंली ने थाने में घर से सोने चांदी के आभूषण चोरी होने का मामला दर्ज करवाया था। पुलिस ने थानाधिकारी के नेतृत्व में टीम गठित कर अनुसंधान शुरू किया। चोरी की वारदात के स्थान के आसपास लगे हुए सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाले। टीम ने सरदू 25 वर्ष पुत्र नारायण सिंह उर्फ रणसिंह भील निवासी डेलघाटा,थाना टाण्डा,जिला धार,मध्य प्रदेश को डिटेन कर पूछताछ की। इस पर अभियुक्त ने चोरी करना स्वीकार कर लिया। पुलिस ने आरोपी से चांदी की एक पायजेब व एक अंगूठी बरामद की है। आरोपी ने पुलिस को बताया कि वह सूने मकान की रैकी करने के बाद चोरी की वारदात को अंजाम देता था। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है। उससे और भी चोरी की वारदातों का खुलासा होने की संभावना है।

### विद्यालय ने किया सम्मानित

**निवाई।** इम्मानुएल मिशन स्कूल में कक्षा 12वीं व 10वीं बोर्ड में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को विद्यालय परिवार ने माला पहनाकर व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। विद्यालय की प्राचार्या मिनी ए जार्ज ने बताया कि दसवीं कक्षा में हार्दिक अग्रवाल ने 98.50 प्रतिशत व मनस्वी शर्मा ने 98.33 प्रतिशत अंक प्राप्त कर माता-पिता और गुरु दोनों का नाम रोशन किया है। उन्होंने बताया कि दोनों विद्यार्थियों ने टोंक जिले में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। इसी प्रकार 10वीं कक्षा में 41 छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं। उन्होंने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है। इस अवसर पर सभी प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

### चोरी प्रकरण का आरोपी गिरफ्तार

**टोंक।** पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में पुलिस उप-अधीक्षक निवाई मृत्युन्जय मिश्रा व थानाधिकारी निवाई रामजीलाल द्वारा गठित थाना टीम ने थाने में दर्ज प्रकरण नकबजनी व चोरी की वारदात का खुलासा करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार निवाई में हुई रात को चोरी जिसमें चोरो द्वारा मकान के ताले तोडकर एक जोडी चांदी की पायजेब की चोरी कर ले गये। जिसके बाद गठित टीम ने कार्यवाही करते हुए घटना स्थल के आस-पास में लगे सीसीटीवी फुटेज व साक्ष्यो के आधार पर आरोपी सरदू पुत्र नारायण सिंह उर्फ रणसिंह जाति भील उम्र 25 साल निवासी डेलघाटा पुलिस थाना टाण्डा जिला धार मध्यप्रदेश को डिटेन कर पुछताछ के दौरान तलाशी ली गई तो उसके पास एक चांदी की पायजेब एवं एक अंगुठी मिली, जो परिवादी कमलेश कुमार के घर से चुराना बताया। आरोपी को बाद अनुसंधान के गिरफ्तार किया गया, अभियुक्त ने बताया कि वह सुने मकानों की रैकी कर रात के समय चोरी करता था।

### एकादश कुंडात्मक महायज्ञ को लेकर हुई ध्वज स्थापना

**निवाई।** श्री दादू दयाल गौशाला किवाड़ा में गौऋषि संत प्रकाशदास महाराज के सानिध्य में यज्ञ आचार्य मुरलीधर शर्मा, रामवतार शर्मा ने वैदिक मंत्रोंचारण के साथ यज्ञ ध्वज का पूजन कर स्थापित किया गया। श्रद्धालु दयालदास स्वामी ने बताया कि महाराजश्री ने विश्वशांति व गौमाता की रक्षार्थ व राष्ट्र प्रेम एवं भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म के प्रचार प्रसार हेतु एकादश कुंडात्मक दादू सुरभि महायज्ञ को लेकर हुई ध्वज स्थापना की गई। इस अवसर पर रामेश्वर गुरुजी, दिनेशदासदादू पालका, दुर्गाप्रसाद शर्मा सरोली, नवल शर्मा जयपुर, रामराय भैरूपुरा, राजेश जांगिड़ व हरभान महाराज सहित कई श्रद्धालु मौजूद थे।

### महानिरीक्षक आईजी ने किया सम्मानित

**निवाई।** गांव बाढ़ छौरियां निवासी सामाजिक कार्यकर्ता भरत देवड़वाल को आईपीएस आईजी सिविल राइट्स राजस्थान जयनारायण शेर आईजी ने वन लाइफ नेचुरल इंडिया क्लब के साईकलोथोन साइक्लिंग मैराथन दौड़ कार्यक्रम के मंच पर भरत देवड़वाल को सामाजिक कार्यों में उत्कृष्ट कार्य करने पर सम्मानित किया। इस दौरान मुख्य अतिथि आईजी जयनारायण शेर सहित क्लब के चैयरमैन कैलाश मीणा, राजस्थान साइक्लिंग सलेक्शन कमेटी मेंबर जयपुर आरके शर्मा, किशनगढ़ एयरपोर्ट अधीक्षक सीएल मीणा, आदि मौजूद थे।

# नशीले पदार्थों की तस्करी को सख्ती से रोकने के साथ कड़ी कार्रवाई करें : कलेक्टर

खैरथल जिला सचिवालय पर नार्को कोऑर्डिनेशन केंद्र की जिला स्तरीय कमेटी की बैठक लेते जिला कलेक्टर किशोर कुमार।

- युवाओं और महिलाओं की भागीदारी हेतु जागरूकता अभियान चलाने के भी निर्देश

**खैरथल।** जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को जिला सचिवालय पर नार्को कोआर्डिनेशन केंद्र की जिला स्तरीय कमेटी की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक के दौरान जिले में नशीले पदार्थों की तस्करी, अफीम या गंजे की अवैध खेती, ट्रामाडोल कोडिन आधारित खांसी की दवाई, भांग के वैध ठेको पर संचालित अवैध गतिविधियों की रोकथाम, पुलिस विभाग व अन्य विभागों द्वारा अभी तक की गई कार्यवाही, एनडीपीएस अधिनियम और दवाइयां के हानिकारक प्रभाव के प्रावधान के बारे में जागरूकता साहित अन्य बिंदुओं पर चर्चा की गई।

जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने बैठक में अधिकारियों को जिले में ड्रग की समस्या से निपटने में युवाओं और महिलाओं की भागीदार हेतु जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिए तथा ऐनशा मुक्त भारत अभियान की सफलता के क्रम में सभी कार्यालयों के कार्मिकों, स्कूल एवं कॉलेज में नशा विरुद्ध अभियान की प्रेरणा स्वरूप एक शपथ दिलाने के निर्देश दिए। उन्होंने ने भांग के ठेकों निगरानी रखते हुए वैध तरीके से संचालित करवाने के निर्देश भी दिए।

बैठक में कलेक्टर ने जिले में पुलिस विभाग को नशीले पदार्थों की तस्करी तथा बेचान के विरुद्ध अभियान चलाकर कार्यवाही के निर्देश दिए हैं। बैठक के दौरान बताया गया कि जिले में अफीम जैसे मादक पदार्थों का प्रचलन नहीं है परंतु जिले में गांजे के प्रकरण सामने आए जिनके विरुद्ध समय-समय पर कार्यवाही की गई है।

विद्यालयों के परिधि में तंबाकू उत्पाद बेचने पर 1 जनवरी से अब तक 65 प्रकरणों में 65 लोगों के खिलाफ 13000 का चालान किया गया। इसी प्रकार 1 जनवरी से अब तक 19.107 किलो गांजा भिवाड़ी पुलिस द्वारा एवं 5 किलो 723 ग्राम गांजा खैरथल पुलिस द्वारा पकड़ कर कार्रवाई की गई। भिवाड़ी पुलिस ने कार्यवाही कर 153.6 ग्राम स्मेक, 86.8 ग्राम चिट्टा, 13.65 किलो डोडा चूरा एवं एक मोटरसाइकिल वाहन जप्त कि।

इसी प्रकार खैरथल पुलिस द्वारा 118 प्रकरणों में 106 लोगों को गिरफ्तार कर 1750 लीटर हथखड़ शराब एवं 15 लीटर अंग्रेजी शराब जप्त की, एवीएन भीवादी पुलिस द्वारा 121 प्रकरणों में 111 लोगों को गिरफ्तार कर 519 लीटर हथकड़ एवं 789 लीटर देसी शराब एवं 5.22 लीटर अंग्रेजी शराब जप्त की।

बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भिवाड़ी अतुल साहू, डिप्टी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी पूरण मीणा, जिला शिक्षा अधिकारी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

## कल्पना अग्रवाल को टोंक की कलेक्टर बनाया

**टोंक।** राज्य सरकार की ओर से रविवार देर रात जारी की गई, भारतीय प्रशासनिक अधिकारियों के तबादला सूची के अन्तर्गत टोंक की कलेक्टर डॉ. सौम्या झा का ट्रांसफर जयपुर हो जाने के बाद अब इनकी जगह आईएएस कल्पना अग्रवाल को टोंक की कलेक्टर बनाया गया है। कल्पना अग्रवाल ने सोमवार को जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट टोंक का कार्यभार ग्रहण कर लिया। इससे पूर्व बहरोड़ में कार्यरत थी, कल्पना अग्रवाल मूलत सिरोही जिले की रहने वाली है।

इस अवसर पर नवनियुक्त जिला कलेक्टर ने कहा कि राज्य सरकार की फ्लैगशिप स्कीम का लोगों को फायदा मिले, इस पर उनका विशेष फोक्स रहेगा। ज्ञात रहे कि राजस्थान सरकार ने प्रदेश में प्रशासनिक अधिकारियों का फेरबदल किया है, जिसके दौरान सरकार ने 62 प्रशासनिक अधिकारीयों का तबादला किया है।

# भारतीय जनता पार्टी ने डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि मनाई

नेता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के अवसर पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया ।

- भारतीय जनसंघ के संस्थापक एवं अद्वितीय राष्ट्रवादी नेता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के अवसर पर कोटा देहात में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

**पावटा।** भारतीय जनता पार्टी ने डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि को बलिदान दिवस व आपात काल के काले अध्याय का 50वा वर्ष कार्यक्रम पूरे देश में आयोजित करने का निर्णय लिया है। इसी के दौरान आज कोटा प्रवास पर सोमवार को राष्ट्र के महान सपूत, भारतीय जनसंघ के संस्थापक एवं अद्वितीय राष्ट्रवादी नेता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के अवसर पर कोटा देहात में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में उपस्थित वक्ताओं ने डॉ. मुखर्जी के राष्ट्र के प्रति योगदान, उनकी विचारधारा तथा उनके अदम्य साहस को याद किया।

उन्होंने किस प्रकार "एक देश-एक संविधान - एक प्रधान-एक निशान" के सिद्धांत को लेकर जम्मू-कश्मीर गए और वहां रहस्यमय परिस्थितियों में अपने प्राणों का बलिदान दिया, यह चर्चा का केंद्र रहा। सभा की शुरुआत दीप प्रज्वलन एवं डॉ. मुखर्जी के चित्र पर पुष्प अर्पण से हुई। तत्पश्चात उपस्थित जनों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड, भाजपा देहात अध्यक्ष प्रेम गोचर, पूर्व विधायक एवं भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष चंद्रकांता मेघवाल, प्रदेश महामंत्री भाजपा स्टेट मोर्चा राजस्थान अशोक मीणा, भाजपा प्रदेश मंत्री अनसूया गोस्वामी, जिला प्रमुख मुकेश मेघवाल, पूर्व जिला प्रमुख गोविंद सिंह परमार, पूर्व जिला देहात अध्यक्ष भाजपा योगेंद्र सिंह नंदवाना अलकू, आईसीएल प्रभारी मयंक शेट्टी, भाजपा जिला महामंत्री ललित शर्मा, जिला महामंत्री नरेंद्र राजा, लाडपुरा प्रधान हेमंत यादव सहित स्थानीय नागरिकों, छात्रों, शिक्षकों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

# लाखों का ठेका देने के बावजूद नही हो रही नालों की सफाई

- संबंधित अधिकारी को ठेकेदार सरकारी धन को चूना लगाने की नियत पर कागजों में कर रहे नालों की सफाई
- पिछले 5 सालों में नालों की सफाई और मरम्मत पर करोड़ों खर्च, धरातल पर भ्रष्टाचार के चलते हालात ज्यो के त्यों

**देवली ।** नालो की सफाई और मरम्मत की बात करें तो यहां नालों की सफाई और मरम्मत के नाम पर खुला भ्रष्टाचार साफ तौर पर देखा जा सकता है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नालों की सफाई और मरम्मत के नाम पर देवली पालिका के अधिकारी सुरेश कुमार मीणा पिछले 8 वर्षों से यहां नियुक्त रहते हुए करोड़ों रू के टेंडर जारी कर चुके हैं । बावजूद इसके देवली शहर की जनता को इसका पूरा-पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में शहर के नालों के हालातो को देखें तो उक्त नालों के नाम कार्य धरातल पर नहीं होकर मिली भगत के फेर में केवल कागजों में ही ह होता चला आ रहा है। इसलिए की पिछले एक सप्ताह से देवली शहर में बारिश का दौर रुक रुक कर जारी है। और सोमवार को यहां दिन भर बारिश का दौरा बना रहा इसके चलते मामूली बारिश पर भी बारिश का रोड पर ही बहता दिखाई दिया। इसलिए की शहर के नाले गंदगी से सटे हुए अपनी बदहाली पर देवली पालिका में चल रहे भ्रष्टाचार की पोल खोल रहे हैं ।

यह कहना कोई मुश्किल नहीं होगा कि नालों की सफाई और मरम्मत का कार्य शहर भर में धरातल स्तर पर नहीं होकर केवल कागजों में हो रहा है। इतना ही नहीं यहां साफ तौर पर सरकारी धन को चूना लगाने की नीयत से उक्त कार्यों की आड़ में जमकर भ्रष्टाचार होना देखा जा सकता है ।

उल्लेखनीय है कि अभी हाल ही मे देवली पालिका के अधिशासी अधिकारी सुरेश कुमार मीणा ने,23 अप्रैल 2025 को शहर के नालों की सफाई कार्य के नाम 8 लाख 61 हजार का ठेका दिया है । ऐसे में नगर पालिका के अधिकारी सुरेश कुमार मीणा ने नालों की सफाई करवाये जाने को लेकर ठेकेदार को ठेका तो दे दिया,लेकिन नगर पालिका के उक्त अधिकारी ने ठेकेदार से शहर की नालों की सफाई करवाने में केवल महज खानापूर्ति की हैं। ऐसे में लोगों का मानना है कि नगर पालिका अधिकारी अपने चहते ठेकेदार को लाखों का फायदा पहुंचाने की भूमिका में बने हुए हैं इसलिए की अभी हाल ही में दो माह पहले नालों की सफाई कार्य हेतु पालिका के अधिशासी अधिकारी सुरेश कुमार मीणा ने 8 लाख 61 हजार रू का ठेका दिया था। तो वही 2 महीने गुजर जाने के बाद भी शहर भर के पूर्ण नालों की सफाई नहीं हो पाई है। आपदा समय से पहले नालों की सफाई का कार्य समय रहते नहीं हो पाया है। इससे साफ जाहिर होता है कि भ्रष्टाचार की नीति के बीच अधिकारी और ठेकेदार कि मिली भगत से सरकारी यहाँ केवल धन का दुरुपयोग हो रहा है । जब नालों की सफाई के बारे में अधिकारी से पूछा गया तो इस पर क्या कहते हैं अधिकारी ,आप को क्या लगता है नालों की सफाई पर आप कहते हो आपको लगता है कि नालों की सफाई नहीं हुई है तो आप लिख दीजिए नालों की सफाई नहीं तो नही हुई। साथ में फोटो खींचकर लगा दीजिए।

# भामाशाहों के सम्मान के साथ निशुल्क जल सेवा का समापन

- दैनिक रेल यात्री संघ एकीकृत फुलेरा द्वारा पिछले 6 वर्षों के प्रति वर्ष गर्मी में जारी

**फुलेरा ।** फुलेरा जंक्शन पर पिछले करीब 45 दिनों से दैनिक रेल यात्री संघ एकीकृत फुलेरा एवं आमजन के संयुक्त तत्वाधान में चल रही निशुल्क जल सेवा का समापन रविवार को सांय 4 बजे एक सम्मान समारोह के साथ किया गया। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में नरैना दादूधाम के पीठाधीश्वर ओमप्रकाश दास महाराज रहे, तो विशिष्ट अतिथि के रूप में पेंशनर सोसायटी अध्यक्ष आर सी वर्मा, शिक्षाविद् शक्ति सिंह, महन्त सत्यनारायण सैनी, आर पी एफ के राजेश सिंह, सुगनचन्द वर्मा आदि रहे। कार्यक्रम के दौरान अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष अशोक वासदेव के द्वारा की गई।

कार्यक्रम के प्रारंभ आगन्तुक अतिथियों का दुपट्टा ओढ़ाकर एवं स्मृति चिह्न भेंट कर स्वागत अभिनन्दन किया गया। तत्पश्चात जल सेवा में भागीदारी निभाने वाले विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों, भामाशाहों, स्काउट्स गाइडस, महिला मण्डल कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों, समाज सेवियों का दुप्पटा ओढ़ाकर एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी क्रम में कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए पीठाधीश्वर ओमप्रकाश दास महाराज ने कहा कि सेवा परम धर्म है, सेवा भाव से किए गए कार्य का प्रतिफल अवश्य मिलता है। वहीं उन्होंने फुलेरा के जाबांज़ कर्मवीरों की जल सेवा कार्य की सराहना करते हुए दैनिक रेल यात्री संघ एकीकृत के कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। इसके साथ ही संघ के अध्यक्ष अशोक वासदेव ने जल सेवा कार्य में सहयोग करने वाले सभी संगठनों, प्रबुद्धजनों, मातृ शक्तियों, जनप्रतिनिधियों और भामाशाहों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन संतोष कुमार स्वामी के द्वारा किया गया। इस अवसर पर संघ के प्रवक्ता नीरज सैन, बलबीर गुर्जर, बाबूलाल अजमेरा, ललित जैन, प्रेम कुमावत, प्रेमचन्द सैन, मुकेश सैन, राकेश वासदेव, दुर्गा सिंह नरूका, ललित सोनी, पूजा भाटी, पूनम कुमावत, सत्यनारायण सैनी, सी.पी. त्रिपाठी, शेषनारायण सैनी सहित अन्य कई लोग उपस्थित रहें।

## ग्रामसभा में विकास कार्यो का लिया प्रस्ताव

**निवाई।** ग्राम पंचायत खणदेवत में सरपंच सीमा देवी बैरवा की अध्यक्षता में विशेष योग्यजन शिविर एवं प्रधानमंत्री धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का आयोजन किया गया। सरपंच सीमा बैरवा ने कहा कि ग्राम पंचायत के सभी गांवों को ध्यान में रखते हुए विकास के कार्य किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं के लिए प्रत्येक पात्र व्यक्ति को लाभान्वित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकारी योजनाओं से वंचित पात्र व्यक्ति पंचायत में संपर्क कर सकते हैं एवं जो भी समस्याएं हैं उनको ग्राम विकास अधिकारी राधाकिशन बैरवा को अवगत करवाएं जिससे समय पर उक्त समस्याओं को समाधान हो सके। जनप्रतिनिधि अखराज बैरवा ने बताया कि सरकार द्वारा संचालित 15 दिवसीय वंदे गंगाजल अभियान को लेकर सभी वार्ड पंचों एवं ग्रामवासियों को जल है तो कल है, यही हमारा संकल्प है, का संकल्प दिलवाकर जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया।

# नाले की सफाई एवं पक्के निर्माण की मांग को लेकर आक्रोश जताया

- मंगल विहार कॉलोनी वार्ड नंबर 32 की महिलाओं ने कॉलोनी से गुजर रहे बरसाती नाले की सफाई और पक्के निर्माण की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया

**चाकसू।** कस्बे के नगर पालिका के पीछे स्थित मंगल विहार कॉलोनी वार्ड नंबर 32 की महिलाओं ने कॉलोनी से गुजर रहे बरसाती नाले की सफाई और पक्के निर्माण की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया और सड़क जाम कर दिया। उनका कहना है कि नाले की स्थिति बहुत खराब है, जिससे कॉलोनी में बरसात के दिनों में स्थाई रूप से गंदा पानी फैल जाता है जिससे आवागमन दुश्वार होने के साथ-साथ बीमारियां फैलने का खतरा मंडराता है। इसके साथ ही जहरीले जीव जंतुओं का डर हमेशा बना रहता है। महिलाओं ने नगर पालिका प्रशासन एवं जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों से तत्काल कार्यवाही करने और नाले की सफाई और पक्के निर्माण की मांग की है, ताकि भविष्य में कॉलोनी वासियों को परेशानियों से बचाया जा सके।

प्रदर्शन कर रही महिलाओं ने बताया कि लंबे अरसे से नगर पालिका प्रशासन से नाले की साफ सफाई एवं पक्के निर्माण की मांग रखी जा रही है और हर बार पालिका प्रशासन की ओर से बताया जाता रहा है कि टेंडर हो चुके हैं जल्दी पक्के नाले का निर्माण शुरू हो जाएगा लेकिन आज तक भी निर्माण कार्य शुरू नहीं किया गया जिस कारण बरसात के साथ पुरी कॉलोनी जलमग्न हो जाती है पूरे कस्बे की गंदगी कॉलोनी में इकट्ठी हो जाती है जिससे कॉलोनी वासियों को भारी समस्या का सामना उठाना पड़ता है।

बुजुर्ग नाली के पानी में अक्सर फिसलकर गिरने से चोटिल हो जाते हैं। नाली का पानी काफी दिनों से सड़क पर बहने के कारण कहीं-कहीं गड्ढा भी हो गया है।सोमवार को भी मामले को लेकर नगर पालिका कार्यालय पर पहुंचने पर यहां कोई भी जिम्मेदार अधिकारी एवं कर्मचारी मौके पर नहीं मिलने पर आक्रोशित होकर सड़क पर धरना प्रदर्शन करना पड़ रहा है। सड़क पर महिलाओं के द्वारा धरना प्रदर्शन से टोंक रोड पर लंबा जाम लग गया जिसकी सूचना पुलिस तक पहुंचाने के बाद पुलिस के जवान मौके पर पहुंचे और महिलाओं को समझाइस कर नगर पालिका कार्यालय लेकर आए इस दौरान लगभग आधे घंटे तक टोंक रोड जाम रहा। और प्रदर्शन के दौरान महिलाएं वाहन चालकों से भी उलझती नजर आई और अपनी पीड़ा उन्हें भी बताती नजर आई। सफाई के आश्वासन के महिलाएं प्रदर्शन से हटी इस दौरान मौजूद महिलाओं ने जमकर नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया।नगर पालिका अधिशासी अधिकारी डॉक्टर बनवारी लाल मीणा कहना है कि शीघ्र ही सर्वे करवा कर एस्टीमेट बनाकर बजट के साथ कार्य योजना बनाकर समस्या का स्थाई समाधान कराया जाएगा ।

## छठवीं राज्य स्तरीय किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता संपन्न

**श्रीमाधोपुर।** तीन दिवसीय छठवीं राज्य स्तरीय किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता का समापन मानसरोवर जयपुर में रविवार को हुआ। इसमें सीकर टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अलग-अलग आयु और अलग-अलग किलो भार में कुल 37 मेडल जीते जिसमें स्वर्ण पदक 10, रजत पदक 14, और कांस्य पदक 13 शामिल है। सीकर जिला किकबॉक्सिंग संघ सचिव रवि प्रजापत ने बताया कि सीकर जिले के विभिन्न खिलाड़ियों ने विभिन्न आयु वर्गों और किलो भार में भाग लिया जिसमे प्रो स्टार अकेडमी टीम ने 4 स्वर्ण पदक, 4 रजत पदक,1 कांस्य पदक जीते, आर आर फाइटिंग क्लब श्रीमाधोपुर ने 1 स्वर्ण पदक , 5 रजत पदक, 3 कांस्य पदक जीते ,वही रींगस के सिद्धार्थ स्वामी नें 63 केजी किक लाइट मे रजत पदक और पॉइंट फाइट मे कांस्य पदक जीता ।

इसी क्रम में कोच शंकर टीम पालवास नें 3 स्वर्ण पदक, 3 रजत पदक, 2 कांस्य पदक जीता और वृंदा वैली स्कूल पिपराली नें 2 स्वर्ण पदक, 1 रजत पदक, 6 के जीतकर सीकर का नाम रोशन किया।

## सार-समाचार

### टूर्नामेंट सीजन 2 का शुभारंभ

**मनोहरपुर ।** कस्बे के होद की पाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेल मैदान स्टेडियम में टूर्नामेंट सीजन 2 प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। इस टूर्नामेंट में 34 टीमें भाग लेंगी और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व सरपंच अर्जुन मोहनपुरिया और आयोजक आदिल खान थे। विशिष्ट अतिथियों में मंजूर खान, एडवोकेट मुराद अहमद और अफसर खान शामिल थे। प्रतियोगिता का शुभारंभ पूर्व सरपंच अर्जुन मोहनपुरिया ने सिक्का उछाल कर किया। उद्घाटन मैच बांसा क्रिकेट क्लब और मंसूरी क्रिकेट क्लब के बीच खेला गया। बांसा क्रिकेट टीम ने पहले खेलते हुए 8 ओवर में 75 रन बनाए, जबकि मंसूरी क्रिकेट क्लब ने 49 रन बनाए।मंसूरी क्रिकेट क्लब 26 रन से हराकर बांसा क्रिकेट क्लब ने जीत हासिल की। पूर्व सरपंच अर्जुन मोहनपुरिया ने अपने संबोधन में कहा कि खेल से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है और मानसिक और शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने समय-समय पर क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजन पर बल दिया है।इस अवसर पर हमराज खान, वाहिद खान, शियाब खान, शफीक खान, मुस्कुरा खान, जुनेद खान, हेमंत, सुनील और राज यादव सहित अन्य लोग मौजूद रहे। यह टूर्नामेंट न केवल खिलाड़ियों के लिए एक मंच प्रदान करेगा, बल्कि मनोहरपुर के खेल प्रेमियों के लिए भी एक बड़ा अवसर होगा।

### पुण्यतिथि कार्यक्रम आज

**शाहपुरा।** स्व. रावधीर सिंह स्मृति सेवा मंडल शाहपुरा के तत्वाधान में मंडल संरक्षक एवं जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह के दिशा निर्देश के तहत स्व. श्री रावधीर सिंह की 51वीं पुण्यतिथि कार्यक्रम 24 जून 2025 मंगलवार प्रातः 8 बजे हनुमंत निवास बाग शाहपुरा में आयोजित होगा। मंडल अध्यक्ष रामेश्वर प्रसाद योगी ने बताया कि कार्यक्रम में सांसद राव राजेंद्र सिंह के सानिध्य में भजन कीर्तन तथा श्रद्धा सुमन अर्पण किया जायेगा। इस दौरान त्रिवेणी धाम के महाराज संत श्री श्री 1008 रामरिछपाल दास जी महाराज के आशीर्वचन होंगे। दिव्यांगो का चयन कर रजिस्ट्रेशन किया जाएगा तथा निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर आयोजित होगा जिसमें डॉ. चंद्रशेखर शर्मा (भूतपूर्व चिकित्सा अधिकारी प्रभारी लाल बहादुर शास्त्री राजकीय चिकित्सालय शाहपुरा) एवं वर्तमान में राजस्थान हॉस्पिटल, टोंक रोड, लाल कोठी, जयपुर के द्वारा उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय गति आदि रोगों की जांच करते हुए सेवाएं दी जायेगी तथा कार्यक्रम में निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में मोतियाबिंद के ऑपरेशन किए हुए मरीजों की आंखों की जांच, राजकीय उप जिला चिकित्सालय के अनुभवी चिकित्सकों के द्वारा हड्डी, घुटनों के दर्द की जांच, नाक, कान, गला की जांच, नेत्र रोग की जांच कर चिकित्सा एवं परामर्श दी जायेगी।

### किशनगढ़ बास में संगोष्ठी आयोजित

**किशनगढ़ बास।** डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान दिवस पर सोमवार को भाजपा कार्यालय अनाज मंडी पर संगोष्ठी का आयोजन किया गयाकार्यक्रम की शुरुवात विधिवत रूप से श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के चित्र पर पुष्पांजलि कर किया गया। देश में दो विधान, दो निशान, दो प्रधान नहीं होने चाहिए, कि जम्मू कश्मीर का भारत में पूर्ण विलय होना चाहिए और धारा 370 को वहां से पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया जाए वर्तमान भाजपा सरकार ने उनके इस सपने को पूरा किया है। मंडल महामंत्री जगदीश यादव ने अपना उद्बबोदन में कहा कि जन संघ के संस्थापक डॉ साहब युग पुरुष थे। इस मौके पर जिला मंत्री आशा गुप्ता, चेयरमैन प्रतिनिधि सतीश सिंघल, घुमंतू अर्ध घुमंतू प्रकोष्ठ के जिला सह संयोजक कैलाश गौड, मंडल महामंत्री जगदीश यादव,जयसिंह सरदार, मंडल उपाध्यक्ष पार्षद तेजसिंह सैनी, जसवंत यादव, माया खंडेलवाल, मंडल मंत्री विनोद मिश्रा, निहाल बंटी, पूर्व सरपंच कृष्ण यादव, सरपंच फकरूदीन, पार्षद अनिल शर्मा, सोशल मीडिया प्रमुख अजय योगी, कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र हरवानी, मीडिया प्रमुख संजय गोयल, पूर्व मंत्री प्रकाश प्रजापत, बाबूलाल प्रजापत, एस सी मोर्चा अध्यक्ष रामस्वरूप, एसटी मोर्चा अध्यक्ष रामसिंह परमार, एडवोकेट धर्मपाल यादव,रामस्वरूप यादव कालू, रिंकेश गुप्ता, विक्की गोयल, सतपाल चौधरी, हीरू हरवानी आदि भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

### आम रास्ते में भरे पानी से ग्रामीणों को हो रही परेशानी

**निवाई।** गांव काचरिया में आम रास्ते में सीसी रोड नहीं होने से गांव के आम रास्ते में बरसात का पानी जमा हो गया है जिससे ग्रामीणों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण रामकिशोर मीणा, हरसहाय मीणा, मोती मीणा, लक्ष्मण मीणा, मुकेश मीणा, हनुमान मीणा, नंदा मीणा, मूलचंद मीणा व कृष्णा मीणा सहित कई ग्रामीणों ने बताया कि आम रास्ते में बरसात का पानी भर जाने से राहगीरों सहित ग्रामीणों को आने जाने के लिए कीचड़ में से होकर गुजरना पड़ रहा है उन्होंने बताया कि कई बार इस रास्ते में महिलाएं पानी भरने के दौरान कीचड़ में फिसल कर गिर जाती है जिससे महिलाएं घायल हो जाती है। ग्रामीणों ने पंचायत प्रशासन को इस रास्ते के बारे में अवगत करवा दिया मगर इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं जिससे ग्रामीणों में भारी रोष व्याप्त है। इसी प्रकार गांव जगतपुरा में भारी बरसात होने से तालाब में पानी भरकर रास्ते में पानी भर गया है। इस दौरान तालाब का पानी गांव में मकानों तक आ चुका है जिससे पूरे गांव का रास्ता अवरुद्ध हो गया है। ग्रामीण राफूल गुर्जर सहित कई ग्रामीणों ने बताया कि इसी प्रकार और बरसात होती है तो सभी घरों में पानी भर जाएगा इसकी सूचना पटवारी व ग्राम पंचायत सचिव जोधपुरिया को दे दी गई है।

### बंद रास्ते को खुलवाया

**शाहपुरा ।** जयपुर जिला क्लेक्टर डॉ. जितेंद्र कुमार सोनी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में आने-जाने में आ रही परेशानियों को दूर करने के लिए अनूठे "रास्ता खोलो अभियान" चलाया जा रहा है जिसके तहत गाँवो ,खेतों और ढाणियों की ओर जाने वाले अतिक्रमित रास्तों से अतिक्रमण हटाया जा रहा है।इसी अभियान के तहत खोरी गाँव में अलिभूत चौराहे से पिंथावाली ढाणी की ओर जा रहे रास्ते पर 400 मीटर तक अतिक्रमण हटाकर रास्ता खोला गया। इस मौके पर तहसीलदार नीलमराज बासनीवाल, गिरदावर चंद्रकांता जाट, खोरी पटवारी हेमराज गुर्जर, पटवारी दर्शन यादव, भीवाराम समेत पुलिस जाप्ता मौजूद रहा। इस मौके पर तहसीलदार नीलमराज बासनीवाल ने बताया कि जिला क्लेक्टर डॉ.जितेंद्र कुमार सोनी के निर्देशन पर मुख्यमंत्री ऑफिस से मिली शिकायत के बाद जिला क्लेक्टर द्वारा जारी किये गये आदेश पर खोरी गाँव के अलिभूत चौराहे से पिंथावाली ढाणी की ओर जाने वाले आम रास्ते पर अतिक्रमण हटा रास्ते को सुचारू सोमवार को पुलिस जाप्ता के साथ जाकर रास्ता खोला गया। एसडीएम संजीव खैदर लगातार रास्ता खोलो अभियान मे अधिक से अधिक रास्ते खोलकर लोगों को राहत प्रदान की जा रही है। रास्ता खोलने के लिए जयपुर ग्रामीण जिला पुलिस अधिक्षक के निर्देश पर डीवाईएसपी ने शाहपुरा थाना सब इंस्पेक्टर देशराज, जयराम मीणा समेत आरएसी के लगभग 30 पुलिसकर्मियों का जाप्ता तैनात कर अतिक्रमण हटाकर रास्ता खोला गया।

### सीसी रोड नहीं बनने से लोग परेशान

**सिरस।** सिरस नाका चौकी ढाणी तक जाने वाले आम रास्ते पर सीसी रोड नहीं बनने से बरसात के मौसम में पानी भर जाता है। जिससे रास्ता अवरुद्ध होने से वाहन चालको, राहगीरों व ग्रामीणों को आवाजाही में समस्या का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण हरिनारायण, बनवारी, मनोजकुमार जैन, अशोक जाट, सत्तार मोहम्मद व देवेंद्र चौधरी सहित कई ग्रामीणों ने बताया की सिरस से नाका चौकी तक जाने वाले रास्ते में जगह-जगह पानी भरने से आवाजाही में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। उक्त रास्ते पर सीसी रोड बनवाने के लिए कई बार ग्राम पंचायत प्रशासन से मांग करने के बाद भी कोई ध्यान नहीं देने से लोगों में नाराजगी है। नाका चौकी ढाणी में सिरस विद्यालय में अध्ययन विद्यार्थियों को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने ग्राम पंचायत प्रशासन से रास्ते पर सीसी रोड बनवाने की मांग की है।

### पखवाडा 24 जून से 09 जुलाई तक

**पावटा।** मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की संवेदनशील पहल के तहत समाज की अंतिम पंक्ति में बैठे व्यक्ति को सरकार की योजनाओं का लाभ प्रदान कर उसका जीवन स्तर उंचा उठाने की मंशा से प्रदेश भर में 24 जून से 09 जुलाई तक पं. दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़ा मनाया जायेगा। इसके तहत हर ग्राम पंचायत मुख्यालय पर शिविर आयोजित होंगे। इनमें राजस्व, बिजली, पानी सहित सभी विभागों की विभिन्न सेवायें मौके पर ही प्रदान की जायेगी। जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल के निर्देशन में टीम कोटपूतली-बहरोड़ अभियान को सफल बनाने के लिये तैयारियां कर रही हैं। जिसे लेकर पावटा पंचायत समिति की ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित होंगे।

# 75 लाख रु. की लूट के मामले में मुंबई और भरतपुर के चार बदमाश गिरफ्तार

**जयपुर** (कासं)। एसएमएस थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 75 लाख रुपए के जेवरात लूट की वारदात करने वाले मुंबई और भरतपुर की गैंग के चार बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया हैं। साथ ही पुलिस ने बदमाशों के पास से लूटे गए जेवरातों में से एक रत्नों की माला बरामद की। इसके अलावा बदमाशों के पास वारदात में प्रयुक्त एक हथियार,दो बाइक और चौपहिया वाहन जब्त किया है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्विनी गौतम ने बताया कि एसएमएस थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए जून को हुई 75 लाख रुपए के जेवरात लूट की वारदात करने वाले अरविंद ऊर्फ नेता (27) निवासी सेवर जिला भरतपुर, राहुल चौधरी (22)निवासी कोतवाली जिला भरतपुर,धर्मवीर सिंह उर्फ राहुल उर्फ भुरा (24) निवासी सेवर जिला भरतपुर हाल बस्सी जयपुर और अनिकेत उर्फ लाला निवासी निहालगंज जिला धौलपुर हाल मुंबई (महाराष्ट्र) को गिरफ्तार किया गया है। वहीं वारदात में शामिल अन्य बदमाश संतोष चौहान व विशाल उर्फ बिस्सु की गिरफ्तारी और लूटे के माल की बरामदगी के लिए पुलिस टीमें दबिश दे रही हैं। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपियों यह सूचना थी कि रत्नासागर बिल्डिंग जौहरी बाजार जयपुर में हवाला का

**एसएमएस थाना पुलिस ने 75 लाख रुपए के जेवरात लूट की वारदात करने वाले मुंबई और भरतपुर की गैंग के चार बदमाशों को सोमवार को गिरफ्तार कर लिया।**

बड़े स्तर पर काम होता है। इसलिये उन्होंने उक्त बिल्डिंग की घटना से पहले लगातार तीन से चार दिन तक रेकी की। जिसमे उन्होंने पाया कि बिल्डिंग में बहुत से लोग खाली बैग लेकर आते है तथा भरा हुआ बैग लेकर वापिस जाते है। क्योंकि इस बिल्डिंग में जौहरियों के लिए लॉकर की सुविधा उपलब्ध है। इसलिये उन्होंने डकैती की योजना बनाई कि जैसे ही कोई व्यापारी खाली बैग लायेगा तथा फिर भरा हुआ बैग वापस ले जाएगा तो वह लोग बाइक से उसका पीछा कर मौका मिलते ही ग्लास हैमर से अथवा मिर्ची पाउडर स्प्रे की सहायता से वारदात को अंजाम देंगे।

थानाधिकारी बलवीर सिंह कस्बां ने बताया कि चार जून को पीडि़त बृजमोहन गांधी निवासी साकेत कॉलोनी ने थाने में मामला दर्ज करवाया कि वह जवाहरात का व्यवसायी है और तीन जून को शाम को अपने ऑफिर से दो पन्ने की अंगूठी जिनका वजन करीब 4 ग्राम है एक हीरे की अंगूठी जिसका वजन 12 ग्राम है। पन्ने की 2 माला जिसका वजन करीब 700 ईटी है। 9 रुबी की मणियों के पैकेट जिसका

- **आरोपियों के कब्जे से लूटे गए जेवरातों में से रत्नों की एक माला, हथियार, दो बाइक और चौपहिया वाहन जब्त किया**

वजन 1 हजार 500 सीटी है। 40 हजार की नगदी और 2 चाबी के गुच्छे साथ में लेकर निकला। जहां वह अपनी कार से पृथ्वीराज रोड की रेड लाइट रामसिंह रोड पर खड़ा था। इसी दौरान बाइक पर दो युवक आये कार का शीशा तोड़ा और बैग लेकर निकल गए।

पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज निकाले। जिस में वारदात करने वाले बदमाशों की बाइक पर काम करते हुए पुलिस टीम बस्सी में एक मकान तक पहुंची। जहां पुलिस टीम ने छापेमारी की। इस दौरान पुलिस को मौके से धर्मवीर उर्फ राहुल जाट निवासी सेवर भरतपुर को डिटेन किया गया । जिस ने पूछताछ के में बताया कि उसका साथी मुंबई निवासी संतोष सिंह चौहान पुत्र गोपाल सिंह, विशाल उर्फ बिस्सु पुत्र ओमप्रकाश, अनिकेत उर्फ लाला तथा राहुल चौधरी पुत्र नेत्रपाल व अरविन्द उर्फ नेता पुत्र दिनेश जाटव निवासीगण आनंद नगर भरतपुर के साथ मिलकर डकैती की योजना बनाकर इस वारदात को अंजाम दिया था। वारदात के दिन बदमाशों ने रत्नासागर बिल्डिंग से बाइक से पीछा करते हुए पृथ्वीराज टी पॉइंट पर लाल बत्ती हो जाने पर उसकी बलेनो कार का ग्लास हैमर से तोड़ा। संतोष ने शीशा तोडकर जवैलरी का बैग छीना लिया था। पुलिस ने धर्मवीर उर्फ राहुल की सूचना अनुसार अनिकेत उर्फ लाला को मुम्बई महाराष्ट्र से, राहुल चौधरी व अरविन्द जाटव उर्फ नेता को भरतपुर शहर के पास से जयपुर आगरा रोड से गिरफ्तार किया।

पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी फ्लिपकार्ट पर ऑर्डर कर शीश तोडने का यंत्र ग्लास हैमर और मिर्च पाउडर डालने के लिए सेफ्टी स्प्रेयर मंगवा कर उनकी सहायता से वाहन चालक की अनुपस्थिति और उपस्थिति में वाहनों का शीशा तोड़कर उनके रखे सामान चोरी/लूट कर लेते है। घिर जाने पर बचाव के लिए हथियार भी रखते है। अधिकांशत वारदात दुपहिया वाहन पर सवार होकर ही करते है। वारदात स्थल से सात-आठ किलोमीटर दूर जाकर दुपहिया वाहन दूसरे को देते है और स्वयं ऑटो, कैब, बस सा ट्रेन से दूसरी जगह चले जाते है। वहीं दुपहिया वाहन उपलब्ध कराने वाले को भी चोरी या लूट के माला का एक बटा चार हिस्सा देते है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

# बीमार मादा तेंदुए के गले में पट्टा बांधकर ग्रामीणों ने घुमाया

## बूंदी के रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व के पास का मामला

**जयपुर/बूंदी।** बूंदी जिले के रामपुरिया गांव और रामगढ़ टाइगर रिजर्व के पास इंसानियत को शर्मसार करने वाली घटना सामने आयी है। जहां एक बीमार और असहाय 2 वर्षीय मादा तेंदुए के साथ ग्रामीणों ने अमानवीय व्यवहार किया।

भारी बारिश के बाद बबूल के पेड़ के पास सहमी और भीगी हालत में बैठी मादा तेंदुआ एकदम नि:सहाय अवस्था में थी। उसकी हालत बेहद खराब थी, वह हिलने-डुलने में में भी असमर्थ थी। इसके बावजूद, आसपास के ग्रामीणों ने न तो वन विभाग को सूचित किया, न ही तेंदुए की मदद की। इसके विपरीत, ग्रामीणों ने तेंदुए के गले में पट्टा बांध दिया और उसे घेरे में लेकर फोटो खींचने और वीडियो बनाने लगे। कुछ लोग मोबाइल लेकर उसके पास खड़े होकर सेल्फी लेते रहे, तो कुछ उसके बगल में बैठकर तस्वीरें खिंचवाते दिखे। यह सब उस समय हुआ, जब तेंदुआ पूरी तरह से निष्क्रिय और बीमार था। इस घटना ने इंसानियत को शर्मसार कर दिया है। वन्यजीवों के प्रति इस तरह का व्यवहार न केवल अवैध है, बल्कि संवेदनहीनता की पराकाष्ठा भी दर्शाता है। हालांकि जब इसकी सूचना वन विभाग की टीम तक पहुंची तो अधिकारी मौके पर पहुंचे और बीमार तेंदुए का रेस्क्यू किया। अब उसका उपचार किया जा रहा है।

- **वन विभाग को सूचित करने के बजाय ग्रामीण उसके साथ सेल्फी लेते रहे**
- **हालांकि बाद में वन्य टीम मौके पर पहुंची और लेपर्ड का रेस्क्यू किया**

# बैणेश्वर धाम व गोगामेड़ी के विकास को लेकर बैठक

**जयपुर** । देवस्थान विभाग के मंत्री जोराराम कुमावत ने सोमवार को शासन सचिवालय में विभाग की समीक्षा बैठक ली। इसमें बैणेश्वर धाम व गोगामेड़ी के विकास को लेकर राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री ओंकार सिंह लखावत, देवस्थान विभाग के शासन सचिव केके पाठक, देवस्थान विभाग के शासन उप सचिव आलोक सैनी, पर्यटन विभाग के संयुक्त सचिव मौजूद रहे। बैठक में गोगामेड़ी व बैणेश्वरधाम की डीपीआर को जल्द से जल्द तैयार करने के लिए निर्देशित किया गया। इसके अलावा देवस्थान विभाग के अधीन मंदिरों के जीर्णोद्धार संबंधी कार्यों को निर्धारित अवधि में पूरा कराने के लिए मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने निर्देश दिए। इसके अलावा वरिष्ठ नागरिक तीर्थयात्रा योजना-2025 के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू करने, देवस्थान विभाग के मंदिरों की भूमि से अतिक्रमण हटाने, प्रमुख मंदिरों में ऑनलाइन दर्शन शुरू करने, वृक्षारोपण व तीर्थयात्रा योजना में सिख धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थल - श्री पटना साहिब व नांदेड़ साहिब को भी शामिल करने, मंदिरों की कृषि योग्य भूमि को लीज पर देने संबंधी चर्चा की गई।

# डॉ. रवि की मौत पर रेजिडेंट डॉक्टर्स 2 घंटे की हड़ताल पर

**जयपुर** (कासं)। उदयपुर में रेजिडेंट डॉक्टर रवि शर्मा की करंट लगने से हुई दर्दनाक मौत का मामला अब प्रदेशभर के चिकित्सक संगठनों के लिए जनआंदोलन का रूप लेता जा रहा है। मौत को लापरवाही का नतीजा बताते हुए एसएमएस मेडिकल कॉलेज से जुड़े रेजिडेंट डॉक्टर्स ने सोमवार को सुबह 8 से 10 बजे तक पेन-डाउन हड़ताल कर अपना विरोध दर्ज कराया।

हड़ताल के दौरान डॉक्टर्स ने काली पट्टियां बांध रखी थीं और आपातकालीन सेवाओं को छोड़ बाकी कार्यों से हाथ खींच लिया। मरीजों की लंबी कतारें और परिजनों की बेचैनी इस विरोध की गर्मी को महसूस करवा रही थी।

जार्ड (जयपुर रेजिडेंट डॉक्टर्स एसोसिएशन) और अखिल राजस्थान सेवारत चिकित्सक संघ ने सरकार और प्रशासन पर सीधा आरोप लगाया कि रवि शर्मा की मौत बुनियादी सुरक्षा इंतज़ामों की कमी और प्रशासनिक लापरवाही का नतीजा है। जार्ड के पदाधिकारी ने कहा है कि सरकार यदि अब भी नहीं जागी, तो यह दो घंटे की हड़ताल अनिश्चितकालीन बन सकती है। इससे पूरे प्रदेश की चिकित्सा व्यवस्था ठप हो सकती है। रेजिडेंट डॉक्टर्स ने साफ कहा है कि यदि दोषियों पर सख्त कार्रवाई और चिकित्सकों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की गई तो आने वाले दिनों में ओपीडी से लेकर सर्जरी तक ठप्प हो सकती हैं। अस्पताल में इलाज के लिए पहुंचे मरीजों को लंबे इंतजार और भ्रम का सामना करना पड़ा। हालांकि आपातकालीन सेवाएं चालू रहीं, लेकिन आमजन की परेशानी आंदोलन की गंभीरता को साफ दर्शा रही थी।

- **सेवारत चिकित्सकों ने काली पट्टी बांध कर जताया विरोध**
- **उदयपुर में रेजिडेंट डॉक्टर रवि शर्मा की करंट से मौत मामला**
- **डॉक्टर्स के विरोध-प्रदर्शन और हड़ताल के कारण मरीजों की मुश्किलें बढ़ी, पर आंदोलन जारी रहेगा**

# 'दिव्यांग शिक्षिका की सेवा बहाली के बजाय टरका रहा शिक्षा विभाग'

**जयपुर** (कासं)। "दीया तले अंधेरा" वाली कहावत एक दिव्यांग शिक्षिका के मामले में जिला शिक्षा अधिकारी ( मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा, जयपुर पर लागू हो रही है। शिक्षा विभाग जिसका आदर्श ही समाज में प्रकाश है। इस विभाग में जिला शिक्षा अधिकारी के उक्त पद पर आसीन अधिकारी एक दिव्यांग शिक्षिका को न्याय दिलाने के संवेदनशील मामले में न्यायालय के आदेशों की लगातार अवहेलना कर रहे है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक जयपुर के एक नामचीन निजी स्कूल में 26 साल तक बतौर शिक्षिका कार्यरत एक दिव्यांग महिला को स्कूल प्रबंधन ने 14 महीने पहले दुर्व्यवहार और प्रताड़ित करके अनुचित रूप से सेवा से पृथक कर दिया। दिव्यांग शिक्षिका ने मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री सभी स्तर पर गुहार लगाने के साथ राज्य आयुक्त एवं न्यायालय विशेष योग्यजन की शरण ली।

विशेष योग्यजन न्यायालय ने दिव्यांग शिक्षिका की पुन: सेवा बहाली के आदेश देते हुए जिला शिक्षा अधिकारी ( मुख्यालय) माध्यमिक शिक्षा, जयपुर को निर्देशित किया कि वह स्कूल प्रबंधन से इसकी अनुपालना कराये। परंतु जिला शिक्षा अधिकारी लगातार इस आदेश की अवहेलना कर रहे हैं। दिव्यांग शिक्षिका और उसका परिवार, शिक्षा विभाग की निष्ठुरता और विशेष योग्य जन के अधिकारों के लिए बने कानूनों की अनुपालना में खामियाँ देखकर स्तब्ध है। दिव्यांग शिक्षिका के पिता का पिछले दिनों गंभीर बीमारी के कारण निधन हो चुका है। वे अपनी दिव्यांग पुत्री के साथ हो रहे अन्याय के कारण भी भावनात्मक रूप से टूट गये। अब दिव्यांग शिक्षिका, उसकी माँ और बहन भी भावनात्मक रूप से प्रताड़ित हो रहे हैं। वे राजस्थान विधानसभा में भी प्रश्न के जरिए यह मुद्दा उठवा चुके हैं। विडंबना यह है कि माध्यमिक शिक्षा निदेशक, बीकानेर के कार्यालय द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी,माध्यमिक शिक्षा, जयपुर को इस संबंध में आगाह करने और इसे संवेदनशीलता से लेने के लिए पत्र लिखने के बावजूद जयपुर के शिक्षा संकुल में बैठे अधिकारी के कानों पर जूं नहीं रेंग रही है। राजधानी जयपुर में जब एक दिव्यांग शिक्षिका और उसके परिवार को जब इस कदर प्रताड़ित होना पड रहा है तो राजस्थान के अन्य जिलों में हजारों दिव्यांगों को कैसे इंसाफ मिलता होगा। यह एक यक्ष प्रश्न है।

# महापौर डॉ.सौम्या गुर्जर ने बाढ़ नियंत्रण केन्द्रों का निरीक्षण किया

**जयपुर** । नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने सोमवार को बाढ़ नियंत्रण केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। महापौर खिरणी फाटक फ्लाईओवर के नीचे वार्ड पार्षद कार्यालय 39 बाढ़ नियंत्रण केन्द्र पर पहुंची और आपदा राहत संबंधी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। महापौर ने आम नागरिक सीमा बनकर बाढ़ नियंत्रण केन्द्र के हेल्पलाइन नंबर पर फोन किया तथा अपनी समस्या को बताया। जिसके लिये संबंधित कार्मिक द्वारा समस्या को नोट कर उसके निस्तारण के निर्देश दिये। महापौर ने कहा कि सभी बाढ़ नियत्रंण केन्द्रों के हेल्पलाईन नंबर चालू हालत में होने चाहिए तथा आमजन को तुरन्त प्रभाव से रेस्पॉस मिलना चाहिए। सभी आवश्यक संसाधनों मडपंप, मिट्टी के कट्टे आदि की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। गौरतलब है कि नगर निगम ग्रेटर द्वारा 15 जून से 4 बाढ़ नियत्रंण कक्ष बनाये गये है। जिसमें मानसरोवर बाढ़ नियत्रंण केन्द्र, मालवीय नगर बाढ़ नियंत्रण केन्द्र, विश्वकर्मा बाढ़ नियंत्रण केन्द्र, खिरणी फाटक फ्लाईओवर के नीचे वार्ड पार्षद कार्यालय 39 पर वार्ड नियंत्रण केन्द्र बनाये गये है।

# हैरिटेज निगम में अरुण हसीजा को विदाई दी, निधि पटेल का स्वागत

## ग्रेटर निगम में नवनियुक्त आयुक्त डॉ. गौरव सैनी ने कार्यभार संभाला

**जयपुर** । नगर निगम हैरिटेज जयपुर के आयुक्त रहे आईएएस अरुण कुमार हसीजा को सोमवार को निगम मुख्यालय में अधिकारियों की ओर से भावभीनी विदाई दी गई। वहीं, हैरिटेज निगम की नव नियुक्त आयुक्त डॉ. निधि पटेल का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर महापौर कुसुम यादव ने अरुण हसीजा के कार्यकाल के बारे में बताते हुए कहा कि हेरिटेज निगम के आयुक्त के रूप में अरुण हसीजा ने सदैव हेरिटेज निगम क्षेत्र में जो विकास कार्य कराए, उनके लिए पूरा निगम परिवार सदैव आभारी रहेगा। अरुण हसीजा ने सदैव पूरी टीम के साथ एक नई ऊर्जा के साथ काम किया।

इस दौरान हैरिटेज निगम के अतिरिक्त आयुक्त सुरेंद्र सिंह यादव और अन्य निगम अधिकारियों ने अरुण हसीजा का साफा बांध कर सम्मान किया और स्मृति चिन्ह भेंट किया। इस अवसर पर आईएएस अरुण हसीजा ने अपने कार्यकाल के अनुभव को बांटते हुए कहा कि वे भविष्य में भी निगम के विकास कार्य में किसी भी सहयोग के लिए सदैव तैयार रहेंगे। वहीं निगम अधिकारियों के द्वारा नव नियुक्त आयुक्त डॉ. निधि पटेल का भी स्वागत किया गया। हैरिटेज निगम आयुक्त डॉ. निधि पटेल ने कहा कि वे हैरिटेज निगम के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगी। इस अवसर पर हेरिटेज निगम चेयरमैन मनोज मुद्गल, पवन शर्मा नटराज, रजत विश्नोई,महेंद्र पहाड़िया, अतिरिक्त आयुक्त सुरेंद्र सिंह यादव, उपायुक्त सतर्कता पुष्पेंद्र सिंह राठौड़, उपायुक्त मोनिका सोनी, निधि सिंह, युगांतर शर्मा, देवानंद शर्मा सहित अन्य निगम अधिकारी मौजूद रहे। वहीं दूसरी ओर ग्रेटर निगम के नवनियुक्त आयुक्त डॉ. गौरव सैनी ने भी कार्यभार संभाला।

**हैरिटेज महापौर कुसुम यादव और अन्य अधिकारियों ने निवर्तमान आयुक्त अरुण हसीजा को भावभीनी विदाई दी और नवनियुक्त आयुक्त निधि पटेल का स्वागत किया।**

# लंदन से लौटा वेद, ज्योतिष और वास्तु विद्वानों का दल

**जयपुर** । राजस्थान ज्योतिष परिषद एवं शोध संस्थान के तत्वावधान में प्रो. विनोद शास्त्री के नेतृत्व में विद्वानों का एक दल हाल ही में लंदन से 10 दिवसीय सफल प्रवास के उपरांत जयपुर लौटा।

इस दल ने लंदन एवं इंग्लैंड की विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं-यूके इंटीरियर आर्किटेक्चर लैंडस्केप, इस्कॉन टेंपल व्हाटफोर्ड, राजस्थानी समाज, गुजराती समाज आदि-द्वारा आयोजित वेद, ज्योतिष एवं वास्तु शास्त्र पर आधारित कार्यशालाओं एवं शिविरों में भाग लिया। जयपुर आगमन पर विद्वान दल का विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया। पंच दिवसीय मुख्य कार्यशालाओं में प्रो. विनोद शास्त्री एवं आचार्य डॉ. महेन्द्र मिश्रा ने वास्तु शास्त्र की वर्तमान समय में प्रासंगिकता और वैज्ञानिक उपयोगिता पर विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने नगर नियोजन, भवन रचना एवं जीवनशैली में वास्तु सिद्धांतों के समावेश द्वारा जीवन में समृद्धि, शांति और संतुलन की प्राप्ति के उपायों पर गहन प्रकाश डाला। कार्यशालाओं में श्रीराम चतुर्वेदी एवं देवेंद्र चतुर्वेदी ने ऋग्वेद एवं यजुर्वेद की वैदिक ऋचाओं के माध्यम से मंत्र विज्ञान की मनोवैज्ञानिक एवं प्रयोगात्मक प्रभावशीलता को सजीव प्रस्तुत किया। पं. हेरंब स्वरूप शर्मा एवं लोकेश दाधीच ने तंत्र शास्त्र और यंत्र विज्ञान पर व्यावहारिक सत्रों से आधुनिक जीवन में इनकी उपयोगिता बतायी।

# मुख्यमंत्री ने की जनसुनवाई

**जयपुर** । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार 'जनसेवा ही संकल्प' के सिद्धांत पर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री द्वारा नियमित रूप से की जा रही जनसुनवाई में जनता और सरकार के मध्य सीधा संवाद स्थापित हो रहा है।

जनसुनवाई में परिवादी मुख्यमंत्री के समक्ष अपनी पीड़ता रखते हैं तथा मुख्यमंत्री भी प्रत्येक परिवादी को आत्मीयता से सुनकर मौके पर ही उनकी समस्याओं का समाधान कर रहे है। मुख्यमंत्री ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर हुई जनसुनवाई में आमजन की परिवेदनाओं को व्यक्तिश: विस्तार से सुना तथा अधिकारियों को उनके त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी परिवादियों की समस्याओं का समयबद्ध निस्तारण करें, जिससे आमजन को शीघ्र राहत मिल सके। शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा पात्र व्यक्तियों को योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए 24 जून से प्रदेशभर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा मनाया जाएगा।

## सार-समाचार

### 23 वर्षों से ऊंट स्वास्थ्य का मनाया जश्न

**जयपुर** । हेल्प इन सफरिंग (एचआईएस) द्वारा 22 जून (रविवार) को विश्व ऊंट दिवस के अवसर पर बस्सी स्थित ऊंट बचाव केंद्र में एक विशेष उत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से एचआईएस द्वारा पिछले दो दशकों से किए जा रहे ऊंट कल्याण कार्यों को दर्शाया गया। साथ ही, भारत में तेजी से घटती ऊंटों की संख्या जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर भी प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में ऊंट मालिकों ने हिस्सा लिया। इस दौरान विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की गई, जिसमें पारंपरिक कठपुतली शो आयोजित हुआ, इसमें ऊंट स्वास्थ्य और देखभाल संबंधी संदेशों को मनोरंजक रूप में प्रस्तुत किया गया। ऊंट मालिकों को स्थानीय भाषा में शैक्षिक सामग्री वितरित की गई, जिससे उन्हें ऊंटों की देखभाल के बारे में व्यावहारिक जानकारी मिल सके। वहीं, ऊंटों की अच्छी देखभाल करने वाले मालिकों को पुरस्कार देकर उनके प्रयासों को सराहा गया। इसके साथ ही, सभी के लिए सामुदायिक भोजन की व्यवस्था रही, जिसने उन्हें आपस में संवाद करने का अवसर प्रदान हो। वर्ष 2001 से, एचआईएस ने मोबाइल क्लिनिक और उपचार शिविरों के माध्यम से 80,000 से अधिक ऊंटों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान की है। जयपुर से लेकर दूरदराज के गांवों और पुष्कर ऊंट मेले तक यह संगठन राजस्थान भर में सालाना 5,000-7,000 ऊंटों का इलाज करता आ रहा है। ज्ञात रहे कि हेल्प इन सफरिंग बीते दो दशकों से ऊंटों के समग्र कल्याण के लिए प्रतिबद्ध रूप से कार्य कर रहा है।

### महापौर की वैवाहिक वर्षगांठ पर दी बधाई

**जयपुर**। नगर निगम हेरिटेज जयपुर महापौर कुसुम यादव ने सोमवार को 26 वीं वैवाहिक वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर शहर में विभिन्न जगहों पर केक काटकर महापौर कुसुम यादव और पूर्व चेयरमैन अजय यादव को बधाई दी गई। वहीं, महापौर कुसुम यादव की वैवाहिक वर्षगांठ पर सुबह से ही उनके घर पर बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। महापौर कुसुम यादव ने भी देव दर्शन कर ईश्वर का आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर कई जनप्रतिनिधि, निगम अधिकारी समाचार पत्र वितरक महासंघ के हनुमान सैनी टीकम यादव सावंत सिंह सिंह राजेश यादव संजय यादव अनिल यादव कैलाश मीणा गोविंद गुर्जर सत्यनारायण शर्मा प्रभात शर्मा उमेश शर्मा राकेश शर्मा अक्षय यादव विक्रम गुर्जर गिरजा शंकर शर्मा विजेंद्र शर्मा मुकेश नायक भरत सिंह सुमित साहू सहित संकडो की संख्या में स्थानीय लोग उपस्थित रहे ।

### सराफ ने किया टीनशेड का लोकार्पण

**जयपुर** । मालवीय नगर विधायक कालीचरण सराफ ने वार्ड 142 में स्थित हनुमान मंदिर के पास आमजन के बैठने के लिए विधायक कोष से टीन शेड लगवाया, जिसका आज भव्य लोकार्पण किया गया।सत्यनारायण कुमावत ने बताया की हनुमान मंदिर काफी पुराना है मंदिर के बाहर लोग गर्मी में बैठते हैं तो काफी परेशानी होती है सराफ के प्रयास से विधायक कोष के द्वारा टीन शेड लगवाया गया है। मंदिर में विधायक कोष से टीन शेड लगवाया गया, बैठने के लिए कुर्सी दी गई, पंखे लाइट लगवाई गई, सीसीटीवी कैमरे लगवाए गए, कूलर दिया गया। मंदिर महंत चलितर दास एवं स्थानीय लोगों ने सराफ का जोरदार स्वागत किया।

### रंगमंच कार्यशाला का समापन

**जयपुर**। बापू नगर में 25 मई से "रंग प्रीत थिएटर ग्रुप जयपुर" संस्था द्वारा एक माह की रंगमंच कार्यशाला चल रही थी, जिसका 22 जून( रविवार) को दो लघु नाटकों के मंचन के साथ समापन हुआ । इसमें प्रतिभागियों को थिएटर एक्सरसाइज एवं इम्प्रोवाजेशन तकनीक के माध्यम से नाटक निर्माण और रंगमंच पर उसके प्रदर्शन कौशल से रूबरू करवाया गया , जिससे कि प्रतिभागियों की बौद्धिक व कल्पना शक्ति का विकास हो तथा उनमें आत्मविश्वास के साथ मंच पर प्रदर्शन की क्षमता विकसित हो । कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियो ने अपने कल्पना से बनाये हुए किरदारो को जीना सीखा। स्क्रिप्टिंग से लेकर सेट डिज़ाइन तक, सभी स्टेज कार्य स्टूडेंट्स द्वारा किया गया। कार्यशाला के दौरान वर्कशॉप डायरेक्टर सिद्धार्थ कुमावत ने विद्यार्थियों को चरित्र निर्माण और एक्टिंग की बारीकियों के बारें में समझाया और उनको मंच कर कैसे प्रस्तुत किया जाये ये भी समझाया। इस कार्यशाला के निर्देशक के रूप में थिएटर , टीवी एवं फ़िल्म कलाकार श्री सिद्धार्थ कुमावत एवं सह-निर्देशक के रूप में रंगकर्मी एवं शिक्षक श्री प्रवीण चौधरी ने उत्तरदायित्व का निर्वहन किया ।

### मुख्यमंत्री ने श्रद्धासुमन अर्पित किए

**जयपुर** । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भारतीय जनसंघ के संस्थापक और राष्ट्रवाद के प्रतीक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जीजी के बलिदान दिवस पर सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने डॉ. मुखर्जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। शर्मा ने कहा कि प्रखर राष्ट्रवादी डॉ. मुखर्जी एक असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। वे केवल विचारक ही नहीं, बल्कि कर्मयोद्धा भी थे, जिन्होंने भारत की एकता, अखंडता तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित किया। उन्होंने कहा कि डॉ. मुखर्जी ने जनसंघ के माध्यम से एक ऐसा मंच बनाया, जो सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय मूल्यों पर आधारित था। डॉ. मुखर्जी का सपना एक ऐसे भारत का निर्माण करना था, जो सांस्कृतिक रूप से एकजुट और सामाजिक रूप से समरस हो।

ARBiT
it happens here...

राष्ट्रदूत
TUESDAY
24 June 2025
A-B

### Creating Something New

Upcycling is a growing trend that's still under the radar for some. Simply, it's all about taking old objects and furniture, and adding your own creativity and craft to make it something new, unique and beautiful. National Upcycling Day is all about celebrating this amazing art of making something old into something new again! However, with that art also comes the focus on sustainable use of household goods, recycling items instead of being wasteful, and the many different ways we can reuse things that we might think are completely useless at first glance.

#LINGO

# The New 'Mumbo Jumbo'

Here is a guide to the youth on the WhatsApp Labyrinth, General Terms and Phrases!

Next time your children say something crypto, pause before you ask to be explained the mumbo jumbo. By the way, this phrase was also 'mumbo jumbo' to our parents. Here is a guide to the youth on the WhatsApp Labyrinth, General Terms and Phrases!

- **IYKYK:** 'If You Know, You Know.' Used to indicate insider knowledge or a shared experience.
- **SUS:** 'Suspicious' or 'sketchy.'
- **FOMO:** 'Fear Of Missing Out.'
- **GOAT:** 'Greatest Of All Time.'
- **BOP:** A great song.
- **Bet:** A term used to show agreement.
- **Cringe:** Describes something embarrassing or awkward.
- **Fire:** Describes something amazing or excellent.
- **Flex:** To show off or brag.
- **Glow up:** A positive physical or mental transformation.
- **Lit:** Something that is exciting or amazing.
- **No cap:** 'No lie,' or used to emphasize that something is true.

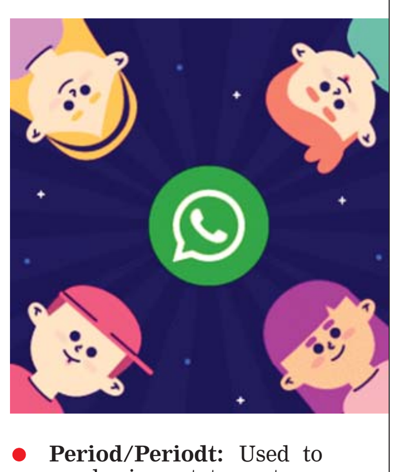

- **Period/Periodt:** Used to emphasize a statement.
- **Rizz:** Charm or ability to flirt.
- **Slay:** To do something exceptionally well, often in reference to style or appearance.
- **Sus:** Short for 'suspicious.'
- **Vibing:** Feeling a good connection or mood.
- **W/L:** 'Win/Loss.'
- **Simp:** Someone who does too much for someone they like.
- **Drip:** Stylish clothing or accessories.
- **Cheugy:** An outdated or uncool trend.
- **Fam:** Short for family, used to refer to close friends.

### Abbreviations and Acronyms

- **IMO/IMHO:** 'In My Opinion/ In My Humble Opinion.'
- **IRL:** 'In Real Life.'
- **JK:** 'Just Kidding.'
- **BAE:** 'Before Anyone Else.'
- **SSDD:** 'Same Stuff, Different Day.'
- **WYWH:** 'Wish You Were Here.'
- **TNTL:** 'Trying Not To Laugh.'
- **G2G:** 'Got to Go.'
- **YNK:** 'You Never Know.'
- **SMH:** 'Shaking My Head.'
- **TMI:** 'Too Much Information.'
- **ICYMI:** 'In Case You Missed It.'
- **POV:** 'Point of View.'
- **QOTD:** 'Quote Of The Day.'
- **ROFL:** 'Rolling On The Floor Laughing.'
- **TBH:** 'To Be Honest.'
- **TBT:** 'Throwback Thursday.'
- **TIL:** 'Today I Learned.'
- **TL;DR:** 'Too Long; Didn't Read.'
- **TTYL:** 'Talk To You Later.'
- **TY:** 'Thank You.'
- **YW:** 'You're Welcome.'
- **FR:** 'For Real.'
- **NGL:** 'Not Gonna Lie.'
- **KMS:** 'Kill Myself.'
- **KYS:** 'Kill Yourself.'
- **Krunk:** Extremely intoxicated.
- **OP:** Overpowered.

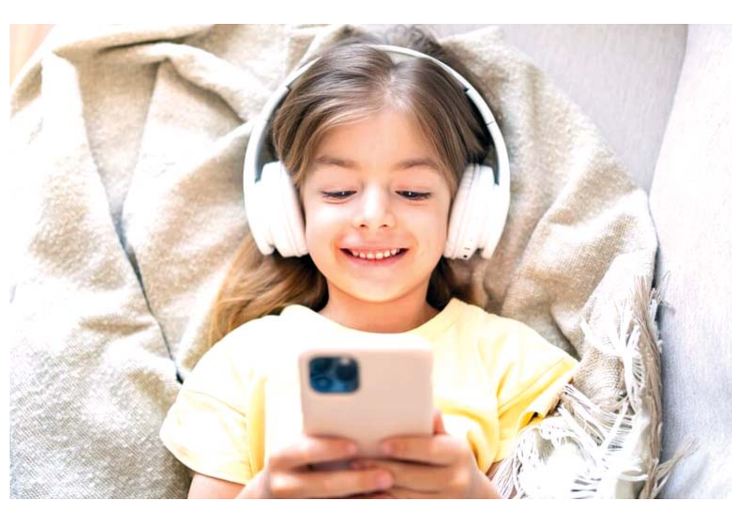

# The Amish Way

As they grow from infancy to childhood and youth, through maturity to old age, they know that others will look out for them, and they in turn look out for others. They are a part of a single organism, a single entity, the family, which gives them their identity, safety, and purpose. Each child is raised by the whole clan. Parents don't live in anxiety about their children and children don't feel neglected and abandoned, left to their own devices, or to devices they own. What a curse we have made of technology! This is another world from the cold, steel and glass apartment buildings full of people who don't even greet each other in the lift because they have no idea who the other person is. And they don't care.

Mirza Yawar Baig
*Naturalist and Wildlife Conservationist*

#FAMILY FARMS

"Fascinating to see that the big change in family income over the last 200 years wasn't the shift from male breadwinners to dual-income or female breadwinners. It was the dramatic decline of the 'clan-based' economic unit, such as family farms or family-owned stores."

The quote above from Twitter is interesting (to put it politely) because it glaringly shows how a change in values has changed societal demographics so significantly, and perhaps even permanently. When you move from a clan-based economic unit to a nuclear family and now to the single individual living on their own, it indicates a fundamental change in our value system, from the clan being responsible for the individual to the alienation of the individual from the collective. We have several nice names for this, since we have several nice names for every negative thing in modern society from the mildest to the most horrific. To use one, we call it 'individualism,' or freedom of the individual to live as they want without reference to anyone else. We conveniently ignore the fact that except for the person who chooses to live completely off-grid alone, unknown, uncelebrated and to die alone, unmourned, there is no such thing as living without reference to others. Except in exceptional cases, even the one who decides to live totally off-grid, is likely to have some family member or friend, worrying about him.

Whether we like it or not, we are herd animals and are responsible for the herd and the herd is responsible for us. This means that we have some duties of behaving in ways that don't hurt others and take care of other members of the collective who need it. Our desire to be independent doesn't absolve us of this responsibility or free us from the burden of the duties that entails. We benefit from society, and we are duty bound to return that favour. All individualism is constructive only within the boundary of benefit to the collective from which every individual has benefited before they discovered that they were individuals and decided that they didn't need anyone else in their lives.

The problem is that this mindset, I don't need anyone else, though it is false and unreal, produces an attitude of not caring for others. It deletes compassion and kindness from our lexicon and makes helping others a crime. That is how in the 70s in many European countries including the UK, farmers were paid not to grow crops and to leave their fields fallow year after year so that the price of grain was not destabilized because of over production. That went on for over three decades. That means that the wealthy who have the money to buy grain at high prices can make money playing the commodity market while those who need the grain for food, because they are starving, are left to starve.

Joint families and family-owned businesses are what keep society together and are sources of mutual care and concern. Likewise, family farms. There are a few around here, most prominently of the Amish people. If you visit one of them, they are open to visitors, or shop at their farm stores and look around, you can see and feel the difference. My wife and I visited one in Pennsylvania. They had a model house in which we were told about the Amish way of life and shown around what we were told was a typical Amish home. It is not in the scope of this article for me to talk about that but suffice to say that the word that came to mind was simplicity. Simplicity is possible. It is possible to live simply and gadget free, healthy and happy, even today in America. And of course, anywhere else in the world. After the house tour, we were free to wander around the farm and eventually to go to the farm store to see, sample and buy fresh non-pasteurized milk, free-range (no need to say that because there are no other kind) eggs, honey, cheese, butter, corn on the cob, fresh farm made ice cream (good enough to die for), and souvenirs. The farmhouse was across the street, without electricity or running water. But a very cleverly designed self-propelled ceiling fan. Once again, an example of how inventive and creative people can get if you take Amazon out of their lives. Convenience is truly not a worthwhile life goal. The price it extracts in loss of human enterprise, problem solving, the ability to concentrate, focus attention for a long time, and simply think, wonder, imagine is far too high for the ease of clicking a link to get what you need. Only someone who worked to make something useful knows the joy of using it, improving it and eventually handing it over to others. Buying the latest gadget doesn't even come close.

> All individualism is constructive only within the boundary of benefit to the collective from which every individual has benefited before they discovered that they were individuals and decided that they didn't need anyone else in their lives.

Women in long ankle length skirts and full-sleeved shirts with scarf covered heads bustled in and out of the farmhouse and other buildings, cheerfully completing different tasks. Men, young and older, in black waistcoats and straw hats went about their business with cattle and in the surrounding farmland. Walking behind plough horses, driving buggies or working in the carpentry, dairy, stables, and barns. There was a shepherd in a far field with his Border Collie herding sheep. Or rather, the dog was herding the sheep while the shepherd commanded it in magical language that only the two understood. Truly, it is magic in motion to see shepherds working with their dogs. I can watch that all day. Children were in the poultry enclosures, cleaning, feeding, watering, and some playing with the chickens, some Muscovy and Khaki Campbell ducks, geese, and turkeys who seemed to be friends, more than just poultry. These enclosures were large yards, fenced off to keep out foxes with a mixture of poultry and living harmoniously together. There were nesting houses to which the hens repaired when they felt the need to pay for their keep. The ducks simply did the deed on the edge of their large pond and little boys went around a few times a day with baskets and collected the eggs. Turkeys were too busy, looking either busy or just vacant while the Gobbler regularly gobbled to pretend to be in charge. The real Ruler of the Roost was the massive Asil Game rooster whose deafening crow at dawn announced to all concerned that the new day had begun. His blood red comb was his crown, his magnificent flowing tail, his train, his wickedly hooked beak and razor sharp spurs demanded and enforced obedience. Notwithstanding his self-important gobbling, the Gobbler knew very well who the Ruler was and kept well clear of him. The poultry enclosure was big enough for both. The farm bordered on a lake on which I could see a family of swans, with the Cob alert for any threats to his brood, mainly from Red-tailed hawks while the Pen swan shepherded her little clutch of newly hatched signets into patches of grass which promised the best feed. A scene of tranquil peace that left me wishing I lived there.

As I stood outside the store watching this beautiful scene, I noticed a young man, about 6 years old, with his own little business between the store and an adjacent barn. He was selling horseshoes. He had a little stand which was a beautifully made wooden mini wagon, filled with his ware, silver painted horseshoes. He sat on a three-legged stool, also clearly handmade without a single nail in it, held together by very clever joints and wooden pegs. I walked up to him and asked, "How much for a horseshoe Sir?" He replied, "Three dollars, Mister." I asked him, "Do you have one which is not painted?" "Yes, Sir. Give me a minute."

He sprang up and sprinted on bare feet (that is when I noticed that almost all the children were barefooted) for the farmhouse. And back, he came a few seconds later with a horseshoe that had come off the horse not too long ago. Very satisfactorily, it came with a bit of earth on it. I paid him and he said, "Thank you very much Sir."

I noticed then that there was another young man, this one not more than perhaps four, standing by looking on. I asked the Horseshoe Business Owner, "Who is that?" "My partner," he replied. "Is he your brother." "Yes. When I need to go somewhere, he takes care of our business." I stood there thinking that in a society which inspired the book, 'Anxious Generation' by Jonathan Haidt, and the Netflix film, 'Social Dilemma,' a time where terms like 'helicopter parenting' were invented to describe the paranoid behaviour of parents, it is possible to live close to the earth, free from imaginary anxieties, eat chemical-free clean food, and raise children who understand responsibility, caring, compassion, kindness and respect. Those who learn business at age 4 and 5 by doing it and not at age 20 by taking out loans to pay through their noses to be taught about doing business by professors who never did any business in their lives themselves. No wonder that they are shocked when they get out of Business School. Most cop out and settle to stand in the grub line with CV in hand, begging for employment. Forget business.

As they grow from infancy to childhood and youth, through maturity to old age, they know that others will look out for them, and they in turn look out for others. They are a part of a single organism, a single entity, the family, which gives them their identity, safety, and purpose. Each child is raised by the whole clan. Parents don't live in anxiety about their children and children don't feel neglected and abandoned, left to their own devices, or to devices they own. What a curse we have made of technology! This is another world from the cold, steel and glass apartment buildings full of people who don't even greet each other in the lift because they have no idea who the other person is. And they don't care.

This is in short, the triumph of the individual ego over social responsibility. Freedom at the expense of mutual care and concern. Institutions and structures were created to compensate for familial responsibilities, enter social security, old age care facilities, day care centers, hospices and so on. All functions which the family was supposed to and did provide until a generation ago. The problem is that these institutions can take care of only one aspect of the problem, the economic angle. A social security cheque can't talk to the recipient or hold their hand. The caregivers in an elderly care facility or hospice are not the inmates' children. We forget that societal needs are not only economic. People need other people because they have emotional, intellectual, and spiritual needs that can't be satisfied by machines and technology. I have seen enough old parents look up with hungry expectation every time the hospice or elderly facility door opens, to know that having the money to live comfortably is not the only need and may not even be the most important one. I say that after seeing elderly grandparents caring for infant and toddler grandchildren in joint families, who feel needed, loved and appreciated, which someone in an elderly care facility yearns for.

> Institutions and structures were created to compensate for familial responsibilities, enter social security, old age care facilities, day care centers, hospices and so on. All functions which the family was supposed to and did provide until a generation ago.

Who is the winner? Work out the ROI, the Cost : Benefit. It all comes down to how you define progress and what you are willing to pay to get it. About a year ago, I sat by the bed of an old Muslim man in the last hours of his life in the local Hospice, at 11:00 PM in winter. It was freezing cold outside with the temperature plummeting to 20 degrees below zero on the Celsius scale. The ground was covered in over a foot of snow and where it had been flattened by cars, it had frozen into black ice. Lethal for walkers and the ideal setup for hip fractures and worse. The man was sedated but could still recognize faces. I spoke to him and asked if he would like me to recite some Qur'an. He indicated with his eyes and a very slight nod of his head (he could only do that) that he would like that. And so, I did. He smiled.

But throughout the whole time, he kept looking over my shoulder towards the door, as if waiting for someone to come. I asked the nurse about this later as I was leaving and she said that he had a son who was in another part of the country but couldn't come because he was in a high-flying job there and couldn't take the time off. What is the value of a job where you can't come to be with your father when he is dying? Do we even pause to think of what we are giving up for the things we consider essential to our lifestyle? That is the real cost. Not the dollar value. We must realize that the truly valuable things in our life are priceless. You can't buy them, no matter how much money you have. That is why we must treasure them and jealously protect them and not sell them for some shiny trinket, because once lost, they can never be regained. I left the hospice past midnight. The next morning, I got a call from the hospice to say that he had passed, alone. The son came on the weekend for the funeral. I led that prayer.

We must talk about these things. I am not under any illusion that we can turn the clock back much as some of us may wish. But we need to talk about what can be done to slow down the race towards total breakdown of family and society. It is almost over here in the West. But in India and Africa, there is still a chance. If we want to give it that chance.

rajeshsharma1049@gmail.com

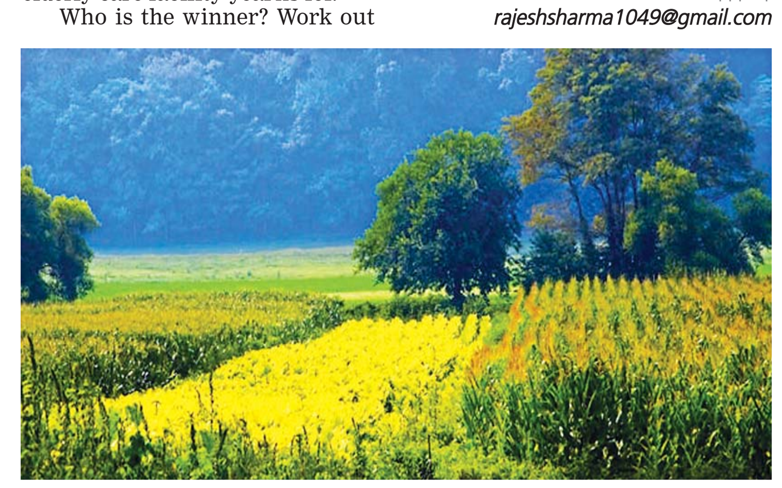

#THE MAID

# The Maid Who Witnessed the Secrets of Hitler

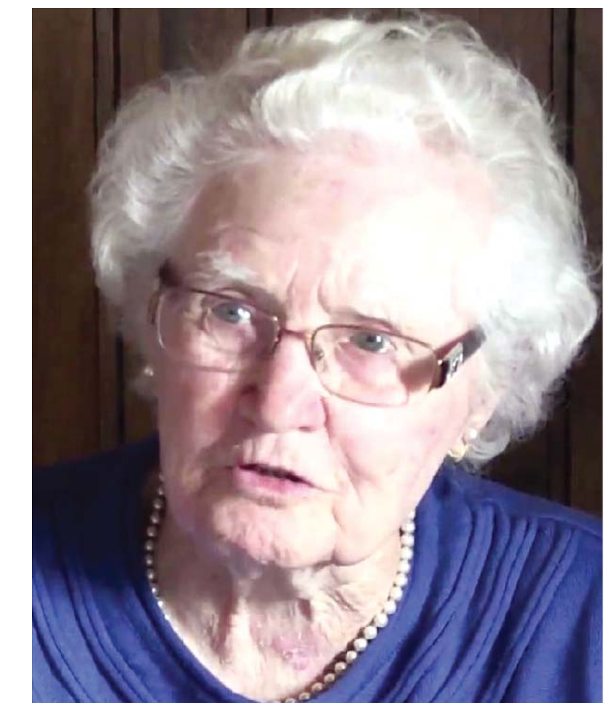

Elizabeth Kahlhammer thought she was taking a job as a maid, but she was stepping into the heart of one of history's darkest regimes.

When Elizabeth Kahlhammer was just nineteen, she responded to a job advertisement seeking domestic help. It seemed like a routine opportunity, wartime Austria was difficult, and work was scarce. But what she didn't know then was that the job would place her in the very heart of Nazi power, behind the walls of Adolf Hitler's mountain retreat, the Berghof. Now, over 80 years later, Elizabeth has finally broken her silence about what she saw and heard during her time inside one of the most secretive and sinister headquarters of the Third Reich. Her account, revealed in recent interviews and an upcoming memoir, is shaking historians and readers alike, offering a rare, first-hand glimpse into the private world of Nazi leadership.

Hitler and Eva.

### The Hidden Headquarters

Located in the Bavarian Alps near Berchtesgaden, the Berghof was officially described as Hitler's 'vacation home,' a place where the Führer could rest and escape from the public eye. But in truth, the Berghof was far more than a holiday residence.

It was here, amid the picturesque backdrop of alpine peaks and manicured gardens, that key Nazi officials regularly met to discuss and coordinate military strategy, political manipulation, and some of the most horrifying policies of the regime. Guests included Heinrich Himmler, Hermann Göring, Joseph Goebbels, and Eva Braun, all of whom became familiar faces to Elizabeth.

"I didn't understand what I was walking into," Elizabeth recalls. "It was just a job. But within weeks, I realized I was surrounded by some of the most powerful, and dangerous, men in the world."

### Life Inside the Berghof

Elizabeth's duties were those of any maid: cleaning, serving meals, handling laundry. But what made her position unique was her proximity to power. She wasn't just working in any household, she was working in Hitler's household. She saw how he lived, how he behaved behind closed doors, and how the Nazi elite operated when they believed no one was watching.

"Hitler was polite to the staff," she says, "but the atmosphere was always tense. People spoke in hushed tones. The conversations I overheard were chilling, even though I didn't always understand the implications at the time." She witnessed heated discussions about military campaigns, the planning of invasions, and the chilling bureaucracy behind the Final Solution. Most terrifying of all was the normalcy of it all, decisions of mass murder discussed over tea or an evening walk in the gardens.

### Decades of Silence

For decades, Elizabeth told no one. After the war, like many others who had come too close to the Nazi regime, she feared judgment, retribution, and the trauma of reopening old wounds. She built a quiet life far from the shadow of Berghof, carrying the weight of memory alone. "I was afraid," she admits. "Afraid of what people would think. Afraid that no one would believe me. And afraid of what I had been part of, even unwillingly." It was only in her late 90s, prompted by historians and a growing sense that the world needed to know the truth, that Elizabeth decided to come forward. Her testimony has now been compiled into a memoir set for publication later this year.

### A Rare First-Hand Account

Historians are calling Elizabeth's story one of the most important eyewitness accounts in recent memory. While many high-ranking Nazi officials left documents and records, very few personal staff members, especially those in close proximity to Hitler, survived or spoke out.

Dr. Claudia Meinhardt, a historian specializing in Nazi Germany, says, "Elizabeth's recollections help humanize a place we've only ever understood through official records and propaganda. They offer chilling insight into how normalized evil can become behind closed doors."

### The Importance of Memory

As the number of living witnesses to World War II dwindles, stories like Elizabeth's become more vital than ever. They serve as reminders of how easily power can be abused, and how history often happens quietly, in rooms that appear serene, staffed by people who never chose to be part of it. Elizabeth Kahlhammer's voice, silenced for so long, now serves not just as a witness to history, but as a warning. Her story is not one of complicity, but of proximity, and the burden of memory that comes with being in the wrong place at the most dangerous time. "I didn't choose to be there," she says. "But now I choose to tell what I saw. The world needs to remember."

### THE WALL

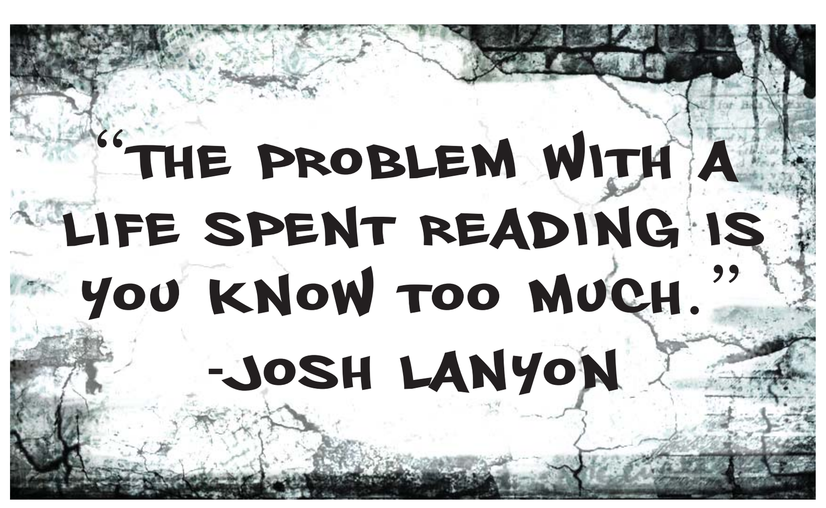


### BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

### ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

# मूंगफली के छिलके से भरा ट्रक पलटा, दम्पती सहित बेटी की मौत

## 24 घंटे तक मूंगफली के छिलकों में दबे रहे पति-पत्नी और ढाई साल की बेटी

तीनों के शव मिले तो ग्रामीण आक्रोशित हो गए और विरोध प्रदर्शन किया।

मृतक दम्पती व बेटी की फाइल फोटो।

■ हादसे के बाद इनके फोन बंद हो गए और परिजनों को उनकी कोई खबर नहीं मिली

**शाहपुरा,** (निसं)। शाहपुरा के धाराजी घाटे में एक दर्दनाक हादसा हो गया, जिसमें एक पति-पत्नी और उनकी ढाई साल की बेटी की मौत हो गई। हादसा रविवार सुबह हुआ, जब राजेंद्र गुर्जर अपनी पत्नी अनू गुर्जर और बेटी अयांशी के साथ अजीतगढ़ स्थित जगदीश धाम मंदिर जा रहे थे। धाराजी घाटी पर मूंगफली के छिलके से भरा हुआ ट्रक अचानक पलट गया, जिससे राजेंद्र, अनू और अयांशी उसके नीचे दब गए। हादसे के बाद इनके फोन बंद हो गए और परिजनों को उनकी कोई खबर नहीं मिली।

अजीतगढ़ थानाधिकारी मुकेश सेपट ने बताया कि हादसे की जानकारी मिलने के बाद टीम मौके पर पहुंची और ट्रक के आगे का हिस्सा हटा दिया था। सोमवार सुबह करीब आठ बजे जब मूंगफली के छिलके हटाए जा रहे थे तो तीनों के शव वहां नीचे दबे हुए मिले। सोमवार को जब तीनों के शव मिले तो ग्रामीण आक्रोशित हो गए और विरोध प्रदर्शन करने लगे।

ग्रामीणों ने शाहपुरा-अजीतगढ़ रास्ते पर जाम लगा दिया और शव उठाने से इंकार कर दिया। बताया जा रहा है कि अनू प्रेग्नेंट भी थी। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। वे बार-बार यही कह रहे हैं कि अगर पुलिस समय पर पहुंच जाती तो शायद तीनों की जान बच सकती थी। पुलिस अब इस मामले की जांच कर रही है और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कह रही है।

# किशनगढ़ बास में बारिश से सड़कें जलमग्न

किशनगढ़ बास में आधे घंटे हुई बारिश से बाजार में पानी भर गया।

**किशनगढ़ बास,** (निसं)। करीब 30 मिनट की बारिश ने नगर पालिका की ओर से मानसून को देखते हुए नालों की सफाई के लिए छोड़े गए लगभग 25 लाख रुपए के टैंडर की पोल कर रख दी है। गंज रोड, मुख्य बाजार, अनाज मंडी सहित अनेक सड़कें पानी से जलमग्न दिखाई देने पर आमजन को परेशानी उठानी पड़ी। वहीं लोग नगर पालिका को निष्क्रियता पर कोसते नजर आए।

नगर पालिका प्रतिपक्ष नेता पार्षद उमेश यादव नगर पालिका अधिकारियों की कार्यशैली और शहर में हो रही सफाई पर सवाल उठाते हुए कहा कि नालों की सफाई मानसून के आने से पहले नगर पालिका को टैंडर कर शुरू करनी थी अब जब मानसून आ गया है तो औपचारिकताओं को पूरा करने के लिए सफाई कराई जा रही है जो कि नगर पालिका की बदनियती को साफ दर्शाता है। पार्षद यादव ने कहा है कि 25 लाख रुपए का नाला सफाई का टैंडर होने के बाद भी दुकानदारों को 2 से 3 हजार रुपए देकर अपनी-अपनी दुकान के आगे निजी कर्मचारी लगाकर नालों की सफाई करानी पड़ रही हैं। सोमवार को सायं करीब पांच बजे बारिश का दौर शुरू हुआ जो आधा घंटे रहा। इस थोड़ी सी देर की बारिश से चारों ओर शहर की सड़कों पर पानी भर गया। पैदल राहगीरों भारी परेशानी उठानी पड़ी। गौरतलब बात यह है कि ढेड़ घंटे बाद तक गंज रौड और मुख्य बाजार की सड़क पर पानी भरा रहा।

## बंदी की उपचार के दौरान मौत

**भीलवाड़ा,** (निसं)। जिला जेल में पॉक्सो कोर्ट में सजायप्ता बंदी की अचानक तबियत बिगड़ने के बाद एमजी हॉस्पिटल में उपचार के दौरान मौत हो गई। जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा जिला जेल में 2021 के पॉक्सो के मामले में जेसी पर चल रहे आशिक पिता मोहम्मद इब्राहिम की शनिवार को अचानक तबीयत बिगड़ने पर उसे महात्मा गांधी चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया। आशिक का एमजी हॉस्पिटल के आईसीयू में उपचार चल रहा था, इसी बीच अचानक उसकी इलाज के दौरान ही मौत हो गई। एमजी चौकी पुलिस ने परिजनों को इसकी सूचना दी और मृतक के शव को महात्मा गांधी चिकित्सालय की मोर्चरी में सुरक्षित रखवाया गया है। बताया जा रहा है कि बंदी आशिक का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया जाएगा।

## टीडीनाथ आश्रम में लेपर्ड के आने की आशंका

■ पदचिन्हों और खून के निशान से हड़कंप मचा

**श्रीमाधोपुर,** (निसं)। शहर के पुराने कोर्ट रोड स्थित टीडीनाथ आश्रम में बीती रात वन्यजीव की आमद से सनसनी फैल गई। आश्रम के पूरे परिसर में खून के निशान और जानवर जैसे पैरों के पदचिन्ह मिलने के बाद लेपर्ड (तेन्दुआ) के आने की आशंका जताई गई है।

बाबा धर्मगिरी ने बताया कि रविवार देर रात आश्रम में लाइट नहीं आने की वजह से 9:30 बजे सो गया था। सोमवार अल सुबह तीन बजे जब उठा तब दुर्गंध आने महसूस हुई जिस पर लाइट जलाकर देखा तो मंदिर परिसर में चारों तरफ खून के धब्बे दिखे। उन्होंने आश्रम परिसर में कई स्थानों पर खून के धब्बे और जंगली जानवर के पैरों के निशान देखे। तुरंत ही यह सूचना अन्य श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों को दी गई, जिससे मौके पर भीड़ जमा हो गई। स्थानीय लोगों ने आशंका जताई कि लेपर्ड ने किसी पालतू या जंगली जानवर का शिकार कर लिया होगा। सूचना मिलने के करीब डेढ़ घंटे बाद वन विभाग की टीम के वनरक्षक मंगल सिंह मौके पर पहुंचे वनपाल ने पदचिन्हों का निरीक्षण किया और प्रारंभिक जांच में यह संभावना जताई कि ये निशान लेपर्ड के न होकर जरख (जंगली जानवर) जैसे प्रतीत हो रहे हैं। जिनके पगमार्ग सोनी कॉलोनी तक देखे गए।

## मांगरोल उपखण्ड क्षैत्र में सात इंच बरसात हुई

**मांगरोल,** (निसं)। उपखण्ड क्षैत्र में पहले मानसून में सोमवार को सुबह आठ बजे से लेकर शाम को पांच बजे तक 180 एमएम ( सात इंच) बरसात हुई। बरसात होने से चारों ओर पानी ही पानी नजर आया। माँगरोल क्षेत्र में आसपास के गांव के खेतों में पानी ही पानी नजर आ रहा है। यहां तक कि भोज्याहेडी गांव के पलड़ा नाले में उफान आया। बरसात में पानी आने के कारण कच्छा बाई पास रोड की मिट्टी बह गई जिससे संपर्क टूट गया, जबकि इस गांव के लिए नई पुलिया का निर्माण अभी चल रहा है। मांगरोल और क्षैत्र में पार्वती नदी उफान पर चल रही है और मांगरोल बांण गंगा नदी में भी जलस्तर बढ़ रहा है। कई निचली बस्तियों में बारिश का पानी भर गया।

# करंट से डॉक्टर की मौत का मामला: मकराना में अंतिम संस्कार हुआ

■ डॉक्टर की मौत के मामले में रेजिडेंट डॉक्टर्स की हड़ताल पांचवें दिन भी जारी

■ रेजिडेंट्स का कॉलेज परिसर में प्रशासन के खिलाफ आंदोलन जारी, एफआईआर दर्ज

■ परिवार का पहला डॉक्टर और पीजी में गोल्ड मेडलिस्ट था डॉ. रवि

**उदयपुर,** (का.सं.)। आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज उदयपुर में डॉ. रवि शर्मा की करंट लगने से मौत के मामले में परिवार ने कॉलेज, हॉस्पिटल और हॉस्टल के लापरवाह कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। डॉ. रवि शर्मा की मौत के मामले में उनके चाचा देवीकिशन शर्मा ने हाथीपोल थाने में शिकायत दी। पुलिस ने लापरवाही से मौत का मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

आरएनटी मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर की मौत के मामले में रेजिडेंट डॉक्टर्स की हड़ताल सोमवार को पांचवें दिन भी जारी है। सोमवार को रेजिडेंट्स ने कॉलेज परिसर में प्रशासन के खिलाफ रैली निकाली और पुतला दहन किया। रैली में कॉलेज प्रशासन मुर्दाबाद के नारे लगाए गए। हड़ताल का असर अस्पतालों की सेवाओं पर गंभीर रूप से पड़ रहा है। एमबी हॉस्पिटल, जनाना, सुपर स्पेशियलिटी विंग के साथ-साथ चांदपोल और सेटेलाइट हॉस्पिटल में मरीजों का इलाज प्रभावित हो रहा है।

इधर डॉ. रवि शर्मा की मौत के चौथे दिन रविवार रात करीब 11:30 बजे उनका पार्थिव शरीर एम्बुलेंस से मकराना भेजा गया। एमबी हॉस्पिटल की मॉर्च्यूरी में सैकड़ों रेजीडेंट डॉक्टर्स ने नम आंखों से अपने साथी को अंतिम विदाई दी। पुष्प वर्षा कर श्रद्धांजलि अर्पित की। जहां सोमवार उनका अंतिम संस्कार किया गया। मेडिकल कॉलेज के पीजी हॉस्टल में करंट से हुई डॉ. रवि शर्मा की मौत मामले में दर्ज एफआईआर में गंभीर खुलासा हुआ है। रेजीडेंट्स ने पहले भी कई बार वाटर कूलर में करंट की शिकायत की थी। व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से हॉस्टल प्रशासन, अस्पताल और कॉलेज प्रशासन को इस समस्या से अवगत कराया था। रेजीडेंट्स ने दुर्घटना की आशंका भी जताई थी, लेकिन प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया। न तो वाटर कूलर की मरम्मत कराई गई और न ही वहां कोई चेतावनी बोर्ड लगाया गया। प्रशासन की इसी लापरवाही के कारण डॉ. रवि शर्मा की करंट लगने से मौत हो गई। एफआईआर में ऐसे लापरवाह अफसरों और कर्मचारियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की गई है।

चाचा जगदीश शर्मा के अनुसार डॉ. रवि शर्मा बचपन से ही मेधावी छात्र था। कोटा में दो साल की तैयारी के बाद दूसरे प्रयास में जोधपुर मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिला। अजमेर के जेएलएन मेडिकल कॉलेज से एनेस्थिसीया में पीजी में गोल्ड मैडल हासिल किया। परिवार के पहले डॉक्टर रवि की प्रेरणा से उनके चचेरे भाई डॉ. प्रशांत, डॉ. उज्जवल और डॉ. यश शर्मा भी डॉक्टर बने। मकराना में साड़ी की दुकान चलाने वाले पिता दिलीप शर्मा का वह इकलौता बेटा था। उनकी एक छोटी बहन कोमल शर्मा है। डॉ. रवि की एक डेढ़ साल और दूसरी 3 साल की बेटी है।

जानकारी के अनुसार 18 जून को आरएनटी मेडिकल कॉलेज के पीजी हॉस्टल में रात करीब 1:30 बजे डॉ रवि शर्मा की वाटर कूलर से करंट लगने से मौत हो गई थी। इस हादसे को लेकर आरएनटी मेडिकल कॉलेज के सभी हॉस्पिटल्स में करीब 600 से ज्यादा रेजिडेंट्स ने 19 जून से हड़ताल शुरू कर दी। 19 जून को ही डॉक्टर रवि शर्मा के शव का आरएनटी मेडिकल कॉलेज प्रशासन द्वारा गठित बोर्ड ने पोस्टमार्टम किया। 20 जून डॉ रवि शर्मा की पोस्टमार्टम रिपोर्ट सामने आई जिसमें करंट लगने से मौत होने का कहीं भी जिक्र नहीं था।

रेजिडेंट्स चिकित्सकों की मांग पर 21 जून को एसएमएस हॉस्पिटल जयपुर से डॉक्टर बुलाकर वापस शव का पोस्टमार्टम किया गया। जिसमें डॉक्टरों ने करंट के झटके लगने से शरीर में चोट लगने की आशंका जताई। इसको लेकर 22 जून को डॉक्टर रवि शर्मा के परिजनों ने हाथीपोल थाने में कॉलेज प्रशासन, हॉस्टल,अस्पताल प्रशासन के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। साथ ही मृतक डॉक्टर के शव को परिजन अपने गृह क्षेत्र नागौर के मकराना लेकर रवाना हो गए। हादसे को लेकर रेजिडेंट्स की हड़ताल सोमवार को भी जारी रही। कॉलेज परिसर में रेजिडेंट्स द्वारा कॉलेज प्रशासन के शव के पुतले की अंतिम यात्रा निकाल कर उसको फूंका गया।

## पथराव प्रकरण में पांच और गिरफ्तार

**जोधपुर,** (कासं)। शहर की राजीव गांधी नगर पुलिस ने उम्मेद सागर बांध कैचमेंट एरिया में गत दिनों अतिक्रमण दस्ता, पीएचईडी जाब्ता और पुलिस पर पथराव करने वाले पांच और आरोपियों को अब गिरफ्तार किया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया। मामले में पांच आरोपियों को की पूर्व में गिरफ्तारी हो चुकी है। अब तक दस लोग प्रकरण में गिरफ्तार किए गए हैं। थानाधिकारी सुरेश पोटलिया ने बताया कि उम्मेद सागर बांध कै चमेंट एरिया में गत दिनों अतिक्रमण हटाने गए पुलिस जाब्ता, नगर निगम अतिक्रमण दस्ता और पीएचईडी जाब्ते के साथ मारपीट करने और पथराव के प्रकरण में पांच और लोगों रेहान, सनीफ, सिकंदर, मो. साहिद और शिवचंद को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी आस पास के एरिया और बासनी के रहने वाले है। इससे पहले प्रकरण में पांच आरोपियों को पकड़ा गया था। मामले में मीडिया कर्मियों की तरफ से भी एक रिपोर्ट दी गई थी।

## महिला टीचर के साथ महिलाओं ने मारपीट की

■ मारपीट का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

**अजमेर,** (कासं)। अलवर गेट थाना क्षेत्र में रहने वाली महिला टीचर और उसके भाई के साथ मारपीट करने का मामला सामने आया है। मारपीट की शिकार टीचर ने अपनी मौसी, उनके परिवार की महिलाओं सहित अन्य सदस्यों पर घर में घुसकर मारपीट और डंडे से हमला करने का आरोप लगाया है। पीड़ित टीचर ने अलवर गेट थाने में शिकायत दर्ज कराई है। महिला टीचर के साथ मारपीट का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। पीड़िता टीचर ने पुलिस द्वारा आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होने पर सोमवार को परिवार के साथ एसपी वंदिता राणा से न्याय की गुहार लगाई है और मारपीट करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

अलवर गेट थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गांव मदारपुरा निवासी महिला टीचर नीतू रावत पुत्री शंकर सिंह ने थाने में लिखित शिकायत देते हुए कुछ लोगों पर मारपीट व डंडों से हमला करने का आरोप लगाते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। दर्ज रिपोर्ट में पीड़ित महिला टीचर नीतू ने बताया कि 22 जून को शाम करीब 6:30 अपने घर से परचूनी की दुकान पर जा रही थी, तभी भंवरी देवी, लक्ष्मी, छोटी देवी, अनु के मकान के पास से गुजर रही थी तभी सभी महिलाओं ने एक राय होकर उस पर हमला कर दिया। पीड़िता नीतू ने बताया कि भंवरी देवी ने उसकी चोटी पकड़ कर बाल खींचा और सड़क पर उसे घसीटा, अन्य महिलाओं ने डंडों के साथ ही मारपीट की गई। भाई मोहित जब उसे बचाने आया और छुड़वाने का प्रयास किया तो महिलाओं ने उस पर भी डंडे से हमला कर दिया, जिसके सिर पर भी चोट आई है। सभी महिलाओं से उन्हें जान बचाकर वहां से भागना पड़ा था।

## मालाणी एक्सप्रेस का खैरथल स्टेशन पर ठहराव 26 से

**जोधपुर,** (कासं)। रेल प्रशासन द्वारा मालाणी सुपरफास्ट ट्रेन का खैरथल स्टेशन पर ठहराव प्रारंभ किया जा रहा है।

उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेन 20487,बाड़मेर-दिल्ली मालाणी सुपरफास्ट एक्सप्रेस (द्विसाप्ताहिक) जो 26 जून को बाड़मेर से प्रस्थान करेगी वह अगले दिन खैरथल स्टेशन पर सुबह 10 बजे आगमन कर 10.02 बजे प्रस्थान करेगी। डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि इसी प्रकार वापसी में ट्रेन 20488,दिल्ली-बाड़मेर मालाणी सुपरफास्ट एक्सप्रेस (द्विसाप्ताहिक) जो 27 जून को दिल्ली से प्रस्थान करेगी वह खैरथल स्टेशन पर शाम 6.02 बजे आगमन कर 6.04 बजे प्रस्थान करेगी।

## आसाराम जोधपुर लौटे

**जोधपुर,** (कासं)। अपने ही आश्रम में नाबालिग से रेप के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहे आसाराम बापू पुणे में आयुर्वेदिक अस्पताल में इलाज करवाकर जोधपुर लौट आये हैं। उसकी झलक पाने के लिए समर्थकों की भीड़ एयरपोर्ट पर उमड़ पड़ी। आसाराम बापू यहां से सीधे अपने आश्रम चले गये। आसाराम बापू को राजस्थान हाईकोर्ट से तीस जून तक अंतरिम जमानत मिली हुई है।

# आनासागर चौपाटी के स्ट्रीट वेंडरों ने अदालत की शरण ली, सुनवाई आज

**अजमेर,** (कासं)। नई आना सागर चौपाटी रीजनल कॉलेज के सामने खड़े होकर अपनी आजीविका फास्ट फूड बेचकर कमाने वाले स्ट्रीट वेंडरों ने नगर निगम की कार्रवाई के खिलाफ अदालत की शरण ली है, इस मामले में मंगलवार को सुनवाई होगी।

स्ट्रीट वेंडरों ने अपने अधिवक्ता संजीव रोहिला व विवेक पाराशर के जरिए सिविल न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड नगर उत्तर ग्रीष्मकालीन न्यायालय में वाद पत्र व स्थगन प्रार्थना पत्र पेश कर अदालत से गुहार लगाई है कि वे करीब आठ वर्षों से उक्त स्थल पर बतौर स्ट्रीट वेंडर काम कर अपनी आजीविका कमा रहे हैं, जिसके लिए हजारों रुपए किराया नगर निगम को प्रतिमाह अदा कर रहे हैं, उसके अलावा फूड लाइसेंस के शुल्क अलग से अदा कर रहे हैं और रोज शाम छह बजे से रात्रि तक अपना व्यवसाय करते जिससे अपने परिवार की आजीविका पालते हैं। नगर निगम द्वारा वेंडिंग जोन का लाइसेंस सभी खाद्य सामग्री बेचने वाले स्टीट वेंडर को जारी कर रखा है और उनके द्वारा अधिकृत फूड लाइसेंस वह नगर निगम को प्रतिमा किराया अदा कर निर्धारित स्थल के नाप के अनुसार मौके स्थल पर काम कर अपने व अपने परिवार की आजीविका चला रहे हैं। प्रस्तुत बाद में ये भी बताया गया कि राजस्थान स्ट्रीट वेंडर्स आजीविका संरक्षण एवं पत्र विक्रेता विनिमन स्कीम 2017 के नियमों की धज्जियां नगर निगम द्वारा उड़ाई जा रही है, जबकि उन्हें नई चौपाटी रीजनल को लेकर सामने काम करने की अनुमति विधिवत प्रदत्त कर रखी है और उन्हें जबरन यहां से हटाकर मित्तल हॉस्पिटल के सामने शिफ्ट करने का प्रयास किया जा रहा है और उन्हें मौके पर अतिक्रमण बताकर उन्हें अपने आजीविका के अधिकार से महरूम करने का प्रयास किया जा रहा है, जबकि जिस स्तर पर उन्हें अनुमति प्रदान की गई है।

# शराबी को बचाने के चक्कर में बस पलटी, आधा दर्जन यात्री घायल

**कोटा,** (निसं)। श्योपुर-कोटा स्टेट हाइवे 70 पर सोमवार दोपहर एक बस हादसे का शिकार हो गई। यह दुर्घटना कंवरपुरा के पास हुई। बस सुल्तानपुर से कोटा आ रही थी और इसमें तीन दर्जन से ज्यादा यात्री सवार थे। हादसा उस समय हुआ जब सड़क किनारे शराब पीकर लड़खड़ाता एक व्यक्ति अचानक बस के सामने आ गया। चालक ने उसे बचाने की कोशिश में बस को साइड में कर ब्रेक लगाए, लेकिन बारिश के कारण मिट्टी फिसलन भरी हो गई थी इससे बस सड़क किनारे ड्रेन में पलट गई। हादसे में आधा दर्जन लोग घायल हुए हैं जिन्हें उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलने पर पहले सुल्तानपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची। इसके बाद घायलों को अस्पताल ले जाया गया है। हालांकि यह मामला दीगोद थाने का था। ऐसे में दीगोद थाना पुलिस भी मौके पर बाद में आ गई और कार्रवाई शुरू की है।

श्योपुर-कोटा स्टेट हाइवे 70 पर शराबी को बचाने के चक्कर में बस पलट गई।

■ बारिश के कारण मिट्टी फिसलन भरी हो गई थी, इससे बस सड़क किनारे ड्रेन में पलट गई

दीगोद थाना अधिकारी पुरुषोत्तम मेहता ने बताया कि दुर्घटना कंवरपुरा के नजदीक दोपहर 12.15 बजे हुई। इसमें शराब के ठेके से शराब खरीद कर एक व्यक्ति सड़क पर आ गया था जिसने शराब भी पी हुई थी। पैदल व्यक्ति को बचाने के लिए बस चालक ने प्रयास किया। इसको बचाने के लिए बस को साइड में किया गया और ब्रेक लगाया था लेकिन बारिश की वजह से मिट्टी में बस स्लिप हो गई। इसके बाद अनियंत्रित होकर सड़क के नजदीक ड्रेन में पलट गई। घटनास्थल पर यात्रियों की चीख पुकार मच गई। इसके बाद स्थानीय लोगों ने सभी यात्रियों को बाहर निकलना शुरू किया। दीगोद थाने के असिस्टेंट सब इंस्पेक्टर सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि अधिकांश यात्रियों को मामूली चोट लगी थी, जिन्हें अस्पताल से प्राथमिक उपचार के बाद ही भेज दिया गया है। बस सुल्तानपुर से कोटा जा रही थी। इसमें मांगरोल निवासी समोल बाई के कंधे में ज्यादा चोट लगी है। इसके चलते उसे कोटा रैफर कर दिया है। इस पूरे मामले में जांच की जा रही है।

# बीज-खाद के सैंपल जांच के लिये भेजे जायेंगे

■ अनियमितता पाए जाने पर फर्मों को जुर्माना देना होगा

**बीकानेर,** (निसं)। यहां किसानों को नकली खाद, बीज और पेस्टिसाइड्स उपलब्ध कराने वाली फर्मों के सैंपल सोमवार को जांच के लिए प्रदेश की अलग-अलग लैब में भेजे जा रहे हैं। इन सैंपल के गड़बड़ मिलने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। गड़बड़ करने वाली फर्मों को बड़ी पैनल्टी के साथ ही कानूनी कार्रवाई का सामना भी करना पड़ सकता है।

कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक कैलाश चौधरी ने बताया कि राज्यभर में सात लैब है, जहां बीज, खाद, पेस्टिसाइड्स की जांच हो सकती है। इनमें जयपुर के दुर्गापुरा, जोधपुर, चित्तौड़गढ़ की लैब शामिल है। किस फर्म का कौनसा सैंपल, किस लैब को भेजा जाएगा, ये ऑनलाइन ही तय होता है। सोमवार को सभी सैंपल भेज दिए गए, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि बीकानेर में 11 हजार किलो उर्वरक, 1136 लीटर पेस्टिसाइड्स जब्त किया गया है। इनके सैंपल सोमवार को रवाना कर दिए। कुल 26 सैंपल लिए गए हैं, जिनकी रिपोर्ट एक महीने के भीतर आने की उम्मीद की जा रही है।

श्रीगंगानगर रोड स्थित अनाज मंडी के सामने भूरा कॉम्पलेक्स में बीस से अधिक गोदाम व्यापारियों ने किराए पर ले रखे हैं। नकली खाद, बीज और पेस्टिसाइड्स के नमूने इन्हीं गोदामों से लिए गए हैं। सीज किए गए गोदाम फिलहाल प्रशासन के कब्जे में रहेंगे। यहां शिव शक्ति खाद बीज भंडार, मैसर्स अन्नदाता एग्रो एजेंसी, मैसर्स जेपी खाद बीज एजेंसी और जमींदारा कृषि सेवा सहकारी समिति के सात गोदामों के ताले तोड़कर तलाशी ली गई थी। जिन गोदामों में ये माल मिला है, उनके मालिकों पर भी प्रशासन कार्रवाई कर सकता है। इन गोदामों में ये सामान रखने की स्वीकृति प्रशासन से नहीं ली गई। किसी भी वस्तु के भंडारण के लिए स्थान बनाने से पहले स्वीकृति लेनी होती है। जिन फर्मों ने ये सामान रखा है, उन्होंने भी रिपोर्ट नहीं दी कि भंडारण किया गया है। ऐसे में भंडार मालिकों पर भी कार्रवाई हो सकती है। बड़ी मात्रा में बरामद किए गए कृषि सामान पर अब राज्य कर विभाग की नजर भी है। जो सामान अवैध रूप से भंडार किया गया है, उसकी खरीद हुई तो बिल है या नहीं? इसकी जांच हो सकती है। फिलहाल कर विभाग ने कोई कार्रवाई नहीं की है लेकिन जल्दी ही ये कार्रवाई हो सकती है।

# हाड़ौती संभाग में हो रही बारिश से चंबल, कालीसिंध, परवन और पार्वती नदी उफान पर

## हाड़ौती में चार दिन से बारिश का दौर जारी, कोटा बैराज के दो गेट खोलकर 7466 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है

हाड़ौती में लगातार बरसात के चलते कई नदियां उफान पर हैं

बारिश के कारण पार्वती नदी में पानी की आवक हुई।

- चंबल नदी में झरेल की पुलिया पर पानी आ जाने के चलते खातौली इटावा का सवाई माधोपुर जिले से सीधा संपर्क कटा
- छबड़ा क्षेत्र में बीते 24 घण्टों में 91 एमएम बारिश दर्ज, पार्वती, रेणुका नदी सहित अन्य जलाशयों का जलस्तर बढ़ा

**कोटा,** (निसं)। हाड़ौती संभाग में मानसून की अच्छी शुरुआत हुई है। बीते चार दिन से जमकर बारिश हो रही है। इसका असर देखने को मिला है कि जून माह में ही नदियां उफान पर आ गई है। बारिश के चलते हाड़ौती की नदियों में भी पानी का जलस्तर बढ़ा है। हाड़ौती संभाग में चंबल, कालीसिंध, परवन और पार्वती नदी उफान पर चल रही है। अन्य छोटी और सहायक नदियों में भी तेजी से पानी बढ़ रहा है। यहां तक कि चंबल नदी में झरेल की पुलिया पर पानी आ जाने के चलते खातौली इटावा का सवाई माधोपुर जिले से सीधा संपर्क कट गया है। पुलिया पर वर्तमान में 4 से 5 फीट पानी है और चादर चल रही है। यहां पर पानी आ जाने के चलते पुलिस की तैनाती भी कर दी गई है, ताकि कोई भी व्यक्ति जान जोखिम में डालकर पुलिया से नहीं गुजरे। यह रास्ता बीते 24 घंटे से बंद है।

चंबल नदी में झरेल के नजदीक एक उच्च स्तरीय पुल बनने जा रहा है। यह प्रदेश का सबसे लंबा पुल भी है, लेकिन इसका निर्माण इस साल पूरा नहीं होगा। इसके साथ ही बारां जिले के शाहाबाद में कुंडाखोह के झरने में भी पानी आ गया हैं, जहां पर करीब चले 50 फिट से ज्यादा की ऊंचाई से पानी नीचे गिरता है। दूसरी तरफ संभाग में सोमवार को एक बार फिर तेज बारिश का दौर शुरू हुआ। मध्यप्रदेश सरकार ने खतौली में पार्वती नदी पर ऊंचाई पर पुल बना दिया है। इससे यातायात भी शुरू हो गया है। बारिश की वजह से झरेल की पुलिया पर होकर सवाईमाधोपुर की तरफ जाने और आने वाले सभी वहां डाइवर्ट हो गए हैं। बारां जिले से दिल्ली और जयपुर की तरफ कुछ बसें सवाई माधोपुर होकर चलती है। यह इटावा खातौली होते हुए निकलती है। ऐसे सभी वाहनों को भी गैंता माखिदा, इंद्रगढ़, लबान होते हुए डायवर्ट किया गया है। सवाई माधोपुर की तरफ से इस रूट पर आने वाले वाहन भी इसी तरह आ रहे हैं।

खतौली थाना अधिकारी मंशीराम बिश्नोई ने बताया कि रविवार को ही पुलिया पर दो फीट आ गया था। इसके चलते यहां से गुजरने वाले सभी वाहनों को डाइवर्ट करवा रहे हैं। दूसरी तरफ सवाई माधोपुर पुलिस की तैनातगी हैं। इसी तरह से कोटा जिले के अयाना थाना इलाके में आने वाली क्वांजापुर पुलिया पर पार्वती नदी का पानी आ गया है। थानाधिकारी उम्मेद सिंह के अनुसार करीब दो से ढाई फीट तक पानी पुलिया पर है, इसलिए यहां भी जाप्ता तैनात कर दिया गया है। लोगों को निकलने नहीं दिया जा रहा है। पुलिया बारां जिले से श्योपुर को कनेक्ट करती है। ऐसे में यहां से सीधे मध्यप्रदेश जाने का यह सबसे सुगम रास्ता बंद हो गया है।

**कोटा बैराज से हो रही पानी की निकासी :-** जल संसाधन विभाग के सहायक अभियंता निकिता पारेता ने बताया कि राणा प्रताप सागर बांध से 5905 क्यूसेक पानी मशीन के जरिए डिस्चार्ज किया जा रहा है। इसी तरह से जवाहर सागर बांध से मशीन डिस्चार्ज के जरिए 5690 क्यूसेक पानी निकाला जा रहा है। वहीं कोटा बैराज के दो गेट खोलकर 7466 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। इसके लिए दो गेट खोले गए हैं, जिनमें 5 नंबर गेट को 3 फीट और 6 नंबर गेट को 2 फीट खोला गया है। हालांकि चंबल नदी में अन्य सहायक नदियों का पानी आना के चलते झरेल की पुलिया पर ज्यादा पानी आ गया है।

**छबड़ा में बारिश के कारण जलाशयों का जलस्तर बढ़ा :** पिछले दिनों से हो रही बारिश के कारण नदी-नालों का जलस्तर बढ़ गया हैं। बारिश का दौर जारी रहने के कारण प्रशासन ने आमजन से सतर्कता बरतने की अपील की है। जानकारी के अनुसार क्षेत्र में रविवार शाम को शुरू हुआ बारिश का दौर पूरी रात जारी रहा। वहीं सोमवार को भी दोपहर बाद तक भी रुक-रुककर बारिश का दौर जारी रहा। क्षेत्र में बीते 24 घण्टों में 91 एमएम बारिश दर्ज की गई। जिसके चलते क्षेत्र के पार्वती, रेणुका नदी सहित अन्य जलाशयों का जलस्तर भी बढ़ा हुआ नज़र आया।

# चार फर्मों के बिना लाइसेंस चल रहे खाद-बीज के सात गोदाम सीज़

- गोदामों से खाद, बीज, पेस्टिसाइड के नकली होने की आशंका में 26 सैम्पल लिए
- सैम्पल को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा, फैल होने पर कार्रवाई की जाएगी

**बीकानेर,** (निसं)। कृषि विभाग ने अनाज मंडी के सामने एक कॉम्पलेक्स में स्थित चार फर्मों के सात गोदाम सीज कर दिए हैं। गोदामों से खाद, बीज, पेस्टिसाइड के नकली होने की आशंका में 26 सैम्पल लिए गए हैं। यह कार्रवाई सुबह करीब नौ बजे तक चली।

श्रीगंगानगर रोड स्थित अनाज मंडी के सामने भूरा कॉम्पलेक्स में 20 से भी अधिक गोदाम व्यापारियों ने किराए पर ले रखे हैं। नकली खाद, बीज और पेस्टिसाइड के भंडारण की सूचना पर कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने रात को वहां अचानक छापा मारा था। इस दौरान सात गोदामों के ताले तोड़े गए। उनमें रखे माल की जांच की गई। कृषि विभाग के अधिकारियों को मौके पर बुलाकर पूछताछ की तो उन्होंने गोदामों की सूचना होने से अनभिज्ञता जता दी।

संयुक्त निदेशक कैलाश चौधरी ने बताया कि कॉम्पलेक्स में मैसर्स शिव शक्ति खाद बीज भंडार, मैसर्स अन्नदाता एग्रो एजेंसी, मैसर्स जेपी खाद बीज एजेंसी और जमींदारा कृषि सेवा सहकारी समिति के सात गोदामों के ताले तोड़कर तलाशी ली गई थी। इनके रिकॉर्ड चैक करने पर पता चला कि फर्मों को जारी लाइसेंस में इन गोदामों की अनुमति ही नहीं ली गई थी। यानी गोदाम अवैध रूप से संचालित किए जा रहे थे। अनियमितताएं पाए जाने पर गोदाम सीज कर दिए गए। इनमें रखे बायो स्टिमुलेंट, बीज, खाद, पेस्टिसाइड के 26 सैम्पल लिए गए हैं, जिन्हें जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा। सैम्पल फैल होने पर उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

कृषि के लिए खाद, बीज, पेस्टिसाइड का भंडारण करने के लिए गोदाम बिना स्वीकृति के ही चल रहे हैं। कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी मीणा के छापे के बाद यह हकीकत उजागर हुई है। डॉ. मीणा ने भी कहा है कि विभाग के अधिकारियों के साथ मिलीभगत कर व्यापारी अवैध रूप से माल का स्टॉक कर रहे हैं और नकली खाद, बीज आदि किसानों को बेचा जा रहा है। अनाज मंडी के व्यापारी गोदारा एग्रो एजेंसी के प्रोपराइटर रामनिवास गोदारा ने भी गोदाम की स्वीकृति नहीं ली थी।

बीछवाल औद्योगिक क्षेत्र में उनके गोदाम से जब्त 468.25 क्विंटल बायो स्टीमुलेंट बीकानेर और कोलायत क्रय विक्रय सहकारी समिति के गोदाम में रखवाया गया है। यह कार्रवाई 20 जून को हुई थी, जो 21 जून को सुबह पांच बजे तक चली। रात को कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ी मीणा यहां पहुंच गए। दरअसल विभाग ने कृषि मंत्री के आने की भनक लगने पर तुरत-फुरत व्यापारियों के गोदामों पर छापे मारे, जबकि लंबे समय से चल रहे इन गोदामों पर पहले कभी कार्रवाई नहीं की गई।

# 524 करोड़ की जीएसटी चोरी करने वाली गैंग का खुलासा, सात गिरफ्तार

- अंतरराज्यीय गैंग ने 22 राज्यों में लगभग 240 फर्मों में करीब 524 करोड़ का जीएसटी टैक्स चोरी किया

**जोधपुर,** (कासं)।कमिश्नरेट की जिला पश्चिम के पुलिस थाना देवनगर, जिला विशेष टीम एवं साइबर सैल द्वारा संयुक्त कार्रवाई करते हुए कूटरचित तरिके से आधार कार्ड, पैन कार्ड, फर्जी फर्म, बैंक खाता, ई-मेल आईडी आदि बनाकर जीएसटी टैक्स चोरी करने वाली अंतरराज्यीय गैंग का खुलासा किया है। मामले में पुलिस ने कुल सात व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है।

डीसीपी पश्चिम राजर्षि राज वर्मा ने बताया कि गैंग ने 22 राज्यों में लगभग 240 फर्मों में करीब 524 करोड़ रुपए का जीएसटी टैक्स चोरी किया गया जिसमें से 278 करोड़ रुपए की फर्जी बिलों के आधार पर जीएसटी इनपुट ली गई है एवं 246 करोड़ रुपए की जीएसटी इनपुट पास ऑन की गई है। इन 240 फर्मों में 44 फर्मों की पहचान ई-मेल एड्रेस, पैन कार्ड, मोबाइल नंबर के आधार पर एवं अन्य 196 फर्मों की पहचान अन्य डेटा बेस के आधार पर की गई।

कुल 240 फर्मों में से 152 फर्मों का जीएसटी रजिस्ट्रेशन अलग-अलग राज्यों से सम्बंधित जीएसटी विभाग द्वारा पूर्व में जीएसटी रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिया। राजस्थान में रजिस्टर्ड 29 फर्मों में से 16 फर्मों का जीएसटी रजिस्ट्रेशन जीएसटी विभाग द्वारा पूर्व में जीएसटी रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिया गया था। इसी प्रकार जोधपुर में कुल 17 फर्म रजिस्टर्ड थी। जिसमें से 9 फर्मों का जीएसटी रजिस्ट्रेशन जीएसटी विभाग द्वारा पूर्व में जीएसटी रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिया गया तथा शेष रही 8 फर्में सेंट्रल जीएसटी जोधपुर की टीए एंड एंटी इवेसन ब्रांच द्वारा 19 जून को कार्रवाई की गई तो सभी 8 फर्में अपने रजिस्टर्ड पते पर संचालित नहीं होना पाया गया। जिला जोधपुर पश्चिम द्वारा साझा किया गया डाटा पर उक्त फर्मों से सम्बंधित जीएसटी डाटा का सेंट्रल जीएसटी जोधपुर की टीए एंड एंटी इवेसन ब्रांच द्वारा अनुसंधान किया जा रहा है।

# पुष्कर सरोवर में डूबने से युवक की मौत

## युवक नीमड़ी रलावता का रहने वाला था, दोस्त के साथ आया था

- लोगों ने युवक को बचाने का काफी प्रयास किया था

**पुष्कर,** (निसं)। पुष्कर में सोमवार को पवित्र सरोवर के मुख्य गऊ घाट पर स्नान करते वक्त एक युवक की डूबने से मौत हो गई।

जानकारी अनुसार नीमड़ी रलावता निवासी युवक गजेंद्र सिंह पुत्र पप्पू सिंह अपने दोस्त सागर सिंह के साथ पुष्कर घूमने आया। इस दौरान दोपहर को वह दोनों मुख्य गऊ घाट पर स्नान कर रहे थे। घाट पर मौजूद तीर्थ पुरोहितों ने उन्हें आगे जाने से मना किया लेकिन वह माने नहीं और इसी दौरान गजेंद्र सिंह गहरे पानी में चला गया जिसके चलते वह पानी में डूबने लग गया। लोगों ने उसे बचाने का काफी प्रयास किया लेकिन युवक गहरे पानी में चले जाने से डूब गया। इस दौरान उसका दोस्त सावर सिंह घबराकर दोस्त मौके से भाग गया जिसे स्थानीय पुरोहित पकड़ कर लाए। वहीं मामले की जानकारी मिलते ही सिविल डिफेंस की टीम और पुलिस मौके पर पहुंची सिविल डिफेंस के किशन लाल जाट और अमरचंद ने तुरंत पानी में कूदकर युवक को निकाला, लेकिन तब तक युवक ने दम तोड़ दिया। पुलिस ने युवक के शव को पुष्कर अस्पताल के चीर घर में रखवाकर परिजनों को मामले की सूचना दी।

# दो पक्षों के बीच बचाव कर रही पुलिस पर हमला

- पुलिस के साथ धक्का-मुक्की कर वाहन में तोड़फोड़, पुलिस ने पांच जनों को डिटेन किया

**शाहपुरा,** (निसं)। जहाजपुर रोड पर आमली बंगला चौराहे के पास रविवार को दिन में दो पक्षों में हो रहे सामाजिक विवाद को लेकर बीच बचाव कर रही पुलिस पर दो दर्जन से अधिक लोगों ने एक पक्ष के लोगों के साथ पुलिस व उनके वाहन पर हमला बोल दिया। इस घटना को लेकर शाहपुरा थाने के दीवान महावीर शर्मा ने दो दर्जन से अधिक लोगों के खिलाफ नामजद शाहपुरा थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है।

थानाधिकारी सुरेश चन्द्र ने बताया कि आमली बंगला निवासी मेंबर बंजारा ने पुलिस को सूचना दी कि बड़लियास क्षेत्र के कुंडी गांव के दो दर्जन से अधिक लोग घरों पर हमला करने की आशंका व्यक्त करते हुए थाने में रिपोर्ट दी। प्रार्थी की रिपोर्ट पर पुलिस जाब्ता मौके पर पहुंचा और आमली बंगला चौराहे के पास जहाजपुर मार्ग पर कुंडी गांव से कई वाहनों में भरकर आए दर्जनों लोगों ने आमली के अधिवक्ता नाहर सिंह बंजारा आते से ही हमला कर दिया। पुलिस बीच बचाव करने लगी तो समूह में आए लोगों ने पथराव करते हुए पुलिस के साथ धक्का-मुक्की कर उनके वाहन पर लट्ठ बरसाते हुए वाहन के कांच फोड़ दिए। इस घटना की सूचना पर थानाधिकारी के नेतृत्व में बड़ा जाब्ता मौके पर पहुंछा। हमलावर वाहन लेकर मौके से भाग छूटे। पुलिस ने नाकाबंदी करवाते हुए पांच हमलावरों को डिटेन कर उनसे पूछताछ की जा रही है। दीवान महावीर शर्मा द्वारा दो दर्जन से अधिक नामजद हमलावरों के खिलाफ रविवार देर रात मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की।


**Rajasthan Financial Services Delivery Limited**
3rd Floor. REIL House, Shiprapath, Mansarovar, Jaipur-302020
E-Mail : rfsdl@rajasthan.gov.in
No. : F.1(21)/RFSDL/2025 Date : 19/06/2025
**Corrigendum – II**
Date of Bid Submission for NIB-02/2025-26 Dated 09/05/2025 is extended from 23.06.2025 to 09.07.2025. The detail may be visited on the procurement portal **https://eproc.rajasthan.gov.in, & https://sppp.rajasthan.gov.in.**
Raj.Samwad/C/25/4685 Executive Director (Adm.)

राजस्थान सरकार
**कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड सवाई माधोपुर**
राजकीय आयुर्वेद औषधालय के पास, सामान्य चिकित्सालयपरिसर, सवाई माधोपुर
email-eemhswm@gmail.com फोनः 07462-233169
क्रमांकः381 **ई-टेन्डिरिंग निविदा सूचना 05/2025-26** दिनांकः10/6/25
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत राज्य के स.माधोपुर व बूंदी में विभिन्न स्थानों पर रू. 623.09 लाख के 17 निर्माण कार्य/विद्युत कार्य हेतु राजस्थान सरकार के समकक्ष उपयुक्त श्रेणी में विद्युत कार्य/निर्माण कार्य हेतु सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणीके संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायेंआमंत्रित की जाती हैं। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.Org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता हैं।
UBN No.- MHS2526WSOB01727, MHS2526WSOB01728, MHS2526WSOB01729 MHS2526WSOB01730, MHS2526WSOB01731, MHS2526WSOB01741, MHS2526WSOB01742 MHS2526WSOB01743, MHS2526WSOB01744, MHS2526WSOB01745, MHS2526WSOB01746 MHS2526WSOB01748, MHS2526WSOB01749, MHS2526WSOB01750, MHS2526WSOB01751 MHS2526WSOB01752, MHS2526WSOB01754
अधिशाषी अभियन्ता
DIPR/C/7973/2025 चिकित्सा एवं स्वास्थ्य खण्ड सवाई माधोपुर

**OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER P.W.D DN. ALIGARH**
No:664-73 Dated:-10/6/2025
**Notice Inviting Bid 04/2025-26**
9 Nos. Bids for Construction of Patch Repair works on Various Roads & CD Works & Renewal Works are invited from interested bidders upto 23.06.2025 Time 6.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in) of the state; and Public Works department Rajasthan website. The approximate value of the procurement is Rs. 214.56 Lacs.
NIB code-PWD2526A1234
UBN No.- 1. PWD2526WSOB04206, 2. PWD2526WSOB04207 3. PWD2526WSOB04208, 4. PWD2526WSOB04209. 5. PWD2526WSOB04210 6. PWD2526WSOB04211, 7. PWD2526WSOB04212, 8. PWD2526WSOB04215 9. PWD2526WSOB04218
(B. S. Meena) Executive Engineer, P.W.D. Dn. Aligarh
DIPR/C/7984/2025

**कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, जिला खण्ड सांगोद (जिला कोटा)**
क्रमांकः-670 **निविदा सूचना संख्या 05/2025-26** दिनांक : 09.06.2025
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सडक/भवन कार्यों के लिये उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के एए, ए, बी, सी, श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी।
निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in /tenders.asp व http://www.pwd.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। (UBN NO.PWD2526WSOB04250), (UBN NO.PWD2526WSOB04251) (UBN NO.PWD2526WSOB04253), (UBN NO.PWD2526WSOB04255) (UBN NO.PWD2526WSOB04257), (UBN NO.PWD2526WSOB04260) (UBN NO.PWD2526WSOB04263), (UBN NO.PWD2526WSOB04265) (UBN NO.PWD2526WSOB04269), (UBN NO.PWD2526WSOB04271)
(दिनेश कुमार धाकड़) अधिशाषी अभियन्ता सानिवि जिला खण्ड सांगोद
DIPR/C/8004/2025

**कार्यालय अधिशाषी अभियंता, जन स्वा.अभि.विभाग, जिला ग्रामीण खण्ड द्वितीय, बीकानेर**
पी.एच.ई.डी.कैम्पस, इण्डस्ट्रीयल एरिया, के.जी.कॉम्पलेक्स के पास, रानीबाजार, बीकानेर (334001)
फोन नं. 0151-2226475, ई-मेल-pheddriibkn@gmail.com, eediv2.bik.phed@rajasthan.gov.in Latitude 28.0005250 Longitude 73.3249120
क्रमांक-1562-79 **Notice Inviting Bid:- 25 to 37/2025-26** दिनांक-10.06.2025
Bid for various works are invited to registered interested bidder upto 20-06-2025 at 16.00 hours. Other particulars of bid may be visited on the procurement portal www.sppp.rajasthan.nic.in & "http:/eproc.rajasthan.gov.in" of the state. The approximate value of the procurement of Rs. 313.83 lacs.

| NIT No | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| UBN No. | PHE2526W SOB03431 | PHE2526W SOB03432 | PHE2526W SOB03433 | PHE2526W SOB03434 | PHE2526W SOB03435 | PHE2526W SOB03436 |

| 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| PHE2526W SOB03437 | PHE2526W SOB03438 | PHE2526W SOB03441 | PHE2526W SOB03442 | PHE2526W SOB03443 | PHE2526W SOB03444 | PHE2526W SOB03445 |

(नरेश कुमार रैगर) अधिशाषी अभियंता
DIPR/C/8005/2025 जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जिला ग्रामीण खण्ड-II, बीकानेर

**OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PHED DIVISION KARAULI**
PH NO.-07464-250219 E-Mail-ee.kar.phed@rajasthan.gov.in
**Notice Inviting Bid**
Bids for construction and commissioning of 200 mm dia tube well work invited from. interested bidders up to 23.06.2025 other particulars of the bid may be visited on the procurement portal eproc.rajasthan.gov.in and sppp.raj.nic.in website.
NIB CODE:-PHE2526A1661

| S.N. | NIT NO. | UBN | S.N. | NIT NO. | UBN |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 29/2025-26 | PHE2526WSOB03416 | 4 | 32/2025-26 | PHE2526WSOB03423 |
| 2 | 30/2025-26 | PHE2526WSOB03419 | 5 | 33/2025-26 | PHE2526WSOB03425 |
| 3 | 31/2025-26 | PHE2526WSOB03420 | | | |
| 01 | Total work | | 05 | | |
| 02 | Total Estimate Cost | | 74.68 Lac | | |
| 03 | Bid submission end date | | 23.06.2025 up to 11.00 AM | | |
| 04 | Bid opening date | | 24.06.2025 at 02.00 PM | | |

(Vijay Kumar Meena) Executive Engineer PHED Division Karauli
DIPR/C/7959/2025

**कार्यालय नगर निगम, उदयपुर**
टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001
दुरभाष स. 0294-2421255, 2420013, Helpline no. 0294-2426262 वेबसाइट www.udaipurmc.org
क्रमांकः– राजस्व / 2025–26 / 44 दिनांकः– 19.6.25
**निविदा सूचना**
नगर निगम उदयपुर द्वारा वाहन पार्किंग स्थल "देहलीगेट" पर 2 वर्ष की अवधि के लिए वाहन पार्किंग कार्य हेतु सील बन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा की विस्तृत जानकारी, निविदा प्रपत्र एवं नियम शर्तों की सूचना वेबसाईट https://sppp.Rajasthan.gov.in व www.udaipurmc.org पर उपलब्ध है। निविदा की प्रारंभ तिथि 20.6.25 अन्तिम तिथि 30.06.2025 तथा खुलने की तिथि 01.07.2025 है।
UBN No.- UNP2526SSOB00045
राज.संवाद / सी / 25 / 4730 आयुक्त, नगर निगम, उदयपुर

**कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सा. नि. वि. खण्ड नाथद्वारा जिला राजसमन्द राजस्थान**
क्रमांक : 4 दिनांक : 09.06.2025
**निविदा सूचना संख्या 04/2025-26**
NIB:- PWD2526A1193
नवीन सड़को एवं भवनों के निर्माण कार्य हेतु ईच्छुक संवेदको से निविदा दिनांक 23.06.2025 सायं 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा के सम्बन्ध में अन्य विवरण उपापन वेबसाईट ("http://www.eproc.rajasthan.gov.in और http://www.sppp.rajasthan.gov.in) पर देखा जा सकता है। उपापन की कुल अनुमानित राशि 255.74 लाख रुपया है।
UBN No.- 1. PWD2526WSOB04081, 2. PWD2526WSOB04082
(भानु प्रकाश माथुर) अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड नाथद्वारा
DIPR/C/7964/2025

**प्रसार शिक्षा निदेशालय**
(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय), जोबनेर, जिला-जयपुर (राजस्थान) 303329
No. DEE/Acctt/Tender/2025/ Dated :- 19/06/2025
**खुली निविदा सूचना**
प्रसार शिक्षा निदेशालय, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर पर चल रहे कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रमों के दौरान विभिन्न प्रशिक्षणों, मासिक बैठकों, संगोष्ठियों, क्षेत्र दिवसों एवं किसान मेलों में अधिकारियों, प्रशिक्षणार्थियों, किसानों एवं आंमत्रित सदस्यों के लिए नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन के लिए दरें आंमत्रित की जाती है। निविदा सम्बन्धित सभी अर्हताएं एवं शर्ते निविदा प्रपत्र में दर्शायी गयी है कार्यालय सूचना पट्ट तथा विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.sknau.ac.in व http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है। इच्छुक केटर्स, कैन्टीन मालिक, ढ़ाबा व्यवसाई व हलवाई प्रसार षिक्षा निदेशालय से निविदा प्रपत्र निर्धारित शुल्क द्वारा दिनांक 26.06.2025 को दोपहर 1.00 बजे तक प्राप्त कर मोहरबंद निविदाएं निम्नानुसार कार्यालय में दिनांक 26.06.2025 को दोपहर 2.00 बजे तक प्रस्तुत कर सकता है। UBN: SKN2526SSOB00120
राज.संवाद/सी/25/4691 निदेशक प्रसार शिक्षा

**कार्यालय नगर निगम, उदयपुर**
टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001
दुरभाष स. 0294-2421255, 2420013, Helpline no. 0294-2426262 वेबसाइट www.udaipurmc.org
क्रमांक : निविजा / 2025–26 / ई –12 दिनांक :– 19.06.2025
**(ई-भुगतान) बोली आमन्त्रण सूचना संख्या – ई 12/2025–26**
नगर निगम कार्यालय उदयपुर द्वारा विभिन्न विकास कार्यो हेतु कुल राशि रु0 111.50 लाख के कुल 08 कार्यो हेतु इच्छुक निविदादाताओं से निर्धारित निविदा प्रपत्र में ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया के तहत निविदा आमंत्रित की जाती है निविदा के कार्य संख्या 01 की प्रारम्भ तिथी 20.06.2025 एवं अंतिम तिथि 25.06.2025 दोपहर 02.00 बजे तक तथा निविदा खुलने की तिथी 25.06.2025 दोपहर 02.00 बजे पश्चात रहेगी तथा कार्य संख्या 02 से 08 तक के कार्यो की प्रारम्भ तिथि 20.06.2025 एवं अंतिम तिथि 30.06.2025 तथा निविदा खुलने की तिथी 01.07.2025 रहेगी निविदा से संबंधित अन्य समस्त विवरण इंटरनेट साईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखे जा सकते है।
UBN No. UNP2526WSOB00044
राज.संवाद / सी / 25 / 4733 अधीक्षण अभियन्ता नगर निगम, उदयपुर

**कार्यालय नगर पालिका मण्डल, चाकसू**
क्रमांक न.पा.चा. / स्टोर / 2025 / 2068 दिनांकः 16.06.2025
**ई–निविदा सूचना संख्या 05/2025–26**
पालिका द्वारा पत्रांक न.पा.चा. / स्टोर / 2025 / 1937 दिनांक 10.06.2025 द्वारा जारी ई–निविदा सूचना संख्या 05 / 2025–26 में नगर पालिका चाकसू की ओर से निम्न कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में नगर पालिका चाकसू में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों एवं अन्य विभागो के संबंधित "A" "AA" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं स्वायत्त शासन विभाग में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदको से, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, उनके निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन–लाईन बोली आमंत्रित की गई है जिसमें संषोधन करते हुए सूचित किया जाता है कि नगर पालिका चाकसू की ओर से निम्न कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में नगर पालिका चाकसू में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों एवं अन्य विभागो के संबंधित "A" "AA" व "B" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं स्वायत्त शासन विभाग में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदको से, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, उनके निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्युरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन–लाईन बोली आमंत्रित की जाती है। बोली फार्म एवं ई–बोली से सम्बन्धित विवरण व शर्ते वेब साईट www.sppp.rajasthan.gov.in & http://www.eproc.rajsthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

| S. No | UBN No. |
|---|---|
| 1 | DLB2526WSOB07775 |

राज.संवाद / सी / 25 / 4706 अधिशाषी अधिकारी

**जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड**
प्रभास्मि शशि सूर्ययोः
कार्यालय संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग) पुराना पॉवर हाऊस, बनीपार्क, जयपुर
टेलीफैक्स : 0141 - 2201489, ई-मेलः zcejz@jvvnl.org
**ई-निविदा सूचना**
ई–निविदा दो भागों में (तकनीकी–वाणिज्यिक), जयपुर डिस्कॉम के जेपीडीसी दक्षिण सर्किल के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत सहायक अभियंता (एचटीएम) दूदू के अधीन नए 33 / 11 केवी चकवाडा जीएसएस के निर्माण का कार्य टीएन–127 (UBN : VVN2526WSOB00120) एवं सहायक अभियंता (एचटीएम) वाटिका के अधीन नए 33 / 11 केवी चंदेल कलां जीएसएस के निर्माण का कार्य टीएन–128 (UBN : VVN2526WSOB00121) के तहत एआरसी 2023 पर योग्य निविदादाताओं से श्रम दर पर आमंत्रित किये जाते है। निविदादाता सम्पूर्ण निविदा संबंधित दस्तावेज ई–प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर दिनांक 03.07.2025 से डाउनलोड कर सकते है। निविदायें ऑनलाईन ई–पोर्टल पर दिनांक 17.07.2025 को सांय 05:00 बजे तक ही स्वीकार की जावेगी । निविदा संबंधी जानकारी कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम की वेब साईट www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://www.sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त की जा सकती है।
राज.संवाद/सी/25/4681 जेपीआर - 3014 (2025) संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

**नगरपालिका मण्डल, रतनगढ़ (राजस्थान)**
क्रमांक–निर्माण शाखा / निविदा / 2025 / 1037–39 दिनांक : 20.06.2025
**निविदा सूचना**
नगर पालिका रतनगढ़ की और से नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजिकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र मे ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से ऑन लाईन निविदाऐ आमंत्रित की जाती है जो दिनांक 23.06.2025 से दिनांक 06.07.2025 शाम 6 बजे तक अनुसार डाऊनलोड तथा अपलोड एंव दिनांक 07.07.2025 को सांय 5 बजे खोली जायेगी। समस्त कार्यो के लिए धरोहर राशि कार्य की अनुमानित लागत पर नगर पालिका रतनगढ़ में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 1/2 प्रतिशत राशि एवं अन्य विभागो में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 2 प्रतिशत राशि का डी.डी. अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रतनगढ़ के नाम व रूपये 500 / – का चालान "M.D. RISL Jaipur" के नाम जयपुर में देय से ऑन लाईन निविदा खोलने से पूर्व नगर पालिका रतनगढ़ में प्रस्तुत करना होगा।
निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट www.sppp.raj.nic.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।
NIB code- DLB2526A2626
UBN :- DLB2526WSOB08416, DLB2526WSOB08419, DLB2526WSOB08422, DLB2526WSOB08429, DLB2526WSOB08434, DLB2526WSOB08436, DLB2526WSOB08438, DLB2526WSOB08440, DLB2526WSOB08442, DLB2526WSOB08443, DLB2526WSOB08444, DLB2526WSOB08445, DLB2526WSOB08446, DLB2526WSOB08447, DLB2526WSOB08448, DLB2526WSOB08455, DLB2526WSOB08456, DLB2526WSOB08457, DLB2526WSOB08458, DLB2526WSOB08459, DLB2526WSOB08460, DLB2526WSOB08461, DLB2526WSOB08462, DLB2526WSOB08463, DLB2526WSOB08464, DLB2526WSOB08465
अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका रतनगढ़
राज.संवाद / सी / 25 / 4718

राजस्थान सरकार
**कार्यालय अधिशाषी अभियंता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य**
राजकीय जनाना चिकित्सालय परिसर, मोरी चार बाग, भरतपुर 321 001 (राज.)
eemhbharatpur@gmail.com, ee-mh-bharatpur@gov.in, Mob. 9602097030
क्रमांक-M&H/2025-26/656 दिनांक : 09.06.2025
**निविदा सूचना संख्याः 12/2025-26**
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत विभिन्न कार्य जिला भरतपुर में रू. 147.65 लाख के निर्माण कार्य हेतु राजस्थान सरकार के समकक्ष उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में सिविल कार्यों हेतु पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.org. http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता है।

| S.No. | Name of work | Amount | UBIN NO |
|---|---|---|---|
| 1 | Internal Electrification work at BPHU Sarmathura Distt Dholpur | 16.80 | MHS2526WSOB01789 |
| 2 | Internal Electrification work at BPHU Suroth Distt. Karauli | 16.80 | MHS2526WSOB01790 |
| 3 | Internal Electrification work at BCMO Office Pahadi Distt Deeg | 11.00 | MHS2526WSOB01791 |
| 4 | Internal Electrification work at BPHU Pahadi Distt. Deeg | 16.80 | MHS2526WSOB01792 |
| 5 | Internal Electrification work at PHC Bedam Distt Deeg | 11.75 | MHS2526WSOB01793 |
| 6 | Internal Electrification work at PHC Jalalpur Distt Deeg | 11.75 | MHS2526WSOB01794 |
| 7 | Internal Electrification work at PHC Hatheni Distt Bharatpur | 11.75 | MHS2526WSOB01795 |
| 8 | Construction of one room & other work at CHC Gudachandrajee Distt. Karauli | 40.00 | MHS2526WSOB01796 |
| 9 | Internal Electrification work at BCMO Office Saipau Distt Dholpur | 11.00 | MHS2526WSOB01797 |

(एल. के. अग्रवाल) अधिशाषी अभियंता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, भरतपुर
DIPR/C/8287/2025

# कांग्रेसी नेता सिर्फ सोशल मीडिया तक सिमटे, हमारी सरकार के डेढ़ साल के कार्यों ने कांग्रेस के 5 सालों को पीछे छोड़ा : मुख्यमंत्री

## डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नारा राष्ट्र की एकता और अखंडता का प्रतीक : भजनलाल शर्मा

- पंचायत से लेकर संसद तक कांग्रेस ने विचारधारा को छोड़ा तो हुई बड़ी गर्त : मुख्यमंत्री
- डॉ. मुखर्जी राष्ट्रभक्ति, सांस्कृतिक चेतना और राजनीतिक शुद्धिकरण के प्रेरणास्त्रोत : मदन राठौड़

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर सोमवार को प्रदेश कार्यालय में आयोजित श्रद्धाजंलि कार्यक्रम को संबोधित किया।

-कार्यालय संवाददाता-

**जयपुर।** मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कांग्रेसी नेताओं के सोशल मीडिया पर किए जा रही पोस्ट पर चुटकियां लेते हुए कहा कि कांग्रेसी नेता सिर्फ सोशल मीडिया तक सिमट कर रह गए। कांग्रेसी कहते है कि सीएम रूकते नहीं , जबकि मैं कहता हूं कि होटलों में रूकने के लिए तो कांग्रेसी ही काफी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि कुछ लोग कह रहे है बिजली नहीं आ रही, मुझे बता तो दो कहा नहीं आ रही, मैं डेढ़ साल का हिसाब और आप अपना पुराना पाँच का हिसाब लेकर आ जाना बता दूँगा। मैंने डेढ़ साल में तुम्हारे पाँच सालों को पीछे छोड़ दिया है।

भजनलाल शर्मा ने यह बातें सोमवार को भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर प्रदेश कार्यालय में आयोजित श्रद्धाजंलि कार्यक्रम में कही।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के 5 साल में बिजली उत्पादन, घरेलु और कृषि कनेक्शन जारी करने के आंकड़ों की तुलना हमारी सरकार के 1.5 साल में किए गए कार्य से करें तो वस्तुस्थिति स्पष्ट हो जाएंगी। कांग्रेसी ट्विट करते है जबकि हमारी सरकार धरातल पर काम कर रही है। कांग्रेस ने हमेशा भेदभाव की राजनीति की और गरीबी हटाओ का नारा देकर गरीबों को लूटा, जबकि भाजपा की विचारधारा 'राष्ट्र प्रथम' की है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि आज का दिन केवल स्मरण का नहीं, प्रेरणा का दिन है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नारा दिया एक देश में दो विधान, दो निशान नहीं चलेंगे, वह कोई राजनीतिक नारा नहीं था, बल्कि राष्ट्र की एकता और अखंडता का प्रतीक था और भारत की आत्मा की पुकार था। उन्होंने कहा कि जनसंघ की स्थापना कर वैकल्पिक राजनीतिक विचारधारा को जन्म देने वाली 14 लोगों की पार्टी आज 14 करोड़ कार्यकर्ताओं का संगठन बनकर विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने राष्ट्रवाद को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। जहां हुए बलिदान मुखर्जी, वो कश्मीर हमारा है का नारा आज भी जीवंत है। कश्मीर से धारा 370 हटाने की उनकी प्रतिबद्धता को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साकार किया।

राम मंदिर निर्माण हो या अनुच्छेद 370 का समाप्त होना, यह सब उनकी दूरदर्शी सोच और बलिदान का परिणाम है। मुख्यमंत्री ने सभी कार्यकर्ताओं से आव्हान किया कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों के भारत को साकार करने के लिए हम सबको मिलकर कार्य करना होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत का जो संकल्प लिया गया है, उसे हम सभी को पूरा करना होगा।

हमारी सरकारें गरीब, महिला, किसान और युवा के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं। कांग्रेस की इसी गरीबों को लूटने वाली नीति के चलते जो पार्टी पंचायत से लेकर संसद तक थी, वह राष्ट्रवाद से हार गई। भाजपा राष्ट्र के लिए समर्पित विचारधारा की पार्टी है। भाजपा समर्पित कार्यकर्ताओं की फौज है, जो सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचा रही है। हम संगठन और सेवा- दोनों क्षेत्रों में समान रूप से सक्रिय हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भाजपा कल से पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय पखवाड़ा का आयोजन करेगी। इसमें अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुँचाया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रदेश की डबल इंजन सरकार ने बजट में 5 हजार गांवों को बीपीएल मुक्त करने के लिए घोषणा की थी। इस बजट घोषणा के क्रियान्वयन में भाजपा सरकार ने 300 करोड़ का बजट जारी किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कार्यक्रम के बाद प्रत्येक कार्यकर्ताओं से मुलाकात की।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि डॉ. मुखर्जी राष्ट्रभक्ति, सांस्कृतिक चेतना और राजनीतिक शुद्धिकरण के प्रेरणास्त्रोत हैं। उनका जीवन एक विचार, एक उद्देश्य और एक समर्पण की मिसाल है। मुखर्जी जी का परिवार स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा था। राष्ट्रवाद की भावना उन्हें विरासत में मिली। बंगाल विभाजन के समय उन्होंने आंदोलन किया, विधानसभा से इस्तीफा दिया और निर्दलीय चुनाव जीतकर लोगों की आवाज बने। मुखर्जी जी स्वतंत्र भारत की पहली सरकार में मंत्री बने, परंतु जब उन्होंने सरकार में तुष्टीकरण और सांस्कृतिक अपमान देखा तो इस्तीफा दे दिया। उस समय कश्मीर में पाकिस्तान समर्थित कबायली हमला हुआ। कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने भारत में विलय की इच्छा जताई, पर प्रधानमंत्री नेहरू ने समय तक नहीं दिया। परिणामस्वरूप आधा कश्मीर पाक अधिकृत हो गया। मुखर्जी को यह स्वीकार नहीं था कि भारत में दो विधान, दो संविधान और दो निशान हों जबकि कश्मीर भारत का अंग था। उन्होंने इस अन्याय का विरोध किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि नेहरू सरकार निरंकुश थी, शेख अब्दुल्ला से उनके व्यक्तिगत रिश्ते राष्ट्रिहत पर हावी हो गए। विरोध करने वालों को कुचला गया। डॉ. मुखर्जी ने सत्य और राष्ट्रिहत के लिए मंत्री पद त्याग किया। उन्होंने बताया कि जनसंघ की स्थापना मुखर्जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी के साथ मिलकर की थी। पहले ही चुनाव में पार्टी ने 3 सांसद और 23 विधायक जीतकर राजनीतिक विकल्प के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कश्मीर में लागू विशेष कानूनों के तहत भारत के नागरिकों को बिना अनुमति प्रवेश नहीं मिलती थी। यह डॉ. मुखर्जी को मंजूर नहीं था। उन्होंने बिना अनुमति कश्मीर जाने का संकल्प लिया और 1953 में 23 जून को उनके बलिदान की खबर आई। उनकी मृत्यु संदेहास्पद थी, लेकिन सरकार ने जांच तक नहीं करवाई। मात्र 51 वर्ष की उम्र में एक राष्ट्रभक्त की मृत्यु हुई।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ डॉ. मुखर्जीजी के बलिदान की गाथा बताते हुए भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि डॉ. मुखर्जी के लगाए हुए पौधे को अटल जी ने सींचा और आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वह वटवृक्ष बन गया है। मोदी जी ने धारा 370 हटाकर कश्मीर को भारत का पूर्ण अंग बनाया। यह डॉ. मुखर्जी के बलिदान को सच्ची श्रद्धांजलि है। कार्यक्रम के अंत में प्रदेश अध्यक्ष ने सभी कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे डॉ. मुखर्जी के विचारों और सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाएं और उनके सपनों के भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

इस दौरान उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी, प्रेमचंद बैरवा, कैबिनेट मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी, अरूण चतुर्वेदी, कार्यक्रम संयोजक नाहर सिंह जोधा, जिलाध्यक्ष अमित गोयल, विधायक गोपाल शर्मा, बालमुकुंदाचार्य, कैलाश वर्मा, संभाग संयोजक शैलेंद्र भार्गव, जिला संयोजक संजय जैन, भाजपा नेता रवि नैय्यर, चंद्र मोहन बटवाडा उपस्थित रहे।

# बर्लिन यात्रा के दौरान देवनानी ने किये वेदांत दर्शन

राजस्थान विधानसभाध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बर्लिन यात्रा के दौरान स्वामी बनेशानंद से भेंट की।

- यूरोप में भारतीय अध्यात्म का आलोक : देवनानी

**जयपुर।** विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी बर्लिन मे सोमवार को रामकृष्ण मिशन केंद्र के बेलूर मठ गए । उन्होंने वेदांत गेसेल शाफ्ट संस्था के प्रतिष्ठित केंद्र का अवलोकन किया।

बेलूर मठ रामकृष्ण मिशन का आध्यात्मिक केंद्र है। इस अवसर पर उन्हें स्वामी बनेशानंद से भेंट की । दोनों के मध्य सनातन, आध्यात्मिक और भारतीय संस्कृति पर संवाद हुआ। देवनानी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन के इस यूरोपीय केंद्र में अद्वैत वेदांत, योग और ध्यान के माध्यम से भारतीय दर्शन का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। यह केंद्र न केवल बौद्धिक चिंतन का स्थल है, बल्कि यह मानवता की सेवा और आत्म-जागरूकता को समर्पित एक प्रकाश-स्तम्भ के रूप में कार्य कर रहा है। वासुदेव देवनानी और स्वामी बनेशानंद ने वेदांत दर्शन, भारतीय संस्कृति के वैश्विक स्वरूप और आधुनिक युग में अध्यात्म की आवश्यकता जैसे गूढ़ विषयों पर चर्चा की । इस संवाद को श्री देवनानी ने आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण और जीवन-दृष्टि को व्यापक बनाने वाला बताया। इस अवसर पर देवनानी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा और रामकृष्ण मिशन का कार्य भारत की आत्मा को वैश्विक मंच पर मुखर करता है। अन्य देशों में यह केंद्र भारतीयता की दिव्य ज्योति को विश्वभर में प्रज्ज्वलित कर रहे हैं। यह केंद्र भारत और यूरोप के बीच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुल के रूप में एक महत्वपूर्ण है। श्री देवनानी ने इस केंद्र को आध्यात्मिक तीर्थ बताया, जहाँ विचार, साधना और सेवा के त्रिवेणी संगम के दर्शन होते हैं।

# 'बीते दो दिनों में 16.85 लाख मिनी किट बांटे'

**जयपुर।** कृषि विभाग ने अचानक सप्ताहभर पहले आये मानसून से निपटने के लिए और किसानों की मदद करने के लिए शुरू करी गई नई मुहिम लागू करी है, जिसके तहत खाद और बीज की मिनी किट बांटी जानी है।

इस मुहिम को लागू करने के लिए एसीएस लेवल पर ली गई रिव्यू मिटिंग के अनुसार प्रदेश में पिछले दो दिनों में16.85 लाख मिनी किट बांटे गये हैं। हालांकि रिव्यू मिटिंग में बताया गया कि कृषि विभाग का लक्ष्य था कि 24.5 लाख किट बांटे जायें।

एससीएस संदीप वर्मा की रिव्यू मिटिंग में सामने आया डीडवाना-कुचामन, बीकानेर, चूरू, जैसलमेर, गांधीनगर,, टोंक, फलौदी, जालोर, और पाली जिलों में विभाग के अफसरों द्वारा मिनी किट बांटने की मुहिम में ढिलाई बरती गई थी जिसके फलस्वरूप यहां मौजूद अफसरों पर कार्रवाई की जा सकती है। हालांकि रिव्यू मिटिंग में सामने आया कि मिनी किट बांटने की मुहिम में दो दिन में 45 प्रतिशत से बढ़कर 70 प्रतिशत उछाल आया।

**खोया पाया**

प्रेमनगर विकास समिति (रजि. नं. 81/82-83) का मूल रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट/संविधान खो गया है मिलने पर सूचित करें-अनिल कुमार बोहरा, अध्यक्ष प्रेमनगर विकास समिति 9414304420

DA का मूल ओरिजिनल पट्टा अतुल पारीक बाबूलाल पारीक S-56, 57 बैंक ऑफिसर कैम्पस ब्लॉक जयपुर का मूल पट्टा गुम हो गया है मिलने पर सम्पर्क करे 9351366542

**नाम परिवर्तन**

मेरे पुत्र का नाम अनिकेत गौत्तम था, अब उसका नाम मैंने दर्श गौत्तम रख लिया है भविष्य में उन्हें दर्श गौत्तम पुत्र विजय कुमार शर्मा के नाम से ही जाना पहचाना जावे। 7568291101

I have changed my name from Rafai Saimabanu Sidikbhai to Saima Mubin Raza W/o Mubin Raza R/o Flat No. C-222, Rama Haritage, Central Spine, Vidhyadhar Nagar, Jaipur. For all purpose.

I Mathiya Gaura D/o Shivraj Gaura and W/o Manga Ram R/o Ward No-1, Junawa Ki Dhani, Bhadwa, Nagaur, Parbatsar, Rajasthan - 341501, have changed my name to Manisha

# संदेश नायक को डी.आई.पी. आर. कमिश्नर तथा अर्चना सिंह को शासन सचिव का अतिरिक्त जिम्मा

- आई.ए.एस. अभय कुमार को इंदिरा गांधी नहर बोर्ड का अध्यक्ष तथा शिखर अग्रवाल को रीको अध्यक्ष बनाया
- ज्ञात रहे कि रविवार रात को राज्य सरकार ने 62 आई.ए.एस. अफसरों को तबादला करने के साथ 21 आई.ए.एस. को अतिरिक्त कार्यभार सौंपने के आदेश जारी किए थे।

**जयपुर (कासं)।** राज्य सरकार ने वर्ष 2011 बैच के आई.ए.एस. अफसर संदेश नायक को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विशिष्ट सचिव के पद के साथ-साथ सूचना एवं जनसंपर्क विभाग राजस्थान (डी.आई.पी. आर. ) के आयुक्त और विशिष्ट शासन सचिव के पद की अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंपी है। इसके साथ ही 2008 बैच की आई.ए.एस. अर्चना सिंह को भी सूचना एवं जनसंपर्क विभाग राजस्थान के शासन सचिव के पद का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा गया है। वे फिलहाल सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग राजस्थान में शासन सचिव के पद पर भी सेवाएं दे रहीं है।

ज्ञात रहे कि रविवार रात को राज्य सरकार ने 62 आई.ए.एस. अफसरों को तबादला करने के साथ 21 आई.ए.एस. को अतिरिक्त कार्यभार सौंपने के आदेश जारी किए थे।

इस आदेश के मुताबिक वरिष्ठ आई.ए.एस. अभय कुमार को इंदिरा गांधी नहर बोर्ड जयपुर के अध्यक्ष तथा शिखर अग्रवाल को रीको के अध्यक्ष पद की अतिरिक्त जिम्मेदारी दी गई।

इसी प्रकार भास्कर सावंत को न्याय विभाग और सैनिक कल्याण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव, अजिताभ शर्मा को राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लि. के अध्यक्ष, आलोक गुप्ता को राजसिको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के पद का अतिरिक्त कार्यभार भी सौंपा गया।

इसी प्रकार राजेश कुमार यादव को राजस्थान पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष, वैभव गालरिया को जयपुर मेट्रो के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा राजस्थान मैट्रो रेल कॉर्पोरेशन लि. के प्रबंधक निदेशक, डॉ. देवाशीष पृष्टि को राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष, नवीन जैन को वित्त (बजट) विभाग राजस्थान जयपुर के शासन सचिव, कृष्ण कुणाल को संस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान के शासन सचिव, डॉ. जोगाराम को प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय, जन अभियोग, निराकरण, मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग राजस्थान के शासन सचिव के पद का अतिरिक्त जिम्मा सौंपा गया है।

इसके अलावा रोहित गुप्ता को राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लि. के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कन्हैयालाल स्वामी को देवस्थान विभाग उदयपुर के आयुक्त, शक्ति सिंह राठौड़ को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर के प्रशासक, रूक्मणि रियार को राजस्थान पर्यटन विकास निगम जयपुर के प्रबंध निदेशक, सिद्वार्थ सिहाग को राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लि. के प्रबंध निदेशक, चिन्मयी गोपाल को उद्यानिकी राजस्थान के आयुक्त के पद का अतिक्ति कार्यभार सौंपा गया।

इसी तरह सीताराम जाट को माध्यमिक शिक्षा विभाग बीकानेर एवं पदेन अतिरिक्त राज्य परियोजना निदेशक (वरिष्ठ) समग्र शिक्षा अभियान के निदेशक तथा रिशव मंडल को राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम राजस्थान के प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त चार्ज सौंपा गया।

# "व्हीकल टोटल लॉस" का परिवाद खारिज

**जयपुर ।** राज्य उपभोक्ता आयोग ने "टोटल वाहन लॉस" के एक मामले में क्षतिपूर्ति राशि दिलवाने से इनकार करते हुए ऐसा परिवाद खारिज कर दिया, जिसमें ना तो बीमा कंपनी ने वाहन के एक्सीडेंट की जगह देखी और ना कंपनी अफसरों को दुर्घटनाग्रस्त वाहन का निरीक्षण कराया। आयोग के न्यायिक सदस्य निर्मल सिंह मेडतवाल, सुरेन्द्र सिंह व सदस्य करुणा जैन ने आदेश में कहा कि परिवादी ने प्रेशर प्रैक्टिस के जरिए क्लेम पास कराना चाहा है, जबकि उसका वाहन टोटल लॉस नहीं हुआ है। ऐसे में बीमा कंपनी परिवादी को किसी तरह का क्लेम देने के लिए जिम्मेदार नहीं है। आयोग ने यह आदेश मुकेश कुमार का परिवाद खारिज करते हुए दिए। वकील विज्जी अग्रवाल ने बताया कि परिवादी ने श्रीराम जनरल इंश्योरेंस कंपनी सहित अन्य के खिलाफ परिवाद दायर कर टोटल वाहन लॉस का क्लेम मांगा था। परिवाद में कहा कि उसने बीमा कंपनी से अपनी कार का बीमा करवाया था। जिसकी अवधि 13 मई 2017 से 12 मई 2018 थी। इस दौरान 10 अगस्त 2017 की रात उसके वाहन का भीलवाडा जिले में एक्सीडेंट हो गया। इस पर उसने बीमा कंपनी से क्लेम मांगा। बीमा कंपनी के सर्वेयर ने 12.13 लाख रुपए का नुकसान बताया, जबकि परिवादी के सर्वेयर ने टोटल वाहन लॉस बताते हुए 28.58 लाख रु. मांगे।

# ऐसे भी फर्जी आवेदक उम्र महज 29 वर्ष पर 11 विषयों में एम.ए. उत्तीर्ण

**जयपुर ।** राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के अन्तर्गत प्राप्त ऑनलाइन आवेदनों की जांच में बिना योग्यता आवेदन करने के कई प्रकरण सामने आए हैं। ऐसा ही एक मामला वर्तमान में आयोजित की जा रही प्राध्यापक एवं कोच प्रतियोगी परीक्षा-2024 से जुड़ा है।

प्रकरण में मनीषा कटारा पुत्री नाथू कटारा निवासी भीमखोरा, ग्राम टांडीकलां, तहसील कुशलगढ़, जिला बांसवाडा ने स्वयं को 11 विषयों में एमए बताते हुए इन विषयों के पदों हेतु आवेदन किए है।

आयोग द्वारा इस संबंध में अभ्यर्थी मनीषा कटारा के ऑनलाइन आवेदन में दिए गए रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर संपर्क कर अवगत कराने का प्रयास भी किया पर अभ्यर्थी ने न तो फोन उठाया न ही पुनः संपर्क का प्रयास किया। अब आयोग महज 29 वर्ष की आयु में 11 विषयों में डिग्री की असत्य घोषणा कर आवेदन करने के इस प्रकरण में व्यक्तिगत सुनवाई कर अभ्यर्थी के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही करेगा।

अभ्यर्थी ने राजनीति विज्ञान, इतिहास, बॉयोलोजी, केमिस्ट्री, सोशियोलॉजी, इकोनोमिक्स, पंजाबी, ड्राइंग, होम साइंस, राजस्थानी म्यूजिक विषय में एम.ए. होने का दावा किया है। आयोग सचिव ने बताया कि आयोग की भर्ती परीक्षाओं में ऑनलाइन आवेदन करते समय आवेदक द्वारा यह घोषणा की जाती है, कि आवेदन में दी गई सभी जानकारी स्वज्ञान और विश्वास के अनुसार सही है।

जानकारी यदि झूठी या गलत होने का पता चलता है तो आयोग मेरे विरूद्ध कार्यवाही कर सकता है। वर्तमान में आयोग 24 विषयों के कुल 2202 पदों के लिए 5.83 लाख अभ्यर्थियों हेतु राज्य के 21 शहरों में 904 परीक्षा केंद्रों पर प्राध्यापक एवं कोच प्रतियोगी परीक्षा का आयोजन कर रहा है।

इन विभिन्न विषयों की परीक्षा तिथि का निर्धारण इस प्रकार करने का प्रयास किया जाता है, कि विभिन्न विषयों में आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों की परीक्षा तिथियों में टकराव न हो। ऐसे में बिना वांछित योग्यता आवेदन करने वाले असत्य आवेदकों के कारण परीक्षा कार्यक्रम का निर्धारण करने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

आयोग द्वारा इस प्रकार के अपात्र आवेदकों को आवेदन विदड्रा करने का अवसर भी दिया गया था। इस पर भी कई अपात्र आवेदकों द्वारा ऑनलाइन आवेदन विदड्रा नहीं किए गए हैं। अब आयोग द्वारा ऐसे अभ्यर्थियों को चिन्हित कर उनके विरूद्ध कार्यवाही आरंभ कर दी गई है।

# डॉ. अरूण गर्ग को झुंझुनूं कलेक्टर लगाया

जयपुर। राज्य सरकार ने सोमवार को आदेश जारी कर वर्ष 2014 बैच के आई.ए.एस. अफसर डॉ. अरूण गर्ग का तबादला झुंझुनूं कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट के पद पर किया है। फिलहाल डॉ. गर्ग भू-प्रबंध आयुक्त एवं पदेन निदेशक, बन्दोबस्त, राजस्थान जयपुर के पद पर सेवाएं दे रहे थे।

**आम सूचना:** जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

क्रमांक: जविप्रा/उपा/जोन-7/2025/डी-1103 दिनांक: 12.06.25

आवेदक द्वारा ऑनलाईन आवेदन क्रमांक 219873 दिनांक 15.05.2025 को निम्नांकित भूखण्ड का **लीज होल्ड से फ्री होल्ड पट्टा** जारी करने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

| आवेदक का नाम | मूल आवंटी/लीज धारक का नाम | भूखण्ड संख्या व क्षेत्रफल | गृ.नि.स.स./निजी खातेदारी/जविप्रा योजना | योजना का नाम | सेवा जिस के लिए आवेदन किया गया | कार्यवाही हेतु प्रस्तुत दस्तावेज |
|---|---|---|---|---|---|---|
| श्री चन्द्रशेखर भंसाली पुत्र स्व.श्री द्वारकेश जैन | श्री अनिल कुमार सागर पुत्र श्री गंगाराम | E-640 44.17 वर्गगज | जविप्रा | वैशाली नगर | लीज होल्ड से फ्री होल्ड | लीज होल्ड पट्टा, जरिये पंजीकृत विक्रय पत्र एक से अधिक बेचान। |

उक्त भूखण्ड का आवेदक के पक्ष में **लीज होल्ड से फ्री होल्ड पट्टा** जारी करने पर किसी व्यक्ति, वारिस एवं संस्था को आपत्ति हो तो मय साक्ष्य के इस सूचना की प्रकाशन तिथि से 7 दिवस के भीतर कार्यालय समय में उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें,अन्यथा आपत्ति प्रस्तुत नहीं करने की दशा में उक्त भूखण्ड की नियमानुसार कार्यवाही कर दी जावेगी।

उपायुक्त जोन-07, जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर।

**आम सूचना** सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य अनिल गुप्ता के स्वामित्व का खरीदशुदा भूखण्ड मकान संख्या 91/143, सेक्टर 9, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर जिसका मूल आवंटन पत्र संख्या 4220, दिनांक 16.10.1992, मूल संशोधित आवंटन पत्र संख्या 4831, दिनांक 09.11.1992, है जो मूल रूप से राजस्थान आवासन मंडल द्वारा श्रीमती अलका सबनानी के नाम से जारी किये गये है। जिसे मेरे अभिभाष्य की खरीदशुदा सम्पत्ति है। जो कि मेरे अभिभाष्य के उक्त निवास स्थान मकान संख्या 91/143, सैक्टर 9, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर से उपरोक्त वर्णित दस्तावेजात कहीं गुम हो गये है। काफी खोजबीन के बाद भी उक्त दस्तावेज नहीं मिल रहे है जिसकी रिपोर्ट LR No. 2803771/2025, दर्ज करा दी गयी है।

मेरे अभिभाष्य ने उक्त सम्पत्ति के सम्बन्ध में SBI से लोन हेतु आवेदन किया है। अगर किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो वह प्रकाशन तिथी से 07 दिवस में सम्पर्क करे तथा जिस किसी व्यक्ति को भी उक्त दस्तावेज मिले, उनसे अनुरोध है कि वे नीचे दिए गए नंबर पर मुझसे संपर्क करें।

भवदीय
उमेश शर्मा (एडवोकेट)
मो. 9828124570

**तीये की बैठक**

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता है **श्रीमति सीतादेवी** धर्मपत्नी स्व.श्री प्रहलाददासजी भारद्वाज टोडारायसिंह का देवलोकगमन 22.06.2025 हो गया। जिनकी तीये की बैठक 24.06.2025 को सायं 3:00 से 4:00 बजे स्थान- राधे-कृष्णा पैराडाईस, गणेश वाटिका-3 वाटिका रोड़ मीणा चौक के पास, जयपुर पर रखी गई है।

**शोकाकुलः** स्नेहलता, प्रेमलता (पुत्री), गौरव (पुत्र), गोपाललाल, भरतलाल (भ्राता), कैलाशचंद, सत्यनारायण, मुकेश, विनोद (जवाई) एवं समस्त परिवार 9928047621

**नम्बर मिलाइए 9587884433**

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

# बेवजह काम अटकाने वाले अफसरों पर होगी सख्त कार्रवाई : दिया कुमारी

## जयपुर जोन की समीक्षा बैठक में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने जताई नाराजगी

- उन्होंने लंबित कामों की टाइमलाइन तय करने के आदेश भी दिए
- बाढ़ नियंत्रण के लिए राज्य और जिला स्तर पर कंट्रोल रूम स्थापित
- उपमुख्यमंत्री ने साफ कहा कि, आगामी पांच सप्ताह में अधिकारी फील्ड विजिट की रिपोर्ट पेश करें, यह बताएं कि कहां निरीक्षण किया और क्या खामियों को सुधारा गया।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सोमवार को सचिवालय में जयपुर जोन प्रथम एवं द्वितीय की परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

-कार्यालय संवाददाता-

**जयपुर।** उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सोमवार को शासन सचिवालय में जयपुर जोन प्रथम एवं द्वितीय की सड़क व अन्य परियोजनाओं की प्रगति की गहन समीक्षा की। बैठक में उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी लंबित कार्यों की स्पष्ट समय सीमा तय करें और उन्हें निर्धारित समय में पूरा करें। उन्होंने चेतावनी दी कि जो अधिकारी कार्यों को अनावश्यक रूप से लंबित रखेंगे, उन पर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

बैठक में जयपुर शहर, जयपुर ग्रामीण, सीकर, झुंझुनूं, अलवर, कोटपूतली-बहरोड़ जिलों की सड़क परियोजनाओं की माइक्रो लेवल पर समीक्षा की गई। उपमुख्यमंत्री ने वन, भूमि विवाद अथवा अन्य कारणों से अटकी परियोजनाओं को शीघ्र गति देने हेतु संबंधित विभागों के साथ समन्वय स्थापित करने के निर्देश दिए।

उपमुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि आगामी पांच सप्ताह में अधिकारी फील्ड विजिट की रिपोर्ट पेश करें, यह बताएं कि कहां निरीक्षण किया गया और वहां मिली खामियों में कितना सुधार किया गया। साथ ही, बैठक में दिए गए निर्देशों पर कितनी प्रगति हुई, इसकी विस्तृत रिपोर्ट पेश की जाए।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने अधिकारियों से सीधे सवाल किया - जब आपके पास जलभराव या बाढ़ की सूचना आती है, तो आप क्या एक्शन लेते हैं? उन्होंने अधिकारियों को एक्टिव मोड में रहने और सभी आवश्यक संसाधनों की पूर्व तैयारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अधिकारियों ने जानकारी दी कि राज्य स्तर पर कंट्रोल रूम स्थापित किया जा चुका है और प्रत्येक जिला मुख्यालय पर भी नियंत्रण कक्ष क्रियाशील है। प्रत्येक एईएन कार्यालय में 1000 भरे हुए व 5000 खाली मिट्टी के कट्टे, उपखंड स्तर पर कोल्ड मिक्स मटेरियल के 50 बैग तथा अन्य आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। इसके अलावा, रेट कॉन्ट्रैक्ट भी किया जा चुका है ताकि भारी बारिश या बाढ़ की स्थिति में सड़कों की मरम्मत तुरंत की जा सके।

बैठक में एनएचएआई, एनएच, आरएसआरडीसी, राजस्थान स्टेट हाईवे अथॉरिटी, पेचेबल व नॉन पेचेबल सड़कों सहित मिसिंग लिंक परियोजनाओं की भी विस्तृत समीक्षा की गई। उपमुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि जनसुविधा से जुड़े कार्यों में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

# स्नेह मिलन व सम्मान समारोह 30 जून को

**जयपुर।** प्रगतिशील मंच पूर्व विधायक संघ पूर्व की भांति इस वर्ष भी सोमवार 30 जून को प्रातः 10 बजे कॉस्टिट्यूशन क्लब ऑफ राजस्थान, जयपुर में स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह आयोजित करेगा। इसमें उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, राज्यपाल हरिभाऊ बागडे, केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, विधान सभा अध्यक्ष वासूदेव देवनानी व विपक्ष के नेता टीकाराम जूली तथा संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल सहित अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थित रहेगी।

पूर्व में भी संघ द्वारा पूर्व विधायक के उच्च संवैधानिक पदों पर आसीन होने पर एवं प्रदेश के राज्यपालों का सम्मान करते आ रहे है इसी क्रम में इस वर्ष भी महामहिम उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड, राज्यपाल हरिभाऊ बागडे और केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी का सम्मान समारोह पूर्व विधायक संघ करेगा । इस समारोह में पूर्व विधायकों की समस्याओं का समाधान करने के लिये मंथन किया जायेगा और आने वाले समय में पूर्व विधायकों का सम्मान राजकीय अधिकारी दिधिवत और वास्तविक रूप से करते रहे इस पर भी चर्चा की जायेगी।

**न्यायालय जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग जयपुर तृतीय जयपुर**

(फार्म नं.3)

**परिवाद अन्तर्गत धारा 35 उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019**

परिवाद संख्या 40/24

**हैप्पी शर्मा बनाम विनीत व अन्य**

की विनित पुत्र नामालूम, कार्यालय पता- जी-89, रायसर प्लाजा इन्दिरा बाजार, जयपुर (राज.)

आपको एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि हैप्पी शर्मा पुत्र त्रिवेणी श्याम शर्मा, निवासी -7 गोवर्धन धाम कॉलोनी, गोनेर रोड, जयपुर (राज.)

....ने इस जिला उपभोक्ता आयोग के समक्ष एक परिवार पेश किया है, जिसकी प्रतिलिपि संलग्न है।

आपको एतद्द्वारा निर्देशित किया जाता है इस नोटिस की प्राप्ति के 30 दिवस के अन्दर अपना पक्ष प्रस्तुत करें एवं अपने बचाव में पेश करने वाले समस्त साक्ष्य एवं दस्तावेजों को पेश करें।

आपको पुनः सूचित किया जाता है कि प्रकरण की सुनवाई दिनांक 30/7/25 को 10 बजे दिन में रखी गयी है। यदि आप स्वयं अथवा अपने अधिकृत प्रतिनिधि द्वारा उपस्थित होने में असफल रहे तो उपर्युक्त सुनवाई की तारीख पर परिवाद का एकपक्षीय निर्णय कर दिया जायेगा।

रीडर
जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग
मोहर
जयपुर-तृतीय, जयपुर

मैने अंतर्राष्ट्रीय हॉकी को अलविदा कह दिया है। हालांकि, मैं घरेलू और लीग मैच खेलता रहूंगा।

- ललित कुमार उपाध्याय

भारतीय हॉकी खिलाड़ी, अपने संन्यास के बारे में बोलते हुए।

# खेल जगत

**आज का खिलाड़ी**

## नीरज चोपड़ा

भारत के स्टार जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने कहा कि वह ओस्ट्रावा में मंगलवारको हने वाली गोल्ड स्पाइक एथलेटिक्स मीट को लेकर काफी उत्साहित हैं। दरअसल, नीरज इस साल अपने अंतिम लक्ष्य टोक्यो में वर्ल्ड चैंपियनशिप में टॉप स्थान हासिल करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। नीरज ने पिछले हफ्ते 88.16 मीटर थ्रो के साथ जूलियन वेबर को हराकर पेरिस डायमंड लीग जीती थी। दो बार के ओलंपिक मेडलिस्ट ने कहा कि चेक गणराज्य के महान खिलाड़ी जान जेलेजनी के साथ उनके कोच और उनकी दृढ़ संकल्प शक्ति के कारण उन्हें अच्छे नतीजों का भरोसा है।

**क्या आप जानते हैं ?...** टी20 इंटरनेशनल में सबसे तेज फिफ्टी जड़ने का रिकॉर्ड नेपाल केदीपेंद्र सिंह ऐरीके नाम दर्ज है। भारत की ओर से इस फॉर्मेट में सबसे कम गेंदों में फिफ्टी पूरी करने वाले प्लेयर युवराज सिंह हैं।

## आइडियल मल्टी स्पोर्ट्स क्लब जीती

जयपुर, 23 जून। अंडर - 16 अरावली कप में आइडियल मल्टी स्पोर्ट्स क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 40 ओवर में 203 रन 7 विकेट के नुकसान पर बनाए। सुमित शर्मा ने सर्वाधिक 126 रनों का योगदान दिया ! बालाजी क्रिकेट अकादमी की ओर से विशाल चौधरी ने चार विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी बालाजी क्रिकेट अकादमी 31 ओवर में 116 रन पर ऑल आउट हो गए। श्रेयांश ने सर्वाधिक 51 रनों का योगदान दिया। आइडियल मल्टी स्पोर्ट्स क्लब की ओर से नक्ष ने तीन और कान्हा ने दो विकेट लिए। मैन ऑफ द मैच सुमित शर्मा को चुना गया।

## पृथ्वी शॉ ने अन्य राज्य से खेलने की एमसीए से मांगी अनुमति

मुम्बई, 23 जून। भारतीय टीम के पूर्व बल्लेबाज पृथ्वी शॉ ने मुंबई क्रिकेट संघ (एमसीए) को एक पत्र लिखकर आगामी घरेलू सत्र किसी अन्य राज्य की ओर से खेलने की अनुमति मांगी है। शॉ ने अपने पत्र में लिखा, मैं इस अवसर पर मुंबई क्रिकेट संघ (एमसीए) का दिल से धन्यवाद करना चाहता हूं, जिन्होंने मुझे प्रतिनिधित्व करने का अवसर और समर्थन दिया। एमसीए सेटअप का हिस्सा होना मेरे लिए सम्मान और सौभाग्य की बात रही है और यहां मुझे जो अनुभव और मंच मिला उसके लिए मैं बेहद आभारी हूं। मेरे करियर के इस मोड़ पर मुझे एक अन्य राज्य से पेशेवर क्रिकेट खेलने का एक शानदार अवसर मिला है, मुझे लगता है कि यह अवसर एक क्रिकेटर के रूप में मेरे विकास और प्रगति में सहायक होगा। उन्होंने पत्र में यह भी लिखा, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि मुझे अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) जारी करें, ताकि मैं आधिकारिक रूप से आगामी घरेलू सत्र में नए राज्य के लिए खेल सकूं। उन्होंने कहा कि मैंने विचार-विमर्श और एमसीए के प्रति पूरे सम्मान के साथ यह निर्णय लिया है। वह इस संघ द्वारा वर्षों से दिए गए मार्गदर्शन और मंच के लिए हमेशा आभारी रहेंगे।

## झिन्यू को हराकर वोंड्रोसोवा ने जीता बर्लिन ओपन का खिताब

बर्लिन, 23 जून। चोटों से ग्रस्त चेक गणराज्य की टेनिस खिलाड़ी मार्केटा वोंड्रोसोवा ने दो साल बाद वापसी करते हुए चीन की वांग झिन्यू को हराकर बर्लिन ओपन में महिला एकल का खिताब जीत लिया। पूर्व चैंपियन वोंड्रोसोवा ने रविवार खेले गये फाइनल मुकाबले में चीन की वांग झिन्यू पर 7-6 (12-10) 4-6 6-2 से जीत दर्ज की। वोंड्रोसोवा को पहले सेट के कड़े टाईब्रेक में उन्हें छह सेट प्वाइंट भी बचाने पड़े। वोंड्रोसोवा ने निर्णायक मैच में दबदबा बनाया और डबल ब्रेक हासिल कर अपने करियर का तीसरा खिताब जीता। विम्बलडन शुरु होने से एक सप्ताह मिली इस जीत से वोंड्रोसोवा का आत्मविश्वास बढ़ा है। मैच के बाद वोंड्रोसोवा ने कहा कि प्रशंसकों की बड़ी संख्या को देखकर अच्छा लगा। मैंने इस सप्ताह टेनिस और समर्थकों का वास्तव में आनंद लिया। इस बीच, ब्रिटिश युगल की नंबर वन खिलाड़ी ओलिविया निकोल्स ने स्लोवाकिया की टेरेजा मिहालिकोवा के साथ युगल वर्ग का खिताब जीता। उन्होंने फाइनल मुकाबले में इटली की शीर्ष वरीयता प्राप्त सारा इरानी और जैस्मीन पाओलिनी की जोड़ी को 4-6, 6-2, 10-6 से हराया।

## किर्स्टी कोवेंट्री ने आईओसी अध्यक्ष का पदभार किया ग्रहण

लॉजेन, 23 जून। जिम्बाब्वे की किर्स्टी कोवेंट्री ने सोमवार को स्विटजरलैंड में आयोजित एक समारोह में अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। अध्यक्ष पदक संभालने के साथ पूर्व ओलंपिक तैराकी चैंपियन कोवेंट्री 131 साल पुराने वैश्विक खेल निकाय का नेतृत्व करने वाली पहली अफ्रीकी महिला बन गई है। उनका कार्यकाल आठ साल होगा, जिसमें चार साल का विस्तार भी शामिल है। आईओसी अध्यक्ष का पदभार संभालने के बाद कोवेंट्री ने ओलंपिक आंदोलन की प्रशंसा करते हुए इसे 'प्रेरणा देने वाला मंच, जीवन बदलने वाला मंच और उम्मीद लाने वाला मंच' बताया।

## जिरी लहेच्का को हराकर कार्लोस अल्कराज ने जीता क्वींस क्लब खिताब

लंदन, 23 जून। टेनिस में शीर्ष वरीयता प्राप्त कार्लोस अल्काराज ने चेक गणराज्य के जिरी लहेच्का को हराकर क्वींस क्लब चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम कर लिया। रविवार रात खेले गये मुकाबले में स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी अल्काराज और चेक गणराज्य के लहेच्का को 7-5, 6-7(5), 6-2 से हराकर चैंपियनशिप अपने नाम कर ली। अल्काराज का यह दूसरा क्वींस क्लब खिताब है।

### इंग्लैंड के खिलाफ भारत की बढ़त 370 रन

# इंग्लैंड के खिलाफ ऋषभ पंत ने सेंचुरी ठोक कर रचा इतिहास, ऐसा करने वाले पहले भारतीय बने

लीड्स, 23 जून। भारत ने एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के पहले टेस्ट में इंग्लैंड को जीत के लिए 371 रन का टारगेट दिया है। जवाब में इंग्लैंड ने दूसरी पारी में बिना नुकसान के 13 रन बना लिए हैं। टीम जीत से 358 रन दूर हैं। जैक क्रॉली और बेन डकेट क्रीज पर हैं।

लीड्स के हेडिंग्ले क्रिकेट स्टेडियम में सोमवार को 90/2 के स्कोर से खेलना शुरू किया था। केएल राहुल (137 रन) और ऋषभ पंत (118 रन) ने चौथे विकेट के लिए 195 रनों की साझेदारी करके 300 पार पहुंचा दिया। लेकिन इस साझेदारी के टूटते ही पूरी भारतीय टीम 365 रन पर पवेलियन लौटे गई। टीम ने आखिरी 5 विकेट 31 रन बनाने में गंवा दिए। शार्दूल ठाकुर (4 रन), मोहम्मद सिराज (शून्य) और जसप्रीत बुमराह (शून्य) 349 के स्कोर पर आउट हुए। इंग्लैंड से ब्रायडन कार्स और जोश टंग ने 3-3 विकेट झटके। शोएब बशीर को 2, क्रिस वोक्स और बेन स्टोक्स को एक-एक विकेट मिला। पहली पारी में इंग्लैंड 465 और भारत 471 रन पर ऑलआउट हो गई थी। भारत को पहली पारी में 6 रन की बढ़त मिली थी।

टीम इंडिया के उपकप्तान ऋषभ पंत का बल्ला जमकर गरज रहा है। उन्होंने एक के बाद एक करके दोनों पारियों में शतक जड़कर इतिहास रच दिया है। पंत टेस्ट इतिहास में ऐसे पहले भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज बन गए हैं जिन्होंने एक मैच की दोनों पारियों में सेंचुरी लगाई हो। वो पहले ही रेड-बॉल फॉर्मेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले भारतीय विकेटकीपर बन चुके हैं। पंत ने पहली पारी में 134 रन बनाए तो दूसरी पारी में वह 120 गेंदों में अपना शतक पूरा कर लिया है।भारतीय टीम ने अपना पहला ऑफिशियल टेस्ट मैच साल 1932 में खेला था। अब तक 93 साल के भारतीय टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में कोई भी विकेटकीपर बल्लेबाज टेस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक नहीं लगा पाया है। अब पंत ऐसा करने वाले एकमात्र भारतीय विकेटकीपर बन गए हैं। पंत ऐसे पहले भारतीय बल्लेबाज भी बन गए हैं जिन्होंने इंग्लैंड में खेलते हुए किसी टेस्ट मैच की दोनों पारियों में शतक लगाया है। बता दें कि, पंत ऐसे कुल सातवें भारतीय बल्लेबाज हैं जिन्होंने एक टेस्ट मैच की दो पारियं में शतक ठोका है। सुनील गावस्कर ने 3 बार ऐसा किया है जबकि राहुल द्रविड़ ने 2 बार, विजय हजारे, रोहित शर्मा, विराट कोहली, अंजिक्य रहाणे भी एक-एक बार ऐसा कर चुके हैं। अब इन दिग्गजों में पंत का नाम भी शामिल हो गया है।

## केएल राहुल ने सलामी बल्लेबाज के रूप में जड़ा अपना छठा शतक

लीड्स, 23 जून। भारतीय टीम के सलामी बल्लेबाज केएल राहुल ने सोमवार को हेडिंग्ले में इंग्लैंड के खिलाफ शतक बनाने के साथ भारतीय टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में अपना नाम दर्ज करा लिया। उन्होंने एशिया के बाहर बतौर सलामी बल्लेबाज अपना छठा टेस्ट शतक लगाया। वह यह कारनामा करने महान सुनील गावस्कर के बाद दूसरे बल्लेबाज है।

राहुल ने अपने खास अंदाज में शतक लगाया। उन्होंने कवर ड्राइव के जरिए अपना शतक पूरा किया। यह शॉट इतना सटीक और प्रभावशाली था कि स्वीपर कवर खिलाड़ी के पास भी कोई मौका नहीं था। भारतीय ओपनर ने जश्न मनाते हुए दूसरा रन लिया। उन्होंने ड्रेसिंग रूम का अभिवादन किया और मैदान में तालियां गूंज उठीं।

केएल राहुल अब एशिया के बाहर किसी भारतीय सलामी बल्लेबाज द्वारा बनाए गए दूसरे सबसे ज्यादा टेस्ट शतक (छह) बनाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। वह सुनील गावस्कर (15) से पीछे हैं और वीरेंद्र सहवाग (चार) से आगे हैं। केएल राहुल के टेस्ट करियर का यह नौवां शतक है। यह इंग्लैंड में उनका तीसरा टेस्ट शतक है। इससे पहले उन्होंने 2018 में ओवल में149 रन और लॉर्ड्स में 2021 में 129 रन बनाये थे।

## इशान किशन ने इंग्लैंड में मचाया तूफान, डेब्यू मैच में जड़े 12 चौके और 1 छक्का

भारतीय क्रिकेट टीम शुभमन गिल की कप्तानी में इस वक्त इंग्लैंड में 5 मैचों की टेस्ट सीरीज खेल रही है, लेकिन टेस्ट टीम से दूर चल रहे भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज इशान किशन इंग्लैंड में अभी काउंटी चैंपियनशिप में नॉटिंघमशायर के लिए खेल रहे हैं। इशान ने काउंटी चैंपियनशिप में इस टीम के लिए डेब्यू किया और फिर यॉर्कशायर के खिलाफ पहली पारी में बेहतरीन बल्लेबाजी की।भारत के लिए 2 टेस्ट मैच चुके इशान किशन पहली बार काउंटी चैंपियनशिप में खेल रहे हैं। उन्हें नॉटिंघमशायर ने दो मैच के लिए साइन किया है। यॉर्कशायर के खिलाफ इशान किशन को प्लेइंग इलेवन में जगह मिली। और पहली पारी में बल्लेबाजी के लिए उन्हें छठे नंबर पर भेजा गया। इशान ने मैदान पर आते ही तेज गति से रन बनाना शुरू कर दिया और विपक्षी गेंदबाजों पर जमकर बरसे।

## भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने बेल्जियम को 4-3 से पराजित किया

नई दिल्ली, 23 जून। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने आखिर में अपना जलवा दिखाकर रविवार को एफआईएच प्रो लीग के यूरोपीय चरण में बेल्जियम को 4-3 से पराजित करके अपनी पहली जीत दर्ज की और इस तरह से लगातार सात मैच में हार का सिलसिला खत्म किया। सुखजीत सिंह (21वें, 35वें), अमित रोहिदास (36वें) और हरमनप्रीत सिंह (59वें) के गोल की मदद से भारत ने अपने अभियान का जीत के साथ सकारात्मक अंत किया। भारत इस तरह से आयरलैंड से 14 अंक आगे रहते हुए आठवें स्थान पर रहा। बेल्जियम के लिए आर्थर डी स्लोवर (8वें), थिब्यू स्टॉकब्रोक्स (34वें) और ह्यूगो लैबोचेरे (41वें) ने गोल किए। सुखजीत और दिलप्रीत सिंह के लिए यह यादगार मैच था, जिन्होंने अपने 100 अंतरराष्ट्रीय मैच पूरे किए। भारत को हालांकि इस मैच में भी संघर्ष करना पड़ा। जब अंतिम हूटर बजने में सिर्फ़ दो मिनट बचे थे और स्कोर 3-3 से बराबर था तब भारत ने बेल्जियम के सर्कल के अंदर सेंध लगाई और फिर रेफरल मांगा। फ़ैसला भारत के पक्ष में गया और हरमनप्रीत सिंह ने पेनल्टी स्ट्रोक को गोल में बदलकर अपनी टीम की जीत सुनिश्चित की।

बेल्जियम ने हालांकि शुरू में भारत पर दबाव बनाया। आर्थर डी स्लोवर ने आठवें मिनट में उसकी तरफ से पहला गोल किया। इस तरह से बेल्जियम ने पहले क्वार्टर में शानदार प्रदर्शन करते हुए 1-0 से बढ़त हासिल की। कप्तान हरमनप्रीत की मौजूदगी से भारतीय टीम का मनोबल बढ़ा हुआ दिखा। उसने शुरू से आक्रमण पर ध्यान दिया तथा दूसरे क्वार्टर में अच्छा खेल दिखाया। भारत को 20वें मिनट में पहला पेनल्टी कार्नर मिला लेकिन हार्दिक सिंह का शॉट रोक दिया गया।

## वेस्टइंडीज की महिला टीम ने दक्षिण अफ्रीका को छह विकेट से हराया

केव हील, 23 जून। कप्तान हेली मैथ्यूज (एक विकेट/नाबाद 63) की हरफनमौला प्रदर्शन के दम पर वेस्टइंडीज की महिला टीम ने दूसरे टी-20 मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को चार गेंदे शेष रहते छह विकेट से हराया दिया है। इस जीत के साथ ही वेस्टइंडीज ने तीन मैचों की सीरीज में 1-1 से बराबरी कर ली है।

वेस्टइंडीज की महिला टीम ने रविवार रात खेले गये मुकाबले में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत खराब रही और वेस्टइंडीज के गेंबदाजी आक्रमण के उसके बल्लेबाज खुलकर नहीं खेल सके और नियमित अंतराल पर विकेट गवांते रहे। दक्षिण अफ्रीका ने एनरी डार्कसन (नाबाद 21), नडीन डी क्लर्क (20), कप्तान लॉरा वुलफार्ट (16), करबो मेसो (नाबाद 14), तेजमिन ब्रिट्स (14) रनों के योगदान से निर्धारित 20 ओवरों में छह विकेट पर 113 रन का स्कोर खड़ा किया। वेस्टइंडीज की ओर से ऐफी फ्लेचर और करिश्मा रामहैरक ने दो-दो विकेट लिये। जे. क्लैक्सटन और हेली मैथ्यूज ने (एक-एक) विकेट लिये।

इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की किआना जोसेफ और हेली मैथ्यूज की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट लिए 41 रन जोड़े। आठवें ओवर में अयाबोंगा खाका ने किआना जोसेफ (17) को आउटकर दक्षिण अफ्रीका को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद वेस्टइंडीज की पारी लडखड़ा गई और उसने एक के बाद एक अपने तीन और विकेट गवां दिये। एस. हेक्टर (तीन), शमैन कैंपबेल (सात) और शिनेल हेनरी (तीन) रन बनाकर आउट हुई। हालांकि इस दौरान हेली मैथ्यूज एक छोर थामे रन बनाती रही। उन्होंने जैनिलिया ग्लास्गो के साथ पांचवें विकेट लिए 39 रनों की अविजित साझेदारी कर 19.2 ओवर में चार विकेट पर 116 रन बनाकर अपनी टीम को जीत दिला दी।

दक्षिण अफ्रीका के लिए एन म्लाबा ने दो विकेट लिये। एम क्लास और अयाबोंगा खाका ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

## वेस्ट जोन राष्ट्रीय एवं यूथ राज्य स्तरीय बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता 27 से जोधपुर में

जयपुर, 23 जून। राजस्थान बॉल बैडमिंटन संघ के अध्यक्ष डॉ. राजपाल शर्मा के अनुसार, भारतीय बॉल बैडमिंटन महासंघ एवं राजस्थान बॉल बैडमिंटन संघ के संयुक्त तत्वाधान में 8 वेस्ट जोन बॉल बैडमिंटन राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 27 जून से 29 जून 2025 तक पाबूपुरा, जोधपुर में किया जा रहा है। उक्त प्रतियोगिता में पश्चिम क्षेत्र के राज्यों- महाराष्ट्रा, गुजरात, गोवा, दमन द्वीप एवं राजस्थान की टीमें भाग लेगी।

राजस्थान बॉल बैडमिंटन संघ के सचिव शौकत अली मंसूरी के अनुसार उक्त 8 वेस्ट जोन बॉल बैडमिंटन राष्ट्रीय प्रतियोगिता के साथ ही राजस्थान बॉल बैडमिंटन संघ एवं जोधपुर जिला बॉल बैडमिंटन संघ के संयुक्त तत्वाधान में युथ राज्य स्तरीय बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025-26 का आयोजन दिनांक 27 जून से 29 जून 2025 तक वही पाबूपुरा, जोधपुर में किया जा रहा है। प्रतियोगिता में बालक वर्ग में 24 एवं बालिका वर्ग में 16 जिलों की टीमें भाग लेने जा रही है।

## चोटिल रत्नायके दूसरे टेस्ट से हुए बाहर

### बंगलादेश के खिलाफ श्रीलंका की टीम घोषित

कोलंबो, 23 जून। श्रीलंका के तेज गेंदबाज मिलन रत्नायके बाएं हिस्से में खिचाव के कारण बंगलादेश के खिलाफ होने वाले दूसरे टेस्ट मैच से बाहर हो गये है।

बुधवार से शुरु होने वाले दूसरे टेस्ट मैच में मेजबान टीम आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 चक्र में अपनी पहली सीरीज जीतने का प्रयास करेगी। श्रीलंका के तेज गेंदबाज मिलन रत्नायके को गॉल टेस्ट में बाएं हिस्से में खिंचाव के कारण बंगलादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट से बाहर कर दिया गया है।

मिलन रत्नायके की जगह बाएं हाथ के तेज गेंदबाज विश्व फर्नांडो और स्पिनर दुनिथ वेलालागे को टीम में शामिल किया है। फर्नांडो ने 27 टेस्ट में 79 विकेट लिये है। वर्ष 2022 में पाकिस्तान के खिलाफ पदार्पण करने वाले वेलालागे ने मात्र एक टेस्ट मैच खेला है।

श्रीलंका की टीम:- धनंजय डी सिल्वा (कप्तान), पथुम निसांका, ओशादा फर्नांडो, लाहिरू उदारा, दिनेश चांदीमल, कुसल मेंडिस, कामिंडु मेंडिस, पसिंदु सोरियाबंदरा, सोनल दिनुशा, दुनिथ वेलालागे, पवन रथनायके, प्रभात जयसूर्या, थारिंडु रत्नायके, अकिला धनंजय, असिथा फर्नांडो, कसुन राजिथा, विश्व फर्नांडो, इसिता विजेसुंदरा।

### राजस्थान राज्य जूनियर बालक फुटबॉल प्रतियोगिता 2025

## जयपुर ने गत चैंपियन हनुमानगढ़ को 3 -0 से हराया

सीकर, 23 जून। राजस्थान राज्य जूनियर बालक फुटबॉल प्रतियोगिता के दूसरे दिन आज जयपुर ने अपने प्री क्वार्टर फाइनल मैच में पिछली बार की विजेता हनुमानगढ़ को एक तरफा मुकाबले में 3 - 0 से पराजित कर दिया।

जयपुर जिला फुटबॉल संचालन समिति के वरिष्ठ सदस्य अब्दुल जब्बार ने बताया कि जयपुर टीम ने पिछले मैच की तरह इस मैच में भी शुरुआत से ही आक्रामक रुक अपनाया रखा और मैच के चौथे मिनट में ही जयपुर के मध्यक्रम के खिलाड़ी अतिवीर धोखा ने 18 यार्ड से शानदार सूट मार के टीम के लिए पहला गोल किया।

मध्यांतर तक जयपुर की टीम ने हनुमानगढ़ की टीम पर कुछ और अच्छे आक्रामक हमले किए लेकिन गोल करने में असफल रहे। मध्यांतर तक जयपुर टीम 1 - 0 से आगे रही मध्यांतर के बाद जयपुर टीम ने विंग लाइन पर खेलने की रणनीति के तहत हनुमानगढ़ की रक्षापंक्ति पर दबाव बनाना शुरू किया जिसके फलस्वरूप मैच के 35 मिनट में जयपुर को कॉर्नर मिला। कॉर्नर किक पर जयपुर के फारवर्ड पंक्ति के युवराज ठाकुर ने शानदार हेड से टीम का दूसरा और अपना पहला गोल किया।

मैच के अंतिम 10 मिनट में जयपुर की टीम ने हनुमानगढ़ को पूरी तरह दबाव में ले लिया और मैच खत्म होने से 6 मिनट पहले युवराज ठाकुर ने एकाकी प्रयास से शानदार मैदानी गोलकर अपना दूसरा और टीम का तीसरा गोल कर दिया। अंततः मैच जयपुर ने 3 - 0 के स्कोर से जीत कर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई।

जयपुर जिला फुटबॉल संचालन समिति के सदस्य डॉ दिलीप सिंह चुंडावत ने बताया कि कल क्वार्टर फाइनल में जयपुर का मुकाबला झुंझुनू से होगा।

संचालन समिति के सदस्य हितेश शर्मा, मनोज शर्मा और सेबी फिलिप्स ने टीम को शानदार जीत पर बधाई दी।

### // 6वीं राज्य स्तरीय किकबॉक्सिंग चैंपियनशिप //

## अंकित ने जीता स्वर्ण पदक

जयपुर, 23 जून। 6वीं राज्य स्तरीय किकबॉक्सिंग चैंपियनशिप 2025-26 में अंकित श्रीवास्तव ने अंडर 79 किलो वर्ग किक लाइट इवेंट में स्वर्ण पदक जीतकर जयपुर का गौरव बढ़ाया।

यह प्रतियोगिता जयपुर में आयोजित की गई थी। इसी चैंपियनशिप में जयपुर के अन्य खिलाड़ियों ने भी शानदार प्रदर्शन किया। मंत्रा ने अंडर 60 किलो वर्ग में स्वर्ण पदक, योगांश ने अंडर 87 किलो वर्ग में रजत पदक, और उन्नत ने अंडर 84 किलो वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त किया।

अंकित इससे पहले भी राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान का नाम रोशन कर चुके हैं। उन्होंने वाको इंडिया सीनियर किकबॉक्सिंग नेशनल चैंपियनशिप 2024-25 में अंडर 75 किलो वर्ग लो किक इवेंट में कांस्य पदक प्राप्त किया था। यह चैंपियनशिप मापुसा, गोवा में आयोजित की गई थी। वे लंबे समय से कोच शुभम् शर्मा के निर्देशन में नियमित और कठोर प्रशिक्षण ले रहे हैं।

इस बेहतरीन प्रदर्शन के आधार पर अंकित श्रीवास्तव ने अब रायपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित होने वाली वाको इंडिया सीनियर नेशनल किकबॉक्सिंग चैंपियनशिप 2025 के ट्रायल्स के लिए क्वालीफाई कर लिया है। गौरतलब है कि वाको इंडिया किकबॉक्सिंग फेडरेशन को भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा 2 जुलाई 2021 को राष्ट्रीय खेल महासंघ के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी।

# 'साइबेरियन क्रेन जैसे प्रवासी पक्षियों को पुन: राजस्थान लाने की योजना बनायें'

## मुख्यमंत्री भजनलाल ने राज्य वन्य जीव मंडल की बैठक में वन्य जीव प्रबंधन कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग के निर्देश दिये

जयपुर, 23 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि वन्यजीव संसाधन राज्य की गौरवशाली पहचान है। वन्यजीवों का संरक्षण एवं संवर्धन करना हम सभी की अहम जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार वन्यजीवों तथा जैव विविधता के लिए प्राथमिकता से कार्य कर रही है। शर्मा ने वन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि वन्यजीव प्रबंधन के कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग हो। इसमें जनता की अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित की जाए।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर राज्य वन्यजीव मण्डल की 15वीं बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र में वन्यजीव पारिस्थितिकी तंत्र के मुख्य घटक होते हैं। ऐसे में वन्यजीवों के महत्व को लेकर व्यापक स्तर पर जागरुकता पैदा की जानी चाहिए। उन्होंने अधिकारियों को प्रदेश के वन्यजीव संसाधनों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विशेषज्ञों से वन्यजीव संरक्षण के संबंध में सुझाव लिए जाएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वन हमारी विरासत हैं। प्रकृति का संरक्षण पुण्य समान है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए छोटे-छोटे विषयों पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने लैन्टाना उन्मूलन की

*मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को राज्य वन्यजीव मण्डल की 15वीं बैठक की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों को प्रदेश के वन्यजीव संसाधनों का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए।*

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने मानसून में 10 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने कहा, वन विभाग हर गाँव व हर शहर में वन मित्र और वृक्ष मित्र बनाये।**

एसओपी का अनुमोदन किया। साथ ही, जूली फ्लोरा को अभियान चलाकर जन सहयोग से हटाने और उनके स्थान पर अन्य पौधे लगाने के निर्देश दिए।

शर्मा ने कहा कि साइबेरियन क्रेन जैसे प्रवासी पक्षियों को पुन: राजस्थान में लाने के लिए कार्ययोजना तैयार की जाए। उन्होंने स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा वन्यजीव क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने संस्था प्रतिनिधियों से कहा कि वन्यजीव संरक्षण और संवर्धन की दिशा में आगे बढ़ें, राज्य सरकार पूर्ण रूप से आपके साथ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने मानसून में 10 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को कहा कि हर गांव-हर शहर में वन मित्र और वृक्ष मित्र बनाए जाएं, उनके सामूहिक प्रयासों से ही प्रदेश पर्यावरण संरक्षण की दिशा में और आगे बढ़ेगा। राज्य वन्यजीव मंडल द्वारा पूर्व में सर्कुलेशन के माध्यम से अनुमोदित 65 वन्यजीव स्वीकृति प्रकरणों का अनुमोदन किया गया। साथ ही, राज्य वन्यजीव मंडल ने सोमवार की बैठक में 24 प्रस्तावों का अनुमोदन किया। इससे वन्यजीव संरक्षण व संवर्धन के कार्यों को गति मिलेगी।

इस दौरान, राज्य के वन्य क्षेत्रों में विकास से सम्बंधित विभिन्न प्रस्तावों सहित अन्य विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा सहित, समिति सदस्य, विभागीय अधिकारी और विषय विशेषज्ञ उपस्थित थे।

# यूट्यूबर ज्योति की न्यायिक हिरासत 14 दिन और बढ़ी

हिसार, 23 जून। पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार यूट्ययूबर ज्योति मल्होत्रा की सोमवार को हिसार न्यायालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेशी हुई, जिसके बाद ज्योति को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

अब मामले की अगली सुनवाई सात जुलाई को होगी। ज्योति को 16 मई को

- **यूट्यूबर ज्योति, जो पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार की गई थी, की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हिसार कोर्ट में पेशी हुई।**

हिसार पुलिस ने उसके घर से गिरफ्तार किया था। गिरफ्तारी के बाद वह नौ दिन तक पुलिस रिमांड पर रही। फिर 23 जून को कोर्ट ने उसे न्यायिक हिरासत में भेजा था। इससे पहले उसकी बेल याचिका निचली अदालत ने खारिज कर दी थी। ज्योति के वकील कुमार मुकेश का कहना है कि वे अब सेशन कोर्ट में जमानत याचिका दाखिल करेंगे और कानूनी विकल्पों पर विचार कर रहे हैं। उनका कहना है कि ज्योति पर जो धाराएं लगाई हैं वे गलत हैं। वहीं कुमार मुकेश का कहना है कि हालांकि पुलिस की चार्जशीट से पता चलेगा कि पुलिस ने किस आधार पर ज्योति पर कार्रवाई की है।

# ईडी ने महेश जोशी व बेटे के खिलाफ परिवाद पेश किया

## जल जीवन मिशन के 200 करोड़ रूपए के घोटाले से जुड़े प्रकरण में कुल 18 आरोपियों के खिलाफ परिवाद पेश हुआ

जयपुर, 23 जून। जल जीवन मिशन के करीब 900 करोड़ रुपए के घोटाले से जुड़े ईडी प्रकरण में जांच एजेंसी ने ईडी मामलों की विशेष अदालत में पूर्व जलदाय मंत्री महेश जोशी और उनके बेटे रोहित जोशी सहित, कुल 18 आरोपियों के खिलाफ परिवाद पेश किया है।

ईडी के असिस्टेंट डायरेक्टर अंशुल की ओर से पेश परिवाद में पीएमएलए एक्ट की धारा 3 व 4 के तहत आरोप लगाए गए हैं। परिवाद में कहा गया कि सह आरोपियों के जरिए, महेश जोशी तक रिश्वत की राशि पहुंचाई जाती थी। आरोपियों की फर्म से महेश जोशी के बेटे रोहित जोशी की फर्म को भी करीब पचास लाख रुपए का भुगतान किया गया था। आरोपी फर्म ने पूर्णता प्रमाण पत्र के जरिए करोड़ों रुपए के टेंडर का भुगतान लिया है। जब इन प्रमाण पत्रों की जांच की गई तो वे फर्जी निकले।

ईडी ने महेश जोशी और रोहित जोशी के साथ ही, मैसर्स श्री श्याम ट्यूबवेल कंपनी, मैसर्स श्री गणपति ट्यूबवेल कंपनी, संजय बड़ाया, मुकेश पाठक, मायालाल सैनी, राकेश सिंह, प्रदीप कुमार, प्रवीण कुमार अग्रवाल, मलकेत सिंह, विशाल सक्सैना, महेन्द्र प्रकाश सोनी, मैसर्स सुमंगलम लैंडमार्क एलएलपी, हिमांशु

- **परिवाद में कहा गया है कि सह आरोपियों के जरिए महेश जोशी तक रिश्वत की राशि पहुँचाई जाती थी।**
- **आरोपी फर्म ने पूर्णता प्रमाण पत्र के जरिए करोड़ों रूपयों का भुगतान किया। प्रमाण पत्रों की जाँच की गई तो वे फर्जी निकले।**

रावत, नमन खंडेलवाल, तन्मय गोयल और हेमराज गुप्ता के खिलाफ परिवाद पेश किया है।

गौरतलब है कि जल जीवन मिशन घोटाले को लेकर प्रारंभ में एसीबी ने मामला दर्ज कर कई आरोपियों को गिरफ्तार किया था। इसके बाद प्रकरण में कई सौ करोड़ रुपए के लेन- देन का खुलासा होने पर प्रवर्तन निदेशालय ने मामला दर्ज किया था। ईडी ने मार्च, 2024 में महेश जोशी को समन जारी कर तलब किया था। समन जारी करने के करीब एक साल बाद ईडी ने महेश जोशी को पूछताछ के लिए बुलाया और फिर गिरफ्तार कर लिया। अदालत में पेशी के दिन महेश जोशी की पत्नी का निधन हो गया। इस कारण महेश जोशी को दो बार अंतरिम जमानत मिली। तथापि, गत दिनों ईडी मामलों की विशेष अदालत ने महेश जोशी की जमानत अर्जी को खारिज कर दिया। इसके बाद जोशी की ओर से हाईकोर्ट में जमानत याचिका पेश की गई है, जिस पर आगामी दिनों में सुनवाई होनी है।

## सुबोध ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

आई.ए.एस. अखिल अरोड़ा ने जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी एवं भू-जल विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव, तथा वर्ष 1995 बैच के आई.ए.एस. भास्कर आत्माराम सावंत ने भी अतिरिक्त मुख्य सचिव, गृह, गृह रक्षा, जेल एवं राजस्थान राज्य अन्वेषण ब्यूरो एवं पदेन मुख्य सतर्कता आयुक्त, एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग का कार्यभार संभाला।

आई.ए.एस. डॉ. रवि कुमार सुरपुर ने राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अध्यक्ष, तथा वासुदेव मालावत ने आईसीडीएस के निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण किया है।

## नाबालिग से दुष्कर्म ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक मातादीन शर्मा ने बताया कि पीड़िता के पिता ने 11 मई, 2019 को भांकरोटा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि अभियुक्त उनके यहाँ किराए पर रहता था। मातादीन शर्मा की 16 साल की बेटी 6 अप्रैल की रात करीब एक बजे टॉयलेट के लिए उठी थी। इस दौरान अभियुक्त उसे जबरन अपने कमरे में ले गया और दरवाज़ा बंद कर छेड़छाड़ करने लगा। पीड़िता के चाचा ने आवाज़ सुनकर अभियुक्त के कमरे को खुलवाया। अभियुक्त उसे धमकी देकर भाग गया। रिपोर्ट में कहा गया कि बाद में अभियुक्त ने पीड़िता को जबरन मोबाइल फोन दिया और अब फोन पर धमकी देता है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए अदालत ने अभियुक्त के खिलाफ आरोप पत्र पेश किया। सुनवाई के दौरान, पीड़िता ने एफआईआर के तथ्यों को दोहराते हुए अदालत को बताया कि अभियुक्त ने एक रात उसे फोन कर बाहर बुलाया और पास के खाली मकान में ले जाकर दुष्कर्म किया। इसके बाद वह आकर सो गईं। अगले दिन जब अभियुक्त का फोन आया तो चाचा ने उसे फोन पर बात करते हुए देख लिया। इसके बाद मामले की रिपोर्ट दर्ज कराई गई।

## ईरान ने कतर ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

बड़ा असर नहीं हुआ है क्योंकि अमेरिकी पैट्रियट मिसाइल डिफेंस सिस्टम ने ईरानी मिसाइलों को रोक दिया है। कतर की राजधानी दोहा में विस्फोटों की आवाजें सुनाई दींऔर रात के आसमान में प्रक्षेपास्त्र दिखाई दिए। इसके अलावा कतर ने 'नागरिकों, निवासियों, आगंतुकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने' के लिए अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया।( भारतीय दूतावास ने मौजूदा स्थिति को देखते हुए कतर में भारतीय समुदाय से सतर्क रहने और घर के अंदर रहने का आग्रह किया जाता है। कृपया शांत रहें और कतर के अधिकारियों द्वारा दिए गए स्थानीय समाचारों, निर्देशों और मार्गदर्शन का पालन करें। दूतावास हमारे सोशल मीडिया चैनलों के माध्यम से भी अपडेट करता रहेगा। कतर के प्रधानमंत्री के सलाहकार और विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता माजिद अल अंसारी ने ट्वीट किया, कतर राज्य ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड द्वारा अल-उदीद एयर बेस पर किए गए हमले की कडी निंदा करता है।

## अपेक्षित से ही रहे ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

इस बार अनवर ने फिर निर्दलीय के तौर पर चुनाव लड़ा, लेकिन वे कांग्रेस और सीपीएम, दोनों से पीछे चल रहे हैं। शौक़त के पिता आर्यादन मोहम्मद नीलांबुर से आठ बार विधायक रह चुके हैं। केरल और बंगाल में विधानसभा चुनाव अगले वर्ष होंगे।

कांग्रेस की यह जीत पार्टी के लिए संजीवनी साबित हो सकती है, जिसे केरल में वामपंथियों और भाजपा, दोनों से चुनौती का सामना करना है। ज्ञातव्य है कि भाजपा केरल में अपनी पहचान बनाने की कोशिश कर रही है। गुजरात की विसावदर सीट पर आम आदमी पार्टी के इटालिया गोपाल ने भाजपा के किरीट पटेल को 17,554 वोटों से हराया। 2022 में आप ने विसावदर समेत पांच सीटें जीती थीं, लेकिन विधायक भूपेन्द्र भयानी बाद में भाजपा में शामिल हो गए। गुजरात की कड़ी विधानसभा सीट भाजपा ने अपने पास बनाए रखी। यह उपचुनाव भाजपा विधायक करसन सोलंकी के निधन के कारण हुआ थाउत्तर भारत में लुधियाना वेस्ट से आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी संजीव अरोड़ा कांग्रेस के भारत भूषण आशु से 10,000 से अधिक वोटों से आगे रहे।

# प.बंगाल विधानसभा में हंगामा, भाजपा के चार विधायक निलम्बित

## स्पीकर बिमान बनर्जी ने चारों विधायकों को पूरे मानसून सत्र के लिए निलम्बित कर दिया

कोलकाता, 23 जून। पश्चिम बंगाल विधानसभा के अध्यक्ष बिमान बनर्जी ने सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के चार विधायकों को सदन में, कथित तौर पर, अभद्र व्यवहार करने के आरोप में मौजूदा मानसून सत्र के लिए निलंबित कर दिया। इसके विरोध में भाजपा विधायकों ने नारेबाजी करते हुए विधानसभा से बर्हिगमन किया।

निलंबित भाजपा विधायकों में अग्निमित्र पॉल, मुख्य सचेतक शंकर घोष, मनोज ओरांव और दिलीप बर्मन शामिल हैं। उन पर अध्यक्ष का अनादर और सदन में अभद्र व्यवहार करने का आरोप है। आरोप है कि निलम्बित विधायकों ने मार्शल से हाथापाई भी की।

बीजेपी के अन्य विधायक भी हाथापाई में शामिल हो गए। पुरुलिया के विधायक सुदीप मुखर्जी ने कथित तौर पर मार्शलों का कॉलर पकड लिया। हंगामे के दौरान बीजेपी नेता मिहिर गोस्वामी जमीन पर गिर गए, जबकि शंकर उनके बगल में खड़े थे। उनकी आंखों पर लगा चश्मा गिर गया और भीड़ के दबाव के कारण वह टूट गया।

अध्यक्ष ने मार्शल को निलंबित भाजपा विधायकों को सदन से बाहर निकालने का आदेश दिया, जिससे सदन

- **बिमान बनर्जी ने निलम्बित विधायकों पर स्पीकर का अनादर करने का आरोप लगाया और निलम्बित विधायकों को मार्शल द्वारा बाहर ले जाने का आदेश दिया, आरोप है कि सभी भाजपा विधायकों ने इस पर वॉक आउट किया और मार्शल से हाथापाई भी की।**
- **स्पीकर ने कहा, भाजपा विधायक अपनी बात कह कर सदन से चले जाते हैं मंत्री का जवाब नहीं सुनते इसलिए उनके भाषण कार्यवाही में शामिल नहीं किए जाएंगे। इसके बाद हंगामा शुरु हो गया।**

में विपक्ष के नेता सुवेंदु अधिकारी सहित अन्य पार्टी विधायक नाराज होकर कुछ देर तक आसन के पास खड़े रहे और अंत में वे अपने सभी विधायकों को सदन से बाहर ले गए।

जानकारी के मुताबिक, हाथापाई में विधानसभा के कई कार्यकर्ता भी घायल हुए हैं। इस सूची में मार्शल देवव्रत मुखर्जी और डिप्टी मार्शल तन्मय बनर्जी के अलावा, अदिति मुखर्जी, पियाली बाल और रेशमा खातून जैसी महिला कार्यकर्ता भी शामिल हैं। कई लोगों को चोटें आई हैं। उन्हें फर्स्ट ऐड भी मुहैया कराया गया है। जिस समय बीजेपी के चार विधायकों को विधानसभा से बाहर ले जाया गया। उस समय भगवा पार्टी के अन्य विधायक हिंदू विरोधी सरकार अब नहीं चाहिए जैसे नारे लगा रहे थे। सदन के बाहर भाजपा कार्यकर्ता धरना-प्रदर्शन कर रहे थे।

सदन में सुबह उस समय अफरा-तफरी का माहौल रहा, जब भाजपा विधायक अशोक लाहिड़ी ने आसन से पूछा कि पिछले गुरुवार को जब वे बोले थे तो उनके बयान को रिकॉर्ड से क्यों हटा दिया गया।

गौरतलब है कि गुरुवार को अध्यक्ष ने फैसला सुनाया कि चर्चा के दौरान भाजपा विधायकों के भाषणों को रिकॉर्ड से हटा दिया जाए, क्योंकि संबंधित मंत्री के जवाब देने के दौरान विपक्षी विधायक सदन से बाहर चले गए थे।

# प.बंगाल में चुनाव की जीत के जश्न में विस्फोट

कोलकाता, 23 जून। पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में कालीगंज विधानसभा क्षेत्र के मोलंदी इलाके में सोमवार को अज्ञात बदमाशों के एक समूह ने सॉकेट बम फेंका, जिसमें एक नाबालिग लड़की की मौत हो गई।

आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इस क्षेत्र में 19 जून को हुए उपचुनाव के लिए मतगणना चल रही है। गत 19 जून को इस सीट के लिए मतदान हुआ था। आज सुबह आठ बजे से मतगणना

- **कालीगंज विधानसभा सीट में हुए इस विस्फोट में एक छोटी बालिका की मौत हो गई।**
- **मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बालिका की मौत पर दुख जताया तथा दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही के आदेश दिए।**

शुरू हुई थी। सूत्रों के मुताबिक, पीड़िता की मां ने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस के समर्थकों ने अपनी पार्टी के उम्मीदवार अलीफा अहमद की जीत का जश्न मनाने के दौरान सॉकेट बम से विस्फोट किया, जिसमें उनकी पुत्री तमन्ना खातून की मौके पर ही मौत हो गयी। तमन्ना चौथी कक्षा की छात्रा थी। घटना के समय तमन्ना अपनी मां के साथ नहाने के लिए पास के एक जलाशय में जा रही थी। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तमन्ना की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा, कृष्णानगर के बारोचंदगर में हुए विस्फोट में एक नाबालिग किशोरी की मौत पर मैं स्तब्ध और बहुत दुखी हूं। दुख की इस घड़ी में मेरी प्रार्थनाएं और संवेदनाएं परिवार के साथ हैं। पुलिस दोषियों के खिलाफ सख्त और निर्णायक कानूनी कार्रवाई करेगी।

# इज़रायल ने तेहरान की एविन जेल पर हमला किया

- **जवाब में ईरान ने इज़रायल पर कई मिसाइलें दागी**
- **इज़रायल ने कहा कि एविन जेल ईरान में राजनैतिक दमन का प्रतीक है और इज़रायल दमन के सभी केन्द्रों पर हमले करेगा।**
- **जवाबी कार्यवाही में ईरान ने इज़रायल पर 40 मिनट में 6-7 मिसाइलें दागी, हालांकि इस हमले में कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ।**

तेल अवीव/तेहरान, 23 जून। ईरान की राजधानी तेहरान में एविन जेल पर इज़रायली वायुसेना ने हमला किया है। जवाब में ईरान ने भी इज़रायल पर कई हवाई हमले किए।

ईरान इंटरनेशनल के अनुसार, यह हमला जेल के प्रशासनिक, सुरक्षा और अदालत खंडों को निशाना बनाकर किया गया। ज्ञातव्य है कि इस जेल को लंबे समय से राजनीतिक दमन का प्रतीक माना जाता है।

इजरायली हमले में एविन जेल के मुख्य द्वार क्षतिग्रस्त हो गये। फिलहाल, कैदी सुरक्षित हैं। इस्लामिक रिवोल्यूशन गार्ड्स कोर (आईआरजीसी) के आधिकारिक मीडिया तस्नीम समाचार ने बताया कि उत्तरी तेहरान के एविन पड़ोस में एक विद्युत फीडर पर हमला किया गया जिससे इलाके में बिजली की आपूर्ति ठप हो गयी। इजरायली रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज ने आज कहा, अब इजरायली सेना तेहरान के बीचों-बीच ईरानी सरकार के प्रतिष्ठानों और दमन करने वाले कार्यालयों पर जबरदस्त हमला कर रही है। उन्होंने कहा है कि इजरायल पर हर हमले के बदले ईरानी तानाशाह को सज़ा दी जायेगी, और हमारी जवाबी कार्रवाई पूरी ताकत से जारी रहेगी। इजरायली हवाई हमलों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करते हुए ईरान ने सोमवार को इजरायल पर हवाई हमलों की झड़ी लगा दी, जिससे दक्षिणी इजरायल में हजारों इजरायलियों को भूमिगत बंकरों में जाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जबकि एक ईरानी मिसाइल के हमले में बिजली ग्रिड बाधित होने की खबर है।

'द टाइम्स आफ इजरायल' के मुताबिक, हमलों में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है और अधिकांश बुनियादी ढ ांचा सुरक्षित है, लेकिन दक्षिणी इजरायल में बिजली ग्रिड के बाधित होने की सूचना है।

इजरायली रक्षा बलों ने हमले की पुष्टि करते हुए कहा कि ईरान द्वारा 40 मिनट की अवधि में चार श्रृंखलाओं में छह-सात मिसाइलें दागी गईं। इजरायल इलेक्ट्रिक कॉरपोरेशन ने कहा कि बैलिस्टिक मिसाइल दक्षिणी इजरायल में एक 'रणनीतिक बुनियादी ढ ांचा सुविधा' के पास टकराई जिससे क्षेत्र के कई शहरों में अस्थायी रूप से बिजली गुल हो गई। आईडीएफ के मुताबिक, लगभग एक घंटे बाद एक और बैलिस्टिक मिसाइल दागी गई, जिसे सफलतापूर्वक रोक दिया गया और उससे किसी भी प्रकार के जानमाल का कोई नुकसान नहीं हुआ।

## लालू ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

की जांच 24 जून के पूर्वाह्न में की जाएगी। उसी दिन दोपहर तक नामांकन वापस लेने की प्रक्रिया भी पूरी होगी। यदि यादव का नामांकन वैध पाया गया और उन्होंने अपना नाम वापस नहीं लिया तो उन्हें निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया जाएगा। पार्टी की राष्ट्रीय परिषद की बैठक 05 जुलाई को आयोजित की जाएगी, जिसमें इस प्रक्रिया की पुष्टि के साथ औपचारिक रूप से उनके राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने की घोषणा की जाएगी।

# तकनीकी कारणों से एयर इंडिया का विमान वापस दिल्ली उतरा

नयी दिल्ली, 23 जून। एयर इंडिया के विमानों में तकनीकी खराबी की घटनाएँ कम नहीं हो रहीं हैं। सोमवार को दिल्ली से जम्मू जाने वाले एयर इंडिया एक्सप्रेस के विमान में तकनीकी समस्या आने के कारण उड़ान भरने के तुरंत बाद उसे वापस उतारना पड़ा।

एयर इंडिया के एक प्रवक्ता ने आज यहां बताया कि सोमवार 23 जून को दिल्ली से जम्मू के लिए संचालित होने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान आईएक्स 2564 को उड़ान भरने के बाद वापस दिल्ली उतारना पड़ा।

उन्होंने कहा कि तकनीकी समस्या के कारण मूल विमान के दिल्ली लौटने के बाद हमारी दिल्ली-जम्मू उड़ान को संचालित करने के लिए एक वैकल्पिक विमान की व्यवस्था की गई।

## भारत को आशंका है, ईरान ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

या बारूदी सुरंगें बिछाना। ऐसे कदम बाजारों में अस्थिरता ला सकते हैं, खाड़ी की ओर जाने वाले टैंकरों के बीमा का प्रीमियम बढ़ा सकते हैं, और पूरे एशिया की तेल आयात करने वाली अर्थव्यवस्थाओं को झटका दे सकते हैं।

भारत, जो दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है, अपनी कच्चे तेल की ज़रूरतों का 60 प्रतिशत से अधिक खाड़ी क्षेत्र से प्राप्त करता है, जिसमें अधिकांश आपूर्ति होरमुज़ से होकर गुजरती है। थोड़े समय के व्यवधान से भी भारत की अर्थव्यवस्था पर गंभीर असर पड़ सकता है।

ब्रेंट क्रूड की कीमत 100-105 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकती है, जिससे भारत का तेल आयात बिल बढ़ेगा, व्यापार घाटा और रुपया कमजोर होगा, और ईंधन (तेल) की कीमत बढ़ेगी। खुदरा कीमतों में बढ़ोतरी से घरेलू बजट पर दबाव पड़ेगा और सरकार को ईंधन पर उत्पाद शुल्क में कटौती करनी पड़ सकती है, जिससे राजकोषीय संतुलन प्रभावित होगा।

केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने स्थिति को लेकर आश्वासन देने की कोशिश की है, यह बताते हुए कि भारत हाल के वर्षों में ऊर्जा की सप्लाई करने वाले स्रोतों में विविधता लाया है, जिसमें रूस से रियायती दर पर मिलने वाला तेल भी शामिल है, और तेल बेचने वाली कंपनियों के पास भी कई हफ्तों का बफर स्टॉक है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि "ईंधन स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।" लेकिन सरकारी अधिकारी भी यह स्वीकार करते हैं कि तेल और गैस "बेहद संवेदनशील क्षेत्र (चीजें)" हैं तथा इसलिये दीर्घकालिक व्यवधान आर्थिक और रणनीतिक रूप से गहरा संकट ला सकता है।

आर्थिक प्रभाव से परे, भारत को क्षेत्रीय स्तर पर भी कई कमजोरियों का सामना करना पड़ सकता है। खाड़ी देशों में 80 लाख से अधिक भारतीय रहते और काम करते हैं, जिससे किसी भी तरह का तनाव मानवीय संकट का रूप ले सकता है। धन का प्रवाह प्रभावित हो सकता है और आपातकालीन निकासी योजनाएं सक्रिय करनी पड़ सकती हैं। इसके अलावा, भारत के रणनीतिक निवेश, विशेषकर ईरान में चाबहार बंदरगाह, भी प्रभावित हो सकते हैं, जिससे मध्य एशिया तक उसकी पहुंच संकट में पड सकती है। समुद्री असुरक्षा भारत की शिपिंग कंपनियों और गुजरात से केरल तक के पश्चिमी तटीय बंदरगाहों को भी प्रभावित कर सकती है।

राजनयिक स्तर पर भी, नई दिल्ली को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। उसके ईरान और इज़रायल, दोनों से ही रणनीतिक संबंध हैं, और अमेरिका के साथ भी निकटता बढ़ रही है। जैसे-जैसे यह संघर्ष और गहरायेगा, भारत के लिए अपनी संतुलित तटस्थता बनाए रखना कठिन होता जाएगा। कोई भी चूक इन संबंधों में तनाव पैदा कर सकती है, खासकर ऐसे समय में, जब भारत वैश्विक स्तर पर प्रभाव बढ़ाना चाहता है।

हालांकि होरमुज़ स्ट्रेट को औपचारिक रूप से बंद नहीं किया गया है, लेकिन इसके जोखिम सिर्फ काल्पनिक नहीं हैं। खाड़ी क्षेत्र में व्यवधान की केवल चर्चा भर से ही बाजारों में हलचल और कूटनीतिक चिंता उत्पन्न हो सकती है। भारत के लिए यह केवल विदेश नीति का मुद्दा नहीं है, यह एक घरेलू आर्थिक चुनौती है, जो किसी भी समय सामने आ सकती है।

## अमेरिका ने ईरान ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

हैमर के दौरान ईरान के खिलाफ विमानों की उड़ान के लिए अमेरिका द्वारा भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल किया गया था। यह दावा फर्जी है। ऑपरेशन मिडनाइट हैमर के दौरान अमेरिका द्वारा भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल नहीं किया गया था। पीआईबी ने सबूत के तौर पर अमेरिकी सेना के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के अध्यक्ष जनरल डैन केन की प्रेस ब्रीफिंग का लिंक संलग्न किया, जिसमें जनरल डैन केन ने अमेरिकी विमानों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले मार्ग के बारे में स्पष्ट रूप से बताया है।

जनरल डैन केन के अनुसार, शुक्रवार आधी रात से शनिवार सुबह तक, बमों से युक्त सात बी-2 स्पिरिट बमवर्षक स्ट्राइक पैकेज में भारत की सीमा के विपरीत दिशा से पश्चिम की ओर से आये थे। इससे पुष्टि होती है कि भारतीय हवाई क्षेत्र इस मिशन का हिस्सा नहीं था। गौरतलब है कि शनिवार देर रात को अमेरिका द्वारा ईरान के खिलाफ किए गए ऑपरेशन मिडनाइट हैमर में ईरान के फोर्डो, नतांज और इस्फ़हान में स्थित प्रमुख परमाणु ढ ांचों को निशाना बनाया गया। इसमें स्टील्थ बॉम्बर्स और पनडुब्बियों द्वारा दागे गए बंकर-बस्टर बमों सहित, 75 सटीक-निर्देशित हथियारों का इस्तेमाल किया गया। ऑपरेशन के बाद, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे कि एक्स पर कई पोस्ट सामने आए, जिनमें दावा किया गया कि अमेरिकी बमवर्षक विमानों ने भारत के रास्ते ईरान में प्रवेश किया था। इन दावों ने सोशल मीडिया पर इस बात को लेकर उन्माद को जन्म दिया कि भारत ने हमले के लिए अपने हवाई क्षेत्र के इस्तेमाल की अनुमति दी थी। इस बीच, पीएम मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने संतुलित रुख बनाए रखा है और मध्य पूर्व में तनाव को कम करने का आव्हान किया है।( केन्द्र सरकार ने रविवार को सोशल मीडिया पर चल रहे उन दावों और रिपोर्टों का खंडन किया, जिनमें कहा गया था कि अमेरिकी सेना ने शनिवार रात ऑपरेशन मिडनाइट हैमर के दौरान ईरान के परमाणु प्रतिष्ठानों पर हवाई हमले करने के लिए भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल किया था। एक आधिकारिक बयान में प्रेस सूचना ब्यूरो ने इस वायरल पोस्ट को झूठा बताया। हमले के बाद, कई सोशल मीडिया यूजर्स ने दावा किया कि अमेरिका ने भारतीय हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल किया था।

# रैज़िडैंट डॉक्टर की करंट से मौत पर मानवाधिकार आयोग ने रिपोर्ट माँगी

जयपुर, 23 जून। राज्य मानवाधिकार आयोग ने उदयपुर के रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज के पीजी हॉस्टल में वॉटर कूलर से करंट लगने पर रैज़िडैंट डॉक्टर की मौत के मामले में तथ्यात्मक रिपोर्ट तलब की है। आयोग ने मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य, एसएमएस मेडिकल कॉलेज, स्थानीय कलेक्टर, एसपी और राजस्थान मेडिकल काउन्सिल सहित पोस्टमार्टम करने वाली दोनों मेडिकल टीमों से 9 जुलाई तक तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश करने को कहा है। आयोग अध्यक्ष जस्टिस जीआर मूलचंदानी ने ये आदेश प्रकरण में प्रकाशित मीडिया रिपोर्ट्स पर कार्रवाई करते हुए दिए।

आयोग ने अपने आदेश में कहा कि मेडिकल कॉलेज प्रशासन का यह दायित्व बनता है कि वह प्रत्येक छात्र की सुरक्षा व खाने-पीने की उचित व्यवस्था करे, लेकिन मेडिकल कॉलेज इसमें स्पष्ट रूप से असफल रहा है। आयोग ने कहा कि उत्तरदायित्व से बचने के लिए मृतक चिकित्सक की प्रथम

- **आयोग ने उदयपुर मैडिकल कॉलेज के प्राचार्य, मैडिकल कॉलेज, स्थानीय कलैक्टर व एसपी, राजस्थान मैडिकल काउन्सिल तथा पोस्टमार्टम करने वाली दोनों टीमों को 9 जुलाई तक तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश करने को कहा है।**

पोस्टमार्टम रिपोर्ट और द्वितीय पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मौत का कारण अलग-अलग बताया गया है। इसके लिए दोषी चिकित्सकों के खिलाफ राजस्थान मेडिकल काउन्सिल की ओर से अनुशासनात्मक कार्रवाई करके, संबंधित मेडिकल कॉलेज के प्रशासन द्वारा आपराधिक प्रकरण दर्ज कराने का मामला भी बनता है। ऐसा लगता है कि इन बिंदुओं पर स्थानीय प्रशासन, रवीन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज और एसएमएस मेडिकल कॉलेज के उत्तरदायी अधिकारियों की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई, जो दुखद है।

## भारत मौन नहीं, ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

मूल रूप से, भारत की चुप्पी अब अनदेखी नहीं रह गई है। बहुपक्षीय मंचों पर मतदान से दूरी, और द्विपक्षीय वार्ताओं में धीमा कूटनीतिक रुख, इन सब संकेतों से यह स्पष्ट होता जा रहा है कि भारत अपनी ऐतिहासिक नैतिक आवाज से पीछे हट रहा है। ऐसे समय में जब वैश्विक अस्थिरता अपने चरम पर है, भारत की विदेश नीति की दिशा और विश्वसनीयता पर कठिन सवाल खड़े हो रहे हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908